कोंकण गरिमा

कोंकण रेलवे की राजभाषा पत्रिका

अंक : 27

छमाही पत्रिका

मार्च, 2026

कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड

सादर सेवा

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक जी का संदेश

'कोंकण गरिमा' का 27वां अंक प्रबुद्ध पाठकों को प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। मुझे इस बात की खुशी है कि कोंकण रेलवे के कर्मियों द्वारा समय पर इस अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इसलिए पत्रिका से जुड़े सभी रचनाकारों, लेखकों, सहयोगियों, कोंकण रेलवे के अधिकारियों, कर्मचारियों को हार्दिक बधाई।

मुझे यह बताते हुए अत्यंत आनंद की अनुभूति हो रही है कि दिनांक 26.12.2025 को रेलवे बोर्ड, नई दिल्ली में संपन्न समारोह में रेल मंत्रालय की ओर से कोंकण रेलवे को वर्ष 2024 के दौरान उत्कृष्ट कार्य करने के लिए आदर्श उपक्रम के रूप में **"रेल मंत्री राजभाषा रनिंग ट्रॉफी"** से सम्मानित किया गया। साथ ही इस वर्ष 'ग' क्षेत्र के सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की श्रेणी के अंतर्गत राजभाषा कार्यान्वयन में सराहनीय कार्य करने के लिए गृह मंत्रालय की ओर से मडगांव कार्यालय को **'क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार'** से नवाजा गया है। इसके लिए सभी अधिकारियों, कर्मचारियों को उनके सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद एवं बधाई।

अपने कार्यालयीन दायित्वों के साथ ही साथ हम भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के दिशा-निर्देशों के प्रति भी सजग हैं और अपनी ज़िम्मेदारी निभाते हुए राजभाषा के काम-काज के साथ भी बहुत ऊर्जा के साथ जुड़े हुए हैं। इसके अनुपालन में इस छमाही के दौरान कोंकण रेलवे द्वारा 10 जनवरी, 2026 को **"विश्व हिंदी दिवस"**, 21 फ़रवरी को **"मातृभाषा दिवस"** और 27 फरवरी, 2026 को **"मराठी गौरव दिवस"** मनाया गया। इसी प्रकार हिंदी के प्रसार एवं विकास की गति को और तीव्र करते हुए अपने संवैधानिक दायित्वों को पूर्ण करेंगे तथा अपने निरंतर उच्च स्तर के प्रयासों के माध्यम से और नए कीर्तिमान स्थापित करेंगे।

कोंकण रेलवे जिस तरीके से अपने निर्माण कार्यों से राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है उसी तरह राजभाषा के क्षेत्र में भी उत्तरोत्तर प्रयोग बढ़ाने की दिशा में अग्रसर हो रही है।

आप इस पत्रिका को जो स्नेह दे रहे हैं, उसके लिए हम सभी पाठकों के आभारी हैं। मैं सभी कर्मियों से अपेक्षा करता हूं कि राजभाषा के अनुकूल वातावरण बनाए रखते हुए आप इस पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए प्रयास जारी रखें, आपकी भागीदारी सुनिश्चित करें। आपका अप्रतिम सहयोग ही इसे विशेष पहचान देने में सफल होगा।

मैं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति, निरंतर प्रकाशन और उज्ज्वल भविष्य की सुखद कामना करता हूं।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ,

जय हिन्द।

(सन्तोष कुमार झा)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड

छमाही पत्रिका

कोंकण गरिमा

कोंकण रेलवे की राजभाषा पत्रिका - अंक: 27

इस अंक में.....

विषय सूची

			पृष्ठ
1.	मुख्य राजभाषा अधिकारी की कलम से.....		2
2.	संपादकीय		3
	राजभाषा और तकनीकी लेख		
3.	विश्व हिंदी दिवस और हिंदी दिवस का महत्व	- श्रीया श्रीकांत सारंग	4
4.	करे संविधान का सम्मान : देवनागरी के प्रयोग से हिंदी का बढ़ाएं मान	- सीताराम दुबे	6
5.	हिंदी भाषा : एकता की पहचान	- श्रेया काकडे	9
6.	प्रयोजनमूलक हिन्दी	- प्रदीप बालिगा	14
7.	'साझे लमहों की महक': काव्य-संग्रह	- सदानंद चितले	17
8.	संवाद (कविता)	- सन्तोष कुमार झा	18
9.	कोंकण रेलवे में आर.एम.वी. के साथ अनुरक्षण गैंग का कार्य	- स्वप्निल झगडे	19
10.	सिल्क्यारा टनल रेस्क्यू ऑपरेशन: एक अद्वितीय आपदा प्रबंधन उदाहरण	- बी. एस. नाडगे	24
11.	6G नेटवर्क: डिजिटल दुनिया का नया आयाम	- विजय मेस्त्री	26
12.	इंटरनेट के दुष्परिणाम और साइबर सुरक्षा	- संतोष पाटोळे	27
13.	AI के युग में मानव की भूमिका	- सानिका वाघे	29
14.	महिला नेतृत्व आधारित विकास: भारत की उन्नति का नया दौर	- प्रिया निकेत पोकले	31
15.	'बीता कल'	- सतीश धुरी	33
16.	झलकियां		34
17.	क्षेत्रीय भाषा: लोकजीवन की आत्मा		35
18.	वैश्विक संदर्भ में वैश्विक उष्णता का प्रभाव: चुनौतियां और समाधान	- वी. प्रकाश	37
	पर्यटन		
19.	कोंकण रेलवे पर पर्यटन	- राजेश जोशी	39
	स्वास्थ्य		
20.	कहावतों में रोगों के नुस्खे	- अक्षय खलदकर	41
	स्मृति पुष्प		
21.	श्रद्धांजलि	- तुकाराम कोलपे	43

"कोंकण गरिमा में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। रेल प्रशासन का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। व्यक्तिगत आलेखों एवं कविताओं के लेखक अपने कॉपीराइट के लिए स्वयं जिम्मेदार होंगे। कोंकण गरिमा में प्रकाशित सामग्री का किसी भी अन्य रूप में उपयोग करने से पूर्व राजभाषा विभाग से अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है।"

- संपादक

संरक्षक

सन्तोष कुमार झा
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

परामर्श

राजेश भडंग
निदेशक (वित्त)

सुनील गुप्ता
निदेशक (परि. एवं वाणिज्य)

राजीव मिश्रा
निदेशक (रेलपथ एवं कार्य)

मार्गदर्शन

सत्येन्द्र कुमार शुक्ला
मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
कार्यकारी निदेशक (व्यवसाय एवं परिचालन)

संपादक

सदानंद चितले
सहा. उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादन सहयोगी

सीताराम दुबे
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्रीमती प्रिया पोकले
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

सतीश धुरी
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्रीमती श्रेया काकडे
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

संतोष पाटोले
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

रचनाकारों से अनुरोध

- कोंकण गरिमा पत्रिका के लिए टाइप की गई रचनाएं भिजवाएं।
- रचनाएं स्तरीय एवं प्रकाशन योग्य हों।
- रचनाकारों के प्रकाशन के संबंध में कोई पत्राचार नहीं किया जाएगा।

रचनाएं भेजने का पता

संपादक, 'कोंकण गरिमा',
राजभाषा विभाग, कमरा नं. 417,
कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड
बेलापुर भवन, प्लॉट नंबर 6, सेक्टर 11,
सीबीडी बेलापुर, नवी मुंबई - 400614
दूरभाष : 022-27572015

मुख्य राजभाषा अधिकारी की कलम से.....

'कोंकण गरिमा' के समस्त पाठकों को मेरा हार्दिक अभिनंदन।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कोंकण रेलवे की राजभाषा पत्रिका 'कोंकण गरिमा' के प्रकाशन की श्रृंखला में और एक कड़ी 27वें अंक के रूप में जुड़ रही है।

हमारी इस गृह पत्रिका में राजभाषा संबंधी लेख, साहित्यिक लेख, कविताओं तथा अन्य सामग्री के साथ-साथ तकनीकी लेखों पर भी विशेष ध्यान दिया है और यही कारण है कि कोंकण गरिमा को हर स्तर पर अत्यधिक सराहना मिली है। गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा इस पत्रिका को प्राप्त **"राजभाषा कीर्ति पुरस्कार"** तथा नवी मुंबई नराकास द्वारा भी निरंतर प्रथम पुरस्कार इस पत्रिका के उच्च स्तर एवं लोकप्रियता का प्रमाण है।

इस अंक में कोंकण रेल: आर.एम.वी. के माध्यम से अनुरक्षण, सिल्क्यारा टनल रेस्क्यू, 6G नेटवर्क जैसे तकनीकी लेखों के साथ राजभाषा प्रचार-प्रसार संबंधी, पर्यटन और स्वस्थ्य संबन्धित लेख भी शामिल किए गए हैं।

गृह मंत्रालय के डिजिटलीकरण की नीति के अनुसरण में यह अंक ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है कि आप इसका सहृदयता से स्वीकार करेंगे।

यह भी उल्लेखनीय है कि पाठकों के सहयोग के बिना कोई भी पत्रिका सफल नहीं हो सकती। आपका मार्गदर्शन इस पत्रिका के लिए नए आयाम स्थापित कर सकता है, आप अपने निष्पक्ष विचार, सुझाव हमें नियमित रूप से भिजवाते रहें और अपना रचनात्मक सहयोग भी प्रदान करते रहें। इससे हम भविष्य में आपकी रूचि के अनुरूप अभिनव अंक प्रकाशित कर सकेंगे ।

मैं आशा करता हूँ कि हम अपने अन्य कार्यों के साथ-साथ, जिस तरह से हिंदी का प्रयोग बढ़ा रहे हैं, उसे पूरी तत्परता से निरंतर जारी रखेंगे ।

शुभकामनाओं के साथ,

(सत्येंद्र कुमार शुक्ला)
मुख्य राजभाषा अधिकारी
कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड

संपादकीय

''कोंकण गरिमा'' का 27वां अंक प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत आनंद की अनुभूति हो रही है। ''कोंकण गरिमा'' के इस अंक में कोंकण रेलवे के रचनाकारों की तकनीकी और साहित्यिक रचनाओं को शामिल करते हुए राजभाषा विभाग के मानदंडों के अनुरूप तथा पठनीयता को भी बरकरार रखने का हर संभव प्रयास किया गया है। आशा है कि हमारा यह प्रयास आपको पसंद आएगा।

कोंकण रेलवे में परिचालन, परियोजना और ग्राहक संतुष्टि कार्यों के साथ-साथ हिंदी के प्रसार में भी अग्रणी भूमिका निभाते हुए मुख्यालय और सभी अधीनस्थ कार्यालयों में हिंदी की गतिविधियां हर्षोल्लास के साथ कार्यान्वित की जा रही हैं और अधिकाधिक उपलब्धियां हासिल की जा रही हैं। इसके साथ ''कोंकण गरिमा'' का निरंतर प्रकाशन भी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस उपलब्धि के लिए हमारे उच्च अधिकारियों को हार्दिक आभार जिनकी प्रेरणा और प्रोत्साहन से हम इस कार्य को लगातार दक्षता के साथ आगे बढ़ा रहे हैं। अन्य कार्य की तरह हमारे सभी साथी ''कोंकण गरिमा'' का प्रकाशन कार्य तत्परता और प्राथमिकता के साथ कर रहे हैं इसके लिए संपादकीय पूरी टीम का मैं बहुत आभारी हूँ।

कोंकण रेलवे के साथ पूरे देश में राजभाषा-हिंदी की प्रगति में हमारा योगदान रहे, इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए हमने इस अंक की सामग्री विविधतापूर्ण संग्रहित करने का प्रयास किया है। इस अंक में हिंदी के ज्ञानवर्धन हेतु- हिन्दी: अतीत, वर्तमान और भविष्य, विश्व हिंदी दिवस: इतिहास और विश्व में इसका महत्व, देवनागरी लिपि के प्रयोग से हिन्दी का मान बढ़ाएँ, हिन्दी भाषा : एकता की पहचान, प्रयोजनमूलक हिन्दी, तकनीकी लेख- कोंकण रेल: आर.एम.वी. के माध्यम से अनुरक्षण, सिल्क्यारा टनल रेस्क्यू, 6G नेटवर्क, कोंकण रेलवे पर कार्यान्वित राजभाषा गतिविधियों की झलकियाँ, पर्यटन और स्वास्थ्य संबंधी ज्ञानवर्धक लेखों को सम्मिलित किया गया है। इन सामग्री से यह अंक रोचक, पठनीय और उपयोगी बनाने का हर संभव प्रयास किया है। उम्मीद है कि सभी लेख और अन्य रचनाएं, सामग्री आपको अवश्य पसंद आएगी ।

''कोंकण गरिमा'' आपकी अपनी पत्रिका है। कोंकण रेलवे के तथा अन्य परिवारजनों एवं सभी पाठकों से हमारा आग्रह है कि इस पत्रिका में प्रकाशित लेख, रचनाओं अन्य सामग्री आदि के बारे में अपनी टिप्पणियां एवं प्रतिक्रियाओं से हमें अवश्य अवगत कराएं, जिससे कि हम आपकी रूचि के अनुसार पत्रिका प्रकाशित करते सके। आशा है कि आपकी पत्रिका की विकास यात्रा में आप अपना पूरा योगदान देंगे।

अंत में यह भी अनुरोध रहेगा कि ''कोंकण गरिमा'' का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार किया जाए, ताकि पत्रिका से अधिकाधिक पाठक जुड़ सके।

- संपादक

विश्व हिंदी दिवस और हिंदी दिवस का महत्व

- श्रीया श्रीकांत सारंग
टेक्निकल असिस्टेंट
विद्युत विभाग

हिंदी के वैश्विक स्वरूप, विस्तार और महत्व को रेखांकित करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह किसी भी राष्ट्र की संस्कृति, सभ्यता, विचारधारा और पहचान की संवाहक होती है। हिंदी भाषा केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि आज यह एक वैश्विक भाषा के रूप में अपनी सशक्त पहचान बना चुकी है। हिंदी विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। भारतीय प्रवासी समुदाय ने हिंदी को विश्व के कोने-कोने तक पहुंचाया है। जहां-जहां भारतीय गए, वहां वे अपनी भाषा, संस्कृति और परंपराएं भी साथ ले गए।

हिंदी अब केवल भारत की एक भाषा न रहकर एक सांस्कृतिक सेतु बन गई है, जो भारत को विश्व से जोड़ती है। हिंदी केवल एक संपर्क भाषा नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक आत्मा है। आज हिंदी विश्व के अनेक देशों में बोली, पढ़ी और समझी जाती है। करोड़ों लोग इसे मातृभाषा या द्वितीय भाषा के रूप में प्रयोग करते हैं। हिंदी भारतीय संस्कृति, साहित्य और परंपराओं की प्रमुख संवाहक है। कबीर के दोहे, प्रेमचंद की कहानियां तथा आधुनिक हिंदी साहित्य विश्वभर में पढ़े और सराहे जाते हैं। हिंदी फ़िल्मों, गीतों और धारावाहिकों ने भारतीय संस्कृति को वैश्विक पहचान दिलाई है।

हिंदी जनभाषा है। यह एक सरल, सहज और भावनात्मक भाषा है, जो लोगों को आपस में जोड़कर रखती है। आज विश्व की अनेक शिक्षण-संस्थाओं में हिंदी एक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। इस प्रकार हिंदी का शैक्षणिक आधार भी सुदृढ़ हुआ है।

भारत में संस्कृति का अर्थ केवल पूजा-पाठ या धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि एक जीवनशैली है, जिसमें भाषा, पहनावा, विचार और व्यवहार सम्मिलित हैं। इस सांस्कृतिक परंपरा को जीवित रखने का कार्य भाषा करती है, क्योंकि भाषा ही संस्कृति का माध्यम और वाहक होती है। भारत में हिंदी वह भाषा है, जिसने उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक लोगों को एक भावनात्मक सूत्र में बांधा है। हिंदी का उद्भव संस्कृत से हुआ है। संस्कृत से प्राकृत, प्राकृत से अपभ्रंश और फिर खड़ी बोली के रूप में हिंदी का विकास हुआ। भारतीय संस्कृति में हिंदी का योगदान अत्यंत गहरा और व्यापक है।

हिंदी है भारत की शान,
हर दिल की है पहचान।

मां की ममता जैसी प्यारी,
सभी भाषाओं से न्यारी।

जन-जन की भाषा है हिंदी,
हम सबकी आशा है हिंदी।

सादगी का इसमें वास,
बसता इसमें पूरा इतिहास।

हम सबको इसे अपनाना है,
इसके मान को बढ़ाना है।

इन पंक्तियों से हिंदी भाषा की पहचान दिखाई देती है। हिंदी भाषा भारत की जनभाषा है। हिंदी साहित्य, लोककथाएं, दोहे और गीत भारतीय जीवन दर्शन को अभिव्यक्त करते हैं। हिंदी के माध्यम से भारतीय संस्कृति विश्वभर में पहुंची है। हिंदी चलचित्र, संगीत और टेलीविजन ने भी हिंदी भाषा को वैश्विक पहचान दिलाई है। हिंदी सिनेमा और गीतों के माध्यम से विदेशी दर्शक भारतीय संस्कृति से परिचित हुए हैं। इससे हिंदी के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है और यह भाषा सारे विश्व मंच पर लोकप्रिय हुई है।

आर्थिक और व्यावसायिक क्षेत्र में हिंदी भाषा का महत्व निरंतर बढ़ता जा रहा है। भारत देश की बड़ी जनसंख्या हिंदी भाषी होने के कारण व्यवसायों के लिए हिंदी में संवाद करना आसान हो गया है। आज विज्ञापन, बैंकिंग, बीमा, पर्यटन और ग्राहक सेवा जैसे क्षेत्रों में हिंदी भाषा का उपयोग अधिक से अधिक किया जा रहा है। हिंदी भाषा इतनी सीधी-सरल है कि व्यापारियों में आदान-प्रदान आसानी से होता है। अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय कार्यालय भारतीय बाजार से सफलता प्राप्त करने के लिए हिंदी भाषा को अपना रहे हैं। मोबाइल और ऑनलाइन कारोबार में हिंदी के उपयोग बढ़ने से छोटे-छोटे व्यापारियों और ग्राहकों को भी आसानी से लाभ मिल रहा है। इसके अतिरिक्त हिंदी अनुवाद, कंटेंट लेखन, डिजिटल विपणन, मार्केटिंग और मीडिया जैसे क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर भी उत्पन्न हुए हैं। इस प्रकार हिंदी न केवल सांस्कृतिक पहचान की भाषा है, बल्कि देश की आर्थिक प्रगति और व्यावसायिक विस्तार में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

विश्व हिंदी दिवस हमें अपनी भाषाई विरासत पर गर्व करने का अवसर देता है। यह दिन संकल्प लेने का है कि हम हिंदी का

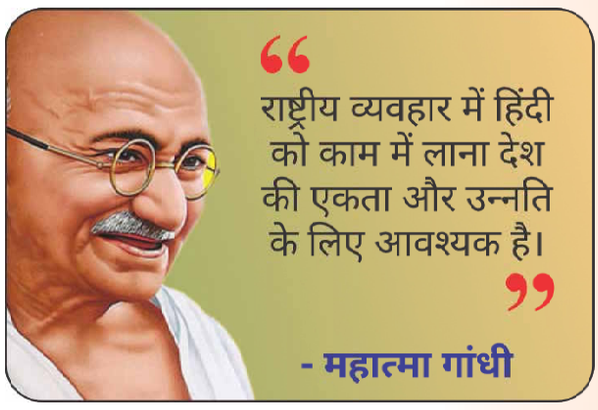

अधिक से अधिक उपयोग करें और इसे केवल भावुकता की भाषा न मानकर ज्ञान और तकनीक की समर्थ भाषा बनाएं। हिंदी विश्व शांति और "वसुधैव कुटुंबकम" की भावना को पूरी दुनिया में फैलाने का एक सशक्त माध्यम है। हिंदी दिवस पूरे भारत में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है, ताकि हिंदी भाषा के महत्व को सम्मानित और मान्यता दी जा सके। यह दिन हमें हमारी भाषाई विविधता और अनेक भाषाओं एवं बोलियों वाले राष्ट्र में एक एकीकृत भाषा की आवश्यकता की याद दिलाता है। यह हमारे दैनिक जीवन में हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देता है, जिससे राष्ट्रीय गौरव और एकता की भावना विकसित होती है। हिंदी मात्र एक भाषा नहीं, बल्कि प्राचीन ग्रंथों, परंपराओं और ज्ञान को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह अतीत और वर्तमान के बीच एक सेतु का कार्य करती है, जिससे हमारे शास्त्रों और क्लासिक्स में निहित शाश्वत ज्ञान समकालीन पीढ़ियों तक सुलभ रहता है। इसके अलावा, हिंदी आधुनिक दुनिया की मांगों के अनुरूप सहजता से ढल जाती है और नए शब्दों व अवधारणाओं को अपनाते हुए भी अपनी समृद्ध विरासत से जुड़ी रहती है। साहित्य, कला, सिनेमा और रोजमर्रा के संवाद में यह भाषा अपनी बहुमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन करती है।

हिंदी दिवस हमारी सांस्कृतिक और भाषाई विरासत का उत्सव है, जो इसके संरक्षण और आने वाली पीढ़ियों को इसके उपयोग के लिए प्रोत्साहित करने के महत्व पर बल देता है। यह वह दिन है जब हम एक राष्ट्र के रूप में हमें जोड़ने वाली और हमारे इतिहास व संस्कृति का भार वहन करने वाली भाषा को संजोने के लिए एकजुट होते हैं, जो इसे हमारी पहचान का अभिन्न अंग बनाती है। ये कुछ कारण हैं जिनकी वजह से हिंदी दिवस मनाया जाता है। विश्व हिंदी दिवस केवल एक भाषाई उत्सव नहीं, बल्कि हिंदी की ऐतिहासिक चेतना, वैश्विक पहचान और भविष्य की दिशा का प्रतीक है। यह दिवस हमें हिंदी के संरक्षण, संवर्धन और प्रचार का दायित्व सौंपता है। अतः हिंदी को केवल भावनात्मक भाषा के रूप में नहीं, बल्कि ज्ञान, विचार और वैश्विक संवाद की सशक्त भाषा के रूप में अपनाना ही विश्व हिंदी दिवस की वास्तविक सार्थकता है।

हिंदी भाषा की ऐतिहासिक जड़ें भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में सिंधु नदी के तट तक फैली हुई हैं। मूल रूप से इस क्षेत्र में रहने वाले लोगों को 'हिंदू' कहा जाता था और समय के साथ उनकी भाषा हिंदी के नाम से जानी जाने लगी। हिंदी की नींव भारत की प्राचीन भाषा संस्कृत में निहित है। सदियों से हिंदी का विकास हुआ और इसमें महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। इसकी एक प्रमुख बोली खड़ी बोली ने आधुनिक हिंदुस्तानी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे उर्दू और हिंदी दोनों का उद्भव हुआ।

वर्तमान समय में आधुनिक जीवनशैली और तकनीकी दुनिया में हिंदी का प्रयोग कम होता जा रहा है। लोग अपनी बोलचाल और लेखन में अंग्रेजी भाषा को अधिक तरजीह दे रहे हैं। इस चुनौती का समाधान यही है कि हम स्वयं से यह संकल्प लें कि दैनिक जीवन में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करेंगे। विद्यालयों और कॉलेजों में हिंदी के अध्ययन को प्रोत्साहित करेंगे, जिससे हमारी भाषा सदियों तक आगे बढ़ती रहे। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने के लिए अनेक लोगों ने प्रयास किए, जिसके चलते उन्होंने दक्षिण भारत की कई यात्राएं भी कीं।

हर साल 14 सितंबर को देशभर में हिंदी दिवस मनाया जाता है। आज़ादी मिलने के दो साल बाद 14 सितंबर को संविधान सभा में एक मत से हिंदी को राजभाषा घोषित किया गया था और इसके बाद से हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। इसका मुख्य उद्देश्य वर्ष में एक दिन लोगों के समक्ष यह बात रखना है कि जब तक वे हिंदी का पूर्ण रूप से उपयोग नहीं करेंगे, तब तक हिंदी भाषा का विकास नहीं हो सकता। इस दिन सभी सरकारी कार्यालयों में अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी का उपयोग करने की सलाह दी जाती है। इसके अतिरिक्त जो वर्ष भर हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करता है और अपने कार्य में हिंदी का अच्छे से उपयोग करता है, उसे पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया जाता है।

कई लोग अपनी सामान्य बोलचाल में भी अंग्रेज़ी भाषा के शब्दों का उपयोग करते हैं, जिससे धीरे-धीरे हिंदी के अस्तित्व को खतरा पहुंच रहा है। जिस प्रकार टेलीविजन से लेकर विद्यालयों तक, सामाजिक संचार माध्यमों से लेकर निजी तकनीकी संस्थानों और कार्यालयों तक अंग्रेजी का दबदबा कायम है, उससे लगता है कि अपनी मातृभाषा हिंदी धीरे-धीरे क्षीण होकर दशकों बाद विलुप्त न हो जाए। यदि शीघ्र ही हम छोटे-छोटे प्रयासों द्वारा अपनी मातृभाषा हिंदी को अपने जीवन में एक अनिवार्य स्थान नहीं देंगे, तो यह अन्य भाषाओं से हो रही स्पर्धा में बहुत पीछे रह जाएगी। इस दिन सभी से निवेदन किया जाता है कि वे अपनी बोलचाल की भाषा में भी हिंदी का उपयोग करें। इसके अतिरिक्त लोगों को अपने विचार हिंदी में लिखने के लिए भी प्रेरित किया जाता है। चूंकि हिंदी में लिखने हेतु उपलब्ध उपकरणों के बारे में बहुत कम लोगों को जानकारी है, इसलिए इस दिन हिंदी में लिखने, जांच करने और शब्दकोश के प्रयोग की जानकारी दी जाती है। हिंदी भाषा के विकास के लिए कुछ लोगों के प्रयास पर्याप्त नहीं हैं। इसके लिए सभी को एकजुट होकर हिंदी के विकास को नए आयाम तक पहुंचाना होगा। हिंदी भाषा के विकास और इसे विलुप्त होने से बचाने के लिए यह अनिवार्य है।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी ने जनता को एकजुट करने का कार्य किया। महात्मा गांधी ने कहा था - "हिंदी ही राष्ट्रभाषा बन सकती है, क्योंकि यह जनमानस की भाषा है।" स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हिंदी अख़बारों और लेखकों ने देशभक्ति की भावना जगाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज भी हिंदी फ़िल्मों, साहित्य और मीडिया के माध्यम से देश की एकता और सामाजिक चेतना को बनाए रखा गया है। हिंदी ने यह सिद्ध किया है कि यह केवल एक भाषा नहीं, बल्कि राष्ट्रीय भावना का प्रतीक है।

करे संविधान का सम्मान : देवनागरी के प्रयोग से हिंदी का बढ़ाएं मान

- सीताराम दुबे
वरिष्ठ अनुवादक, कोंकण रेलवे

किसी भी भाषा के प्रचार-प्रसार में लिपि संप्रेषण का माध्यम बन कर स्थायी बनते हुए ज्ञान-विज्ञान सहित विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रभावी भूमिका निभाती रही है। यदि हमें अपनी भाषाओं का प्रचार-प्रसार करना है तो भाषा के साथ-साथ इनकी लिपियों का भी प्रचार-प्रसार करना अत्यंत आवश्यक है। लेकिन अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा और उच्च रोजगार में अंग्रेजी के बढ़ते दबदबे के चलते जहां पिछले कुछ वर्षों में हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का प्रयोग घट रहा है उसी के कारण देवनागरी लिपि भी प्रभावित हो रही है। कंप्यूटर मोबाइल तथा अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के प्रभाव के चलते पिछले कुछ वर्षों से यह देखने में आ रहा है कि हिंदी ही नहीं भारत की ज्यादातर भाषाओं को लोग रोमन लिपि में लिखने लगे हैं। निश्चित रुप से देवनागरी लिपि को लगने वाली चोट का असर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से हिंदी और भारतीय भाषाओं पर पड़ेगा।

किसी भाषा को सीखने के लिए किसी पाठशाला की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि माता-पिता परिजनों के साथ अपनी मातृभाषा में इतना पारंगत हो जाता है जितना कि कोई अन्य भाषा-भाषी उसे सीख कर भी नहीं हो पाता। लेकिन मातृभाषा की लिपि सीखने के लिए हर किसी को प्रयास करने पड़ते हैं। विद्यार्थी सामान्यत पाठशाला में जा कर शिक्षक से लिपि सीखते हैं। भारत में हिंदी भाषा के अलावा बहुत से भाषाएं है जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं। अन्य देशों की तरह हमारे देश में भी इन भाषाओं के लिए बच्चों को प्रथम प्राथमिकता अपनी मातृभाषा की लिपि या देवनागरी लिपि से होना चाहिए, ताकि जब बच्चा पहले विद्यालय में प्रवेश करें, तब उसे अपना कार्य देवनागरी लिपि में कर सके अब हमारे देश में विद्यालयों द्वारा अपनी भाषा के साथ-साथ जब वह स्कूल में प्रवेश करता है। उस बच्चों को तीन से चार साल का होते ही नर्सरी स्कूलों में दाखिला दिया जाता है जहाँ उन्हें अंग्रेजी और अंग्रेजी की लिपि रोमन लिपि पढ़ाई जाती है। तब बच्चा 'क, ख, ग, ङ ' नहीं बल्कि दिन रात वह A,B,C,D पढ़ना शुरु करता है।

अब अंग्रेजी माध्यम के चलते दूसरी बड़ी समस्या यह है कि बच्चे हिंदी या अन्य भाषा जो उनकी मातृभाषा है, उसे छोड़कर अन्य सभी विषय अंग्रेजी में ही पढ़ते हैं। इसलिए वे अन्य सभी विषयों को लिखने के लिए रोमन लिपि का ही प्रयोग करते हैं। यही नहीं इसकी स्पेलिंग को रटने के लिए पूरी जिंदगी लगा देते हैं, क्योंकि उसके बिना वे किसी अन्य भाषा में आगे नहीं बढ़ सकते है। दूसरी ओर जब देवनागरी लिपि की बात आती है तो उन्हें लिपि का ज्ञान नहीं रहता है तभी तो अंग्रेजी माध्यम से पढ़ कर आए ज्यादातर बच्चे न तो ठीक से देवनागरी लिपि को पढ़ पाते हैं और न ही ठीक से अंग्रेजी लिख पढ़ पाते हैं।

फिर स्कूली शिक्षा समाप्त करने के बाद उच्च शिक्षा में हिंदी से न जुड़े रहने से और केवल अंग्रेजी में पढ़ने से देवनागरी में जो लिखना-पढ़ना शुरु होता था, वह भी छूट जाता है। अंग्रेजी के मोह, आकर्षण के चलते अपनी मातृभाषा का समाचार भी नहीं पढ़ते। हालांकि, अब तो हिंदी के समाचारपत्रों में भी अंग्रेजी भाषा और रोमन लिपि को प्रगतिशील साबित करने की होड़ लगी है। फिर शासन-प्रशासन से ले कर निजी कंपनियों में अंग्रेजी के वर्चस्व के कारण जहां काम करते हैं वे काम भी अंग्रेजी में रोमन लिपि के माध्यम से ही होता है। इस प्रकार धीरे-धीरे देवनागरी लिपि से रिश्ता दूर होता जा रहा है।

मेरा यह मानना है कि देवनागरी लिपि के लिए नहीं बल्की स्वभाविक विकास के लिए यह आवश्यक है कि जब बच्चा स्कूल में जाए तो उसका प्रथम साक्षात्कार मातृभाषा और मातृभाषा की लिपि से हो भले ही स्कूल हिंदी माध्यम का हो या अंग्रेजी माध्यम का हो। प्रारंभिक स्तर पर उस पर कोई अन्य भाषा या लिपि का प्रभाव न हो। तभी उसका स्वभाविक विकास होगा और वह अपनी मातृभाषा को देवनागरी लिपि को भलीभांति पढ़ और लिख सकेगा। यहां इस बात का उल्लेख करना भी आवश्यक है कि भारत में देवनागरी लिपि के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं की लिपियों की पद्धति भी लगभग पूरी तरह देवनागरी लिपि की तरह ही है। इसलिए जिन बच्चों को देवनागरी से अलग अपनी मातृभाषा की लिपियों में लिखने का अभ्यास होगा वे भी देवनागरी लिपि सीखने में अधिक समय नहीं लगेगा।

देवनागरी लिपि में समय और स्थान के साथ निरंतर होते परिवर्तनों ने भी इसके प्रयोग में बाधाएँ उत्पन्न की हैं। स्वतंत्रता के पूर्व और उसके पश्चात लंबे समय तक भी विभिन्न राज्यों में देवनागरी लिपि में कई अक्षरों तथा लिपि चिह्न आदि को लेकर विभिन्न रूप प्रचलित रहे हैं। देवनागरी लिपि को सरल बनाने और उसे राष्ट्रीय लिपि के तौर पर विकसित करने के लिए भी उसमें निरंतर परिवर्तन होते रहे हैं। यही नहीं विभिन्न राज्यों में देवनागरी लिपि के कई अक्षरों या उच्चारण के अलग-अलग रूप प्रयुक्त होने से भी अक्सर भ्रम की स्थिति बनी रहती

है। इस स्थिति को दूर करने के लिए भारत सरकार के स्तर पर भी अलग-अलग संस्थाओं द्वारा मानकीकरण का कार्य किया जा रहा है जहां एक और 'केंद्रीय हिंदी निदेशालय' मानकीकरण के कार्य में लगा रहा है और देवनागरी लिपि को विभिन्न परिवर्तनों के साथ मानक रूप दे रहा है, वहीं भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा भी देवनागरी लिपि के मानकीकरण का कार्य किया जा रहा है।

क्योंकि देवनागरी लिपि भारत के विभिन्न राज्यों में विभिन्न भाषाओं के लिए प्रयोग में लाई जाती है इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि सभी स्थानों पर देवनागरी लिपि की एकरूपता बनी रहे। सरलता से यदि देवनागरी लिपि के मानक स्वरूप में कोई परिवर्तन किया जाना है तो देवनागरी लिपि का प्रयोग करने वाली भाषाओं के सभी राज्यों तथा विभिन्न भाषा विज्ञान के विद्वानों के स्तर पर व्यापक चर्चा और विचार विमर्श करने और आम सहमति बनाने के बाद किसी एक केंद्रीय संस्था द्वारा इस प्रकार के परिवर्तन किए जाने चाहिए ताकि उसे पूरे देश में ही नहीं देश विदेश में जहां देवनागरी लिपि का प्रयोग होता है वहां पर भी मान्यता मिल सके और देवनागरी लिपि का स्वरूप सभी जगहों पर एक जैसा बना रहे । इससे देवनागरी लिपि का प्रयोग करने वालों में भ्रम की स्थिति नहीं रहेगी और एकरूपता के चलते प्रयोग करने में सुविधा भी होगी।

अंको के मानक स्वरूप को लेकर भी संघ सरकार और राज्यों के स्तर पर एकरूपता का अभाव है। जहां एक और संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार केंद्र सरकार के स्तर पर हिंदी में देवनागरी लिपि के लिए भारतीय अंको के अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप को स्वीकार किया गया है। लेकिन वहीं विभिन्न राज्यों में स्थित विद्यालयों-विश्वविद्यालयों में हिंदी विषय के अंतर्गत भी अभी भी देवनागिरी के पूर्व प्रचलित अंको का ही प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार अन्य भाषा भाषी सहित विभिन्न भाषाएं जो देवनागरी में लिखी जाती हैं उनमें भी देवनागरी लिपि के पूर्व प्रचलित अंको का प्रयोग किया जा रहा है। इसलिए यहां आवश्यक है कि यदि हिंदी संघ की राजभाषा है और संघ के अंतर्गत सभी राज्य आते हैं तो संघ के स्तर पर इस संबंध में निर्णय लेकर अंकों के स्वरूप में एकरूपता लाई जाने की आवश्यकता है।

देवनागरी लिपि आगे बढ़ाने के लिए विशेष प्रयास करने की आवश्यकता है। आज जबकि हिंदी के प्रचार - प्रसार के लिए भाषा प्रौद्योगिकी आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। प्रौद्योगिकी से तो इनका दूर-दूर तक का संबंध दिखाई नहीं देता। इसलिए इन हिंदी भाषा और लिपि के स्तर पर वैसा नहीं कर पा रही हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि भाषा को केवल साहित्य तक सीमित न भाषा, साहित्य और लिपि सहित हिंदी के सर्वांगीण विकास के लिए कार्य कर सकें। भाषा- प्रौद्योगिकी की अपेक्षित प्रगति के अभाव में देवनागरी लिपि प्रचलन के स्तर पर अपेक्षित प्रगति प्रौद्योगिकी के क्षेत्र रहा है। अब यह सुविधा केवल कंप्यूटर माइक्रोसॉफ्ट वर्ड के लिए ही नहीं बल्कि एक्सल, पावर पॉइंट आदि अन्य सभी प्रकार के कार्यों के लिए उपलब्ध हो गई है ताकि कोई भी व्यक्ति बिना कुछ भी खर्च किए अपने किसी भी कंप्यूटर पर कोई भी कार्य बड़ी आसानी से देवनागरी लिपि में कर सकता था। यही नहीं अब तक इंटरनेट पर जो पाठ्य सामग्री है अब यूनिकोड फॉंट्स की मदद से ज्यों की त्यों विश्व भर में पहुंच सकती थी, जो कि सभी कंप्यूटरों पर पहले से यूनिकोड उपलब्ध है केवल

अपनी भाषा को सक्रिय करने की आवश्यकता है।

आज जबकि देश - दुनिया में पुस्तकें पढ़ने और कलम से लिखने का प्रचलन लगातार कम होता जा रहा है और युवा पीढ़ी ज्यादातर कागज पर लिखने के बजाए कंप्यूटर और मोबाइल पर ज्यादा लिख रही है। विचारों का और सूचनाओं का आदान-प्रदान ज्यादा से ज्यादा सोशल मीडिया के माध्यम से हो रहा है। ज्ञान - विज्ञान और सूचना ही नहीं, साहित्य भी अब इंटरनेट और सोशल मीडिया के जरिए देश दुनिया में हो रहा है। ऐसे में भी यदि हिंदी केवल कलम तक सिमट कर रह जाए और प्रौद्योगिकी के पंखों से इंटरनेट के अनंत क्षेत्रों पर उड़ान न भर पाए तो हम दुनिया की अन्य भाषाओं के मुकाबले आगे कैसे बढ़ पाएंगे ? इसके लिए आवश्यक है कि हम देवनागरी लिपि को प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में डिजिटल युग के साथ आगे बढ़ाएँ । अगर हम बदलते समय के साथ आगे बढ़ते है तो विश्व की श्रेष्ठतम और अत्यधिक वैज्ञानिक लिपि को आगे लेकर जा सकते हैं तो नए दौर के तौर तरीकों को भी अपनाना होगा। इसलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि देवनागरी लिपि को इंटरनेट के माध्यम से आगे पहुंचाने के लिए आधुनिकतम प्रौद्योगिकी को अपनाने और अपने विद्यार्थियों तक पहुंचाने के लिए शिक्षण -प्रशिक्षण और परीक्षा-व्यवस्था में शामिल करने जैसे तमाम उपाय किए जाएँ।

लेकिन समस्या मात्र उपकरण नहीं थी समस्या तो थी इच्छाशक्ति, देवनागरी लिपि के लिए भाषा-प्रौद्योगिकी की सभी सुविधाएं उपलब्ध होने पर भी जहां देश के तमाम विद्यालय और विश्वविद्यालय अंग्रेजी में काम करने के लिए या सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से काम करने के लिए रोमन लिपि का कीबोर्ड बताते, सिखाते और उपयोग में लाते रहे। वही हमारे भाषा शिक्षण विभाग और सूचना प्रौद्योगिकी शिक्षण विभाग पूरी तरह इस तरफ उदासीन बने रहे। न केवल उदासीन बने रहे बल्कि अभी तक भी उदासीन होकर बैठे हैं। ऐसा लगता है कि हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर या मोबाइल आदि पर काम करने की जानकारी देना उन का दायित्व नहीं है। शायद यह कार्य भी विदेशियों को ही करना होगा। जब देश के तमाम विद्यालय और विश्वविद्यालय कंप्यूटर मोबाइल आदि तमाम उपकरणों पर देवनागरी लिपि में कार्य की जानकारी ही नहीं दे रहे और इन उपकरणों को अंग्रेजी का मानते हुए केवल रोमन लिपि में ही कार्य करने का प्रशिक्षण देंगे। तो देवनागरी लिपि का प्रयोग कैसे बढ़ सकता है। सरकारी स्तर पर इस संबंध में कोई प्रयास किया गया है तो वह केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी में कार्य करने के लिए कंप्यूटर आदि पर हिंदी में कार्य करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है।

सूचना प्रौद्योगिकी तथा भाषा–प्रौद्योगिकी को अपनाने तथा प्रशिक्षण आदि की समुचित व्यवस्थाओं के न होने के कारण न केवल अंग्रेजी के लिए बल्कि हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं के लिए भी रोमन लिपि अपनाई जाने लगी है। आज की स्थिति यह है कि देश की जनसंख्या का एक बहुत बड़ा हिस्सा है जो अंग्रेजी ठीक से नहीं जानता और हिंदी बहुत अच्छी तरह लिखना – पढ़ना जानता है, फिर भी वह कंप्यूटर/ मोबाइल आदि पर हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं को रोमन लिपि में लिखता है। इसका परिणाम यह हुआ कि अंग्रेजी लेखक के लिए बड़े- बड़े विद्वानों ने हिंदी को बचाने के लिए रोमन लिपि को अपनाने का सुझाव दिया है।

खुशी की बात है कि पिछले कई–वर्षो से मोबाइल आदि में बहुत ही सरल किस्म के ऐसे अनेक की-बोर्ड आ गए हैं जिनकी मदद से बिना किसी प्रशिक्षण के भी कोई व्यक्ति देवनागरी में टाइप कर सकता है। अब तो गूगल वॉयस के रुप में ऐसी नि:शुल्क प्रौद्योगिकी भी उपलब्ध हो गई है जिसकी मदद से कोई भी व्यक्ति सरलता से बोल कर अपने मोबाइल अथवा कंप्यूटर आदि पर देवनागरी लिपि में टाइप कर सकता है। पर बात तो फिर वहीं घूम फिर कर आ जाती है कि जब इन की जानकारी आज की युवा विद्यार्थियों को भी नहीं दी जा रही तो ऐसे में अन्य लोगों से यह अपेक्षा करना कि वे इन तमाम सुविधाओं के माध्यम से अपने मोबाइल में और कंप्यूटरों पर देवनागरी लिपि में लिखने के लिए प्रयास करें। कंप्यूटर, मोबाइल और प्रौद्योगिकी के नए-नए उपकरणों के इस युग में हमें देवनागरी लिपि के प्रयोग के लिए भाषा –प्रौद्योगिकी को आत्मसात करने में यदि असफल रहे तो देवनागरी लिपि प्रचलनमें बनी रहेगी अन्यथा बाहर हो जाएगी। देवनागरी लिपि को राष्ट्रीय स्तर पर और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचलित और प्रतिष्ठित करने के लिए हम सभी को आवश्यक प्रयास करनी चाहिए। ताकि लिपियों के लिए उपलब्ध नवीनतम प्रौद्योगिकी को अपनाते हुए और उसके लिए विद्यार्थियों और जनसामान्य को जागरूक तथा तैयार करते हुए हम नए दौड़ में आगे बढ़ने का प्रयास किया जा सकता है।

हिंदी भाषा : एकता की पहचान

- श्रेया काकडे
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
राजभाषा विभाग, कोंकण रेलवे

प्रस्तावना

भारत विश्व के उन गिने-चुने देशों में से एक है जहां विविधता केवल बाहरी स्वरूप तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषाई संरचना के प्रत्येक स्तर पर दिखाई देती है। यहां विभिन्न धर्मों, जातियों, संप्रदायों, परंपराओं और भाषाओं का सहअस्तित्व देखने को मिलता है। इस व्यापक विविधता के बावजूद भारत एक राष्ट्र के रूप में संगठित है। इस संगठन और स्थायित्व के पीछे जिस तत्व की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका रही है, वह है आपसी एकता।

किसी भी देश में एकता शक्ति होती है। यह एकता भावनात्मक, सांस्कृतिक और भाषिक स्तर पर पैदा होती है, न केवल राजनीतिक या भौगोलिक। भाषा मानव समाज की आधारशिला है। भाषा ही विचारों की अभिव्यक्ति, ज्ञान का संप्रेषण और सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा कर सकती है। भारत जैसे बहुभाषी देश में भाषा का महत्व बढ़ा है।

भारत में सैकड़ों भाषाएं और हजारों बोलियां बोली जाती हैं। प्रत्येक भाषा का अपना ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व है। किंतु इतने व्यापक भाषाई वैविध्य के बीच एक ऐसी भाषा की आवश्यकता सदैव महसूस की गई है, जो विभिन्न भाषाई समुदायों के बीच संवाद स्थापित कर सके और राष्ट्रीय चेतना को सुदृढ़ कर सके। इस आवश्यकता की पूर्ति हिंदी भाषा ने की है।

हिंदी केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं है, बल्कि यह भारत की सांस्कृतिक आत्मा और राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति है। इसी कारण हिंदी को भारत की एकता की पहचान के रूप में देखा जाता है।

भाषा और समाज का संबंध

भाषा और समाज के बीच अत्यंत घनिष्ठ संबंध होता है। भाषा समाज की सोच, व्यवहार, परंपराओं और मूल्यों को प्रतिबिंबित करती है। समाज के विकास के साथ भाषा भी विकसित होती है और भाषा के विकास से समाज की दिशा प्रभावित होती है। भाषा के बिना समाज की कल्पना असंभव है।

भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज में भाषा का महत्व और भी बढ़ जाता है। विभिन्न भाषाएं समाज को समृद्ध बनाती हैं, किंतु संवाद की कमी सामाजिक दूरी भी उत्पन्न कर सकती है। ऐसी स्थिति में हिंदी ने सेतु का कार्य किया है। हिंदी ने विभिन्न भाषाई समुदायों को जोड़कर एक साझा मंच प्रदान किया है। हिंदी भाषा ने न केवल संवाद को सरल बनाया है, बल्कि सामाजिक समरसता और आपसी समझ को भी बढ़ावा दिया है। यही कारण है कि हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में व्यापक स्वीकार्यता मिली।

हिंदी भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

हिंदी भाषा का विकास एक दीर्घ ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है। इसकी जड़ें प्राचीन भारतीय भाषा संस्कृत में निहित हैं। संस्कृत से प्राकृत भाषाओं का विकास हुआ, जो आम जन द्वारा बोली जाती थीं। प्राकृत से अपभ्रंश भाषाएं विकसित हुईं और आगे चलकर इन्हीं से आधुनिक हिंदी का स्वरूप निर्मित हुआ।

यह भाषाई विकास केवल शब्दों और व्याकरण का परिवर्तन नहीं था, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का भी संकेत था। भाषा धीरे-धीरे राजदरबारों से निकलकर जनसाधारण की अभिव्यक्ति का माध्यम बनी। समय के साथ हिंदी ने फारसी, अरबी, तुर्की और अंग्रेजी जैसी भाषाओं से भी शब्द ग्रहण किए। इसी ग्रहणशीलता ने हिंदी को समृद्ध और व्यापक बनाया।

मध्यकालीन हिंदी और जनभाषा का स्वरूप

मध्यकाल में हिंदी भाषा को वास्तविक जनस्वीकृति प्राप्त हुई। भक्ति आंदोलन ने हिंदी को आम जनता की भाषा बना दिया। संत कवियों ने सरल और सहज हिंदी में अपने विचार प्रस्तुत किए, जिससे भाषा समाज के हर वर्ग तक पहुंची। कबीरदास ने सामाजिक आडंबर और असमानता पर तीखा प्रहार किया। तुलसीदास ने रामचरितमानस के माध्यम से हिंदी को घर-घर तक पहुंचाया। सूरदास, मीरा और रैदास जैसे कवियों ने भक्ति और मानवीय संवेदनाओं को हिंदी में अभिव्यक्त किया।

इस काल में हिंदी केवल साहित्य की भाषा नहीं रही, बल्कि सामाजिक सुधार और आध्यात्मिक चेतना का सशक्त माध्यम बनी।

आधुनिक हिंदी का विकास

आधुनिक काल में हिंदी ने नए वैचारिक और साहित्यिक आयाम ग्रहण किए। उन्नीसवीं शताब्दी में हिंदी को एक संगठित और मानकीकृत रूप देने का प्रयास हुआ। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी को सामाजिक जागरण और राष्ट्रीय चेतना से जोड़ा। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी साहित्य को अनुशासन और वैचारिक स्पष्टता प्रदान की। प्रेमचंद ने हिंदी कथा साहित्य को सामाजिक यथार्थ से जोड़ा। उनके साहित्य में ग्रामीण जीवन, सामाजिक असमानता और मानवीय संवेदनाएं प्रमुख रूप से दिखाई देती हैं।

छायावाद युग के साहित्यकारों ने हिंदी को भावनात्मक और दार्शनिक गहराई प्रदान की। इस प्रकार हिंदी समय के साथ निरंतर विकसित होती रही।

हिंदी और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम

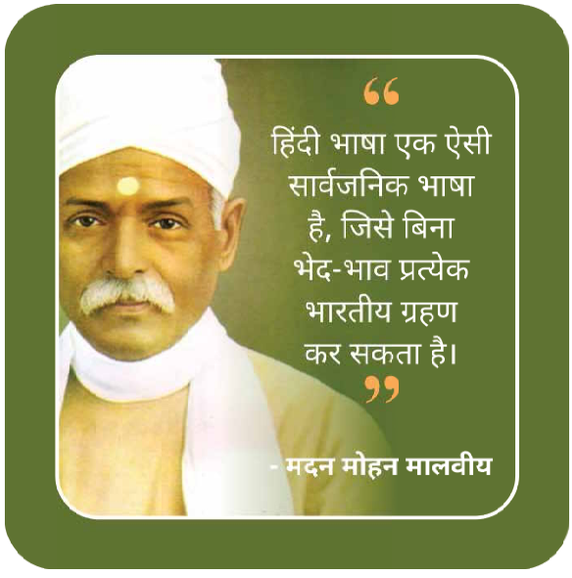

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। स्वतंत्रता संग्राम को जन आंदोलन बनाने में हिंदी ने केंद्रीय भूमिका निभाई। हिंदी में लिखे गए लेख, भाषण और पत्र-पत्रिकाएँ जनता तक स्वतंत्रता का संदेश पहुंचाने का माध्यम बनीं।

महात्मा गांधी ने हिंदी को राष्ट्रीय भाषा के रूप में अपनाने पर विशेष बल दिया। उनका मानना था कि विदेशी भाषा से शासन और शिक्षा देश को आत्मनिर्भर नहीं बना सकती। हिंदी के माध्यम से ही सच्चा स्वराज संभव है। हिंदी ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान विभिन्न प्रांतों के लोगों को एक साझा मंच पर लाया और राष्ट्रीय एकता की भावना को प्रबल किया।

हिंदी और राष्ट्रीय चेतना

राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। हिंदी ने भारतवासियों को एक साझा पहचान प्रदान की। विभिन्न धर्मों, जातियों और क्षेत्रों के लोग हिंदी के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़े। हिंदी ने “हम भारतीय हैं” की भावना को मजबूत किया। इस भाषा ने क्षेत्रीय सीमाओं से ऊपर उठकर राष्ट्रीय सोच को विकसित किया।

संविधान में हिंदी का स्थान

स्वतंत्रता के बाद भारत के संविधान निर्माण के समय भाषा का प्रश्न अत्यंत संवेदनशील था। भारत की भाषाई विविधता को ध्यान में रखते हुए लंबे विचार-विमर्श के बाद हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया गया। यह निर्णय संतुलन और समन्वय पर आधारित था। हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में स्वीकार किया गया, न कि अन्य भाषाओं के स्थान पर।

संविधान ने सभी भारतीय भाषाओं को सम्मान दिया और बहुभाषिकता को भारत की शक्ति के रूप में स्वीकार किया।

हिंदी : संपर्क भाषा के रूप में

भारत जैसे विशाल और विविध देश में संपर्क भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। हिंदी ने इस भूमिका को सफलतापूर्वक निभाया है। रेलवे, बैंक, प्रशासन, शिक्षा और व्यापार जैसे क्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग संवाद को सरल बनाता है।

हिंदी ने विभिन्न भाषाई समुदायों के बीच विश्वास और सहयोग को बढ़ावा दिया है और राष्ट्रीय एकता को व्यवहारिक रूप प्रदान किया है।

हिंदी और सामाजिक समरसता

भारत एक ऐसा समाज है जिसमें विविधता केवल बाहरी नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना के भीतर भी विद्यमान है। जाति, वर्ग, धर्म, क्षेत्र और भाषा के आधार पर समाज कई स्तरों में विभाजित दिखाई देता है। ऐसे समाज में यदि कोई तत्व सामाजिक समरसता और आपसी सौहार्द को बनाए रखता है, तो वह है साझा संवाद की भाषा। हिंदी भाषा ने इस दिशा में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है।

हिंदी ने समाज के विभिन्न वर्गों के बीच संवाद की दूरी को कम किया है। यह भाषा न तो केवल उच्च वर्ग की रही है और न ही केवल किसी एक क्षेत्र तक सीमित रही है। किसान, श्रमिक, व्यापारी, विद्यार्थी, शिक्षक, साहित्यकार और प्रशासक—सभी वर्गों ने हिंदी को अपनाया है। इसी कारण हिंदी एक लोकतांत्रिक भाषा के रूप में उभरी है।

जब समाज के विभिन्न वर्ग एक ही भाषा में संवाद करते हैं, तो आपसी समझ बढ़ती है। गलतफहमियाँ कम होती हैं और सामाजिक तनाव घटता है। हिंदी ने सामाजिक एकता को केवल सैद्धांतिक रूप से नहीं, बल्कि व्यवहारिक रूप से भी सुदृढ़ किया है।

ग्रामीण भारत और हिंदी भाषा

भारत की आत्मा उसके गांवों में बसती है। आज भी देश की बड़ी जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। ग्रामीण समाज की भाषा सरल, सहज और भावनात्मक होती है। हिंदी और उसकी बोलियाँ ग्रामीण जीवन की अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम रही हैं। ग्रामीण भारत में हिंदी केवल संवाद की भाषा नहीं, बल्कि लोकगीतों, कहावतों, कहानियों और

परंपराओं की संवाहक रही है। खेतों में गाए जाने वाले गीत, त्योहारों पर बोली जाने वाली कथाएँ और जीवन के विभिन्न संस्कार—इन सभी में हिंदी की उपस्थिति स्पष्ट दिखाई देती है।

ग्रामीण समाज को राष्ट्रीय मुख्यधारा से जोड़ने में हिंदी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। जब सरकारी योजनाएं, जनकल्याणकारी कार्यक्रम और सामाजिक संदेश हिंदी में प्रस्तुत किए जाते हैं, तो वे आम जनता तक प्रभावी ढंग से पहुंचते हैं।

शहरीकरण और हिंदी का बदलता स्वरूप

शहरीकरण के साथ हिंदी का स्वरूप भी परिवर्तित हुआ है। शहरों में हिंदी अन्य भाषाओं के संपर्क में आई और उसने नए शब्द, नई अभिव्यक्तियां और नए रूप अपनाए। यह परिवर्तन हिंदी की कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी जीवंतता का प्रमाण है। शहरी हिंदी में अंग्रेजी और अन्य भाषाओं के शब्दों का प्रयोग बढ़ा है, किंतु मूल संरचना हिंदी की ही बनी रही है। यह मिश्रण आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं को दर्शाता है। हिंदी ने स्वयं को बदलते समय के अनुरूप ढाला है, इसी कारण वह आज भी प्रासंगिक बनी हुई है।

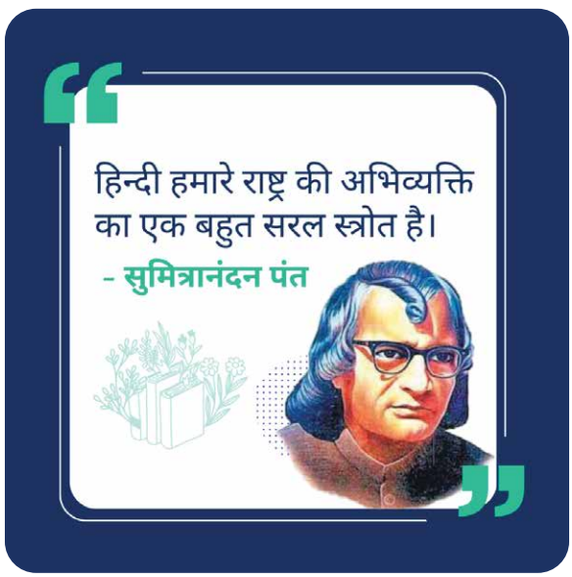

शहरों में रहने वाले विभिन्न राज्यों के लोग हिंदी के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़ते हैं। महानगरों में हिंदी संपर्क भाषा के रूप में सबसे अधिक प्रयुक्त होती है। इससे सामाजिक समन्वय और सांस्कृतिक मेलजोल को बढ़ावा मिलता है।

हिंदी और स्त्री चेतना

हिंदी भाषा ने स्त्री चेतना और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हिंदी साहित्य में महिलाओं के जीवन, संघर्ष, अधिकार और आत्मसम्मान को व्यापक रूप से अभिव्यक्त किया गया है। आधुनिक हिंदी साहित्य में महिला लेखिकाओं ने अपने अनुभवों और दृष्टिकोण को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। इससे समाज में स्त्रियों के प्रति जागरूकता बढ़ी है और लैंगिक समानता की भावना को बल मिला है।

हिंदी भाषा ने महिलाओं को अपनी बात कहने का मंच दिया। शिक्षा, मीडिया और सामाजिक आंदोलनों में हिंदी के माध्यम से महिलाओं की आवाज़ सशक्त हुई है।

हिंदी और शिक्षा प्रणाली

भारत की शिक्षा प्रणाली में हिंदी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक हिंदी ने करोड़ों विद्यार्थियों को ज्ञान से जोड़ा है। मातृभाषा या निकटतम भाषा में शिक्षा प्राप्त करने से विद्यार्थियों की समझ बेहतर होती है। हिंदी माध्यम से पढ़ने वाले छात्र विषयों को गहराई से समझ पाते हैं और आत्मविश्वास के साथ अपने विचार व्यक्त करते हैं।

आज अनेक तकनीकी और व्यावसायिक पाठ्यक्रम हिंदी में उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इससे शिक्षा का लोकतंत्रीकरण हुआ है और समाज के सभी वर्गों को समान अवसर मिले हैं।

हिंदी और प्रशासनिक व्यवस्था

प्रशासन और शासन में भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। यदि शासन की भाषा जनता की समझ से बाहर हो, तो लोकतंत्र कमजोर पड़ता है। हिंदी ने इस समस्या को काफी हद तक दूर किया है। सरकारी दस्तावेज़, योजनाएं, सूचनाएं और घोषणाएं हिंदी में उपलब्ध होने से आम जनता को लाभ मिलता है। इससे प्रशासन में पारदर्शिता बढ़ती है और नागरिकों की भागीदारी सशक्त होती है।

हिंदी ने शासन और जनता के बीच की दूरी को कम किया है और लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत किया है।

हिंदी और राष्ट्रीय एकात्मता

राष्ट्रीय एकात्मता का अर्थ केवल राजनीतिक एकता नहीं, बल्कि भावनात्मक और सांस्कृतिक एकता भी है। हिंदी ने इस भावनात्मक एकता को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राष्ट्रीय पर्वों, आंदोलनों, आपदाओं और उपलब्धियों के समय हिंदी के माध्यम से देशवासियों में एकजुटता की भावना प्रबल होती है। हिंदी भाषणों, गीतों और संदेशों के माध्यम से राष्ट्रीय भावना को अभिव्यक्त किया जाता है। हिंदी ने "हम" की भावना को मजबूत किया है, जो किसी भी राष्ट्र की स्थिरता के लिए आवश्यक होती है।

हिंदी और जनसंचार माध्यम

जनसंचार माध्यम किसी भी समाज की सोच, दिशा और चेतना को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन और डिजिटल प्लेटफॉर्म न केवल सूचना प्रदान करते हैं, बल्कि जनमत का निर्माण भी करते हैं। भारत जैसे विशाल और विविध देश में जनसंचार माध्यमों की भाषा का चयन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इस संदर्भ में हिंदी भाषा ने जनसंचार के क्षेत्र में केंद्रीय भूमिका निभाई है।

हिंदी समाचार पत्रों ने स्वतंत्रता आंदोलन के समय से लेकर आज तक जनता को जागरूक करने का कार्य किया है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में हिंदी अख़बारों की पहुंच ने लोकतांत्रिक चेतना को सुदृढ़ किया है। हिंदी पत्रकारिता ने आम जन की समस्याओं को राष्ट्रीय मंच प्रदान किया और सत्ता तथा समाज के बीच सेतु का कार्य किया।

रेडियो और दूरदर्शन के माध्यम से हिंदी ने दूर-दराज़ के क्षेत्रों तक अपनी पहुंच बनाई। रेडियो कार्यक्रमों के माध्यम से कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक विषयों पर जनजागरूकता फैली। टेलीविजन पर हिंदी समाचार चैनलों और कार्यक्रमों ने राष्ट्रीय संवाद को एक दिशा प्रदान की।

हिंदी पत्रकारिता और लोकतंत्र

लोकतंत्र की सफलता स्वतंत्र और सशक्त पत्रकारिता पर निर्भर करती है। हिंदी पत्रकारिता ने भारत में लोकतंत्र को मजबूती प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हिंदी पत्रकारिता ने केवल सत्ता की गतिविधियों की रिपोर्टिंग ही नहीं की, बल्कि सामाजिक अन्याय, भ्रष्टाचार और असमानता के विरुद्ध आवाज़ भी उठाई। हिंदी पत्रकारिता की विशेषता यह रही है कि उसने आम जनता की भाषा में उनकी समस्याओं को प्रस्तुत किया। इससे नागरिकों में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी। लोकतांत्रिक व्यवस्था में यह भूमिका अत्यंत आवश्यक है।

आज डिजिटल मीडिया के विस्तार के साथ हिंदी पत्रकारिता ने नए मंचों पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। ऑनलाइन समाचार पोर्टल, यूट्यूब चैनल और सोशल मीडिया के माध्यम से हिंदी पत्रकारिता और अधिक प्रभावशाली बनी है।

डिजिटल युग में हिंदी भाषा

इक्कीसवीं शताब्दी को डिजिटल युग कहा जाता है। इंटरनेट, स्मार्टफोन और सोशल मीडिया ने संचार के स्वरूप को पूरी तरह बदल दिया है। प्रारंभ में डिजिटल दुनिया पर अंग्रेजी का वर्चस्व था, किंतु समय के साथ हिंदी ने इस क्षेत्र में भी अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है।

आज सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर हिंदी में संवाद करने वाले उपयोगकर्ताओं की संख्या करोड़ों में है। लोग हिंदी में पोस्ट लिखते हैं, वीडियो बनाते हैं, ब्लॉग लिखते हैं और पॉडकास्ट तैयार करते हैं। इससे हिंदी भाषा की पहुंच और प्रभाव दोनों बढ़े हैं।

तकनीकी क्षेत्र में हिंदी की भूमिका

तकनीक के क्षेत्र में भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। यदि तकनीकी ज्ञान केवल सीमित भाषा में उपलब्ध हो, तो समाज का बड़ा वर्ग उससे वंचित रह जाता है। हिंदी ने इस असमानता को कम करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।आज अनेक सॉफ्टवेयर, मोबाइल एप्लिकेशन और डिजिटल सेवाएँ हिंदी में उपलब्ध हैं। इससे तकनीक आम जनता के लिए अधिक सुलभ हुई है। सरकारी पोर्टल, बैंकिंग सेवाएँ और ऑनलाइन सुविधाएं हिंदी में उपलब्ध होने से डिजिटल समावेशन को बढ़ावा मिला है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन अनुवाद और वॉयस असिस्टेंट जैसी तकनीकों में हिंदी का समावेश यह दर्शाता है कि हिंदी भविष्य की भाषा बनने की क्षमता रखती है।

हिंदी और वैज्ञानिक ज्ञान

वैज्ञानिक और तकनीकी शिक्षा में लंबे समय तक अंग्रेजी का प्रभुत्व रहा है। इससे बड़ी जनसंख्या वैज्ञानिक ज्ञान से पूरी तरह जुड़ नहीं पाई। हिंदी में वैज्ञानिक ज्ञान के प्रसार ने इस स्थिति को बदलने की दिशा में कदम बढ़ाए हैं।आज अनेक विज्ञान विषयक पुस्तकें, लेख और वीडियो हिंदी में उपलब्ध हैं। इससे छात्रों और आम जनता को विज्ञान को समझने में सहायता मिली है। हिंदी के माध्यम से वैज्ञानिक सोच को समाज के व्यापक वर्ग तक पहुंचाया जा सकता है।

वैज्ञानिक शब्दावली का विकास हिंदी के लिए एक चुनौती रहा है, किंतु यह कार्य निरंतर प्रगति पर है। जैसे-जैसे हिंदी में वैज्ञानिक सामग्री बढ़ेगी, वैसे-वैसे ज्ञान का लोकतंत्रीकरण होगा।

वैश्वीकरण और हिंदी भाषा

वैश्वीकरण के इस दौर में भाषाओं के सामने नई चुनौतियां और अवसर दोनों हैं। एक ओर वैश्विक संपर्क के कारण अंग्रेजी का प्रभाव बढ़ा है, वहीं दूसरी ओर स्थानीय भाषाओं को अपनी पहचान बनाए रखने की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। हिंदी ने वैश्वीकरण के बीच अपनी प्रासंगिकता बनाए रखी है। प्रवासी भारतीय समुदायों के माध्यम से हिंदी विश्व के विभिन्न देशों में पहुंची है। हिंदी साहित्य, फिल्में और संगीत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय हो रहे हैं।

वैश्वीकरण ने हिंदी को सीमाओं से बाहर निकलने का अवसर दिया है। आज हिंदी केवल भारत की भाषा नहीं, बल्कि वैश्विक भारतीय संस्कृति की पहचान बन रही है।

हिंदी और सांस्कृतिक कूटनीति

भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक कूटनीति का भी सशक्त साधन होती है। हिंदी ने भारत की सांस्कृतिक छवि को विश्व मंच पर प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी साहित्यिक आयोजन, फिल्म महोत्सव और सांस्कृतिक कार्यक्रम विदेशों में आयोजित किए जाते हैं। इससे विदेशी नागरिकों को भारतीय संस्कृति को समझने का अवसर मिलता है।

हिंदी के माध्यम से भारत ने अपनी "सॉफ्ट पावर" को सुदृढ़ किया है। यह शक्ति राष्ट्रों के बीच संबंधों को मजबूत करने में सहायक होती है।

हिंदी और युवा वर्ग तथा भाषाई सहिष्णुता

किसी भी भाषा का भविष्य युवा पीढ़ी के हाथों में होता है। आज का युवा वर्ग हिंदी को नए रूप में अपना रहा है। सोशल मीडिया, संगीत, कविता और डिजिटल कंटेंट के माध्यम से युवा हिंदी को आधुनिक अभिव्यक्ति दे रहे हैं। युवा वर्ग हिंदी में अपनी पहचान और अनुभवों को साझा कर रहा है। इससे हिंदी की जीवंतता बनी हुई है। यह भाषा केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की भाषा भी है।

भारत की भाषाई विविधता के बीच सहिष्णुता बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। हिंदी को एकता की पहचान तभी माना जा सकता है जब वह अन्य भाषाओं के प्रति सम्मान और संवेदनशीलता बनाए रखे। हिंदी ने ऐतिहासिक रूप से अन्य भाषाओं से शब्द और विचार ग्रहण किए हैं। यह ग्रहणशीलता हिंदी की शक्ति है। भाषाई सहिष्णुता से ही राष्ट्रीय एकता को स्थायित्व मिलता है।

हिंदी और भारतीय भाषाओं का पारस्परिक संबंध

भारत की भाषाई संरचना बहुस्तरीय और बहुरंगी है। यहां प्रत्येक क्षेत्र की अपनी भाषा और सांस्कृतिक पहचान है। इस संदर्भ में हिंदी का स्थान किसी प्रतिस्पर्धी भाषा का नहीं, बल्कि एक समन्वयकारी भाषा का रहा है। हिंदी ने कभी अन्य भारतीय भाषाओं को नकारने या प्रतिस्थापित करने का प्रयास नहीं किया, बल्कि उनसे शब्द, भाव और अभिव्यक्तियां ग्रहण कर स्वयं को समृद्ध किया है।

हिंदी की यह ग्रहणशीलता उसकी सबसे बड़ी शक्ति है। संस्कृत, उर्दू, फारसी, अरबी, बंगला, मराठी, पंजाबी, गुजराती, तमिल और अन्य भारतीय भाषाओं से प्रभावित होकर हिंदी एक व्यापक और सर्वसमावेशी स्वरूप में विकसित हुई है। यही कारण है कि हिंदी विभिन्न भाषाई समुदायों को सहज रूप से जोड़ पाती है।

भाषा नीति और हिंदी

स्वतंत्र भारत की भाषा नीति का उद्देश्य भाषाई संतुलन बनाए रखना रहा है। संविधान ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया, साथ ही अन्य भारतीय भाषाओं को भी समान सम्मान प्रदान किया। यह नीति भारत की बहुभाषिक प्रकृति को स्वीकार करती है।

हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में अपनाने का उद्देश्य प्रशासनिक सुविधा और राष्ट्रीय संवाद को सशक्त बनाना था, न कि किसी क्षेत्रीय भाषा को दबाना। जब हिंदी इस संतुलन के साथ प्रयुक्त होती है, तब यह एकता को सुदृढ़ करती है, विवाद को नहीं।

हिंदी और राष्ट्रीय भविष्य

आज के वैश्वीकरण और तकनीकी विकास के युग में हिंदी नई संभावनाओं की भाषा बन रही है। डिजिटल प्लेटफॉर्म, शिक्षा, मीडिया और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी की उपस्थिति बढ़ रही है। यह संकेत है कि हिंदी भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को ढालने में सक्षम है।

उपसंहार

भारत जैसे विशाल, विविधतापूर्ण और बहुभाषी राष्ट्र में एकता बनाए रखना सरल कार्य नहीं है। यहाँ भाषा केवल संवाद का साधन नहीं, बल्कि पहचान, भावना और सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक है। इस जटिल सामाजिक संरचना में हिंदी भाषा ने एक सेतु की भूमिका निभाई है। उसने विभिन्न भाषाई, सांस्कृतिक और सामाजिक समूहों को आपस में जोड़ने का कार्य किया है।

हिंदी की शक्ति उसकी व्यापकता, सरलता और ग्रहणशीलता में निहित है। यह भाषा जनसाधारण की भाषा है, जिसने स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आधुनिक डिजिटल युग तक भारत की राष्ट्रीय चेतना को अभिव्यक्त किया है। हिंदी ने न केवल संवाद को संभव बनाया, बल्कि "हम भारतीय हैं" की सामूहिक भावना को भी सुदृढ़ किया है।

यह सत्य है कि भारत की सभी भाषाएँ समान रूप से सम्माननीय हैं और प्रत्येक भाषा देश की सांस्कृतिक धरोहर है। हिंदी की भूमिका इन भाषाओं के विरोध में नहीं, बल्कि उनके साथ सहअस्तित्व में है। जब हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में, संवेदनशीलता और संतुलन के साथ अपनाया जाता है, तब यह राष्ट्रीय एकता को कमजोर नहीं, बल्कि और अधिक सशक्त बनाती है।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि हिंदी भाषा केवल एक भाषाई माध्यम नहीं, बल्कि भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय एकता की सशक्त पहचान है। विविधताओं से भरे इस राष्ट्र में हिंदी वह सूत्र है जो लोगों को जोड़ता है, संवाद को सरल बनाता है और भारत की सामूहिक चेतना को निरंतर जीवित रखता है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी

- प्रदीप बालिगा
वरिष्ठ क्षेत्रीय राजभाषा अधिकारी

कोंकण रेलवे भारत के पश्चिमी तट क्षेत्र में पहाड़ों, नदियों और कठिन भू-भाग से होकर गुजरती है। अत्यंत दुर्गम परिस्थितियों में अनेक पुलों और सुरंगों का निर्माण कर इस रेल मार्ग को साकार किया गया है, जिसके कारण कोंकण रेलवे को एक महत्त्वपूर्ण इंजीनियरिंग उपलब्धि के रूप में देखा जाता है। कोंकण रेलवे अपने निर्माण कार्यों के साथ-साथ रेल सेवाओं के संचालन का दायित्व भी निभा रही है। रेलवे के परिचालन के दौरान कर्मचारियों को विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण प्रदान किए जाते हैं। इन प्रशिक्षणों में परिचालन एवं सुरक्षा से संबंधित प्रशिक्षणों के अतिरिक्त राजभाषा का प्रशिक्षण भी शामिल होता है।

राजभाषा प्रशिक्षण प्रायः संवादात्मक तरीके से दिया जाता है। ऐसा ही एक व्याख्यान यहां पर प्रस्तुत है-

विद्यार्थी - सुप्रभात, महोदय।

व्याख्याता - सुप्रभात। आज के व्याख्यान का विषय है- प्रयोजनमूलक हिन्दी।

विद्यार्थी - जी, महोदय।

व्याख्याता - सदन के दोनों सदनों द्वारा पारित सरकारी संकल्प को आम जानकारी के लिए प्रकाशित करने का उद्देश्य क्या है?

विद्यार्थी - महोदय, कृपया आप ही बताइए।

व्याख्याता - ठीक है।

1. जबकि संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी रहेगी और उसके अनुच्छेद 351 के अनुसार हिन्दी भाषा का प्रसार, वृद्धि और विकास करना, ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके, संघ का कर्तव्य है-

   यह सभा संकल्प करती है कि हिन्दी के प्रसार एवं विकास की गति बढ़ाने के उद्देश्य से तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों के लिए उसके उत्तरोत्तर प्रयोग हेतु भारत सरकार द्वारा एक अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा। किए जाने वाले उपायों एवं की जाने वाली प्रगति की विस्तृत वार्षिक मूल्यांकन-रिपोर्ट संसद के दोनों सदनों के पटल पर रखी जाएगी और सभी राज्य सरकारों को भेजी जाएगी।

2. जबकि संविधान की आठवीं अनुसूची में हिन्दी के अतिरिक्त भारत की 21 मुख्य भाषाओं का उल्लेख किया गया है और देश की शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि इन भाषाओं के पूर्ण विकास हेतु सामूहिक उपाय किए जाएं-

   यह सभा संकल्प करती है कि हिन्दी के साथ-साथ इन सभी भाषाओं के समन्वित विकास हेतु भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों के सहयोग से एक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा, ताकि वे शीघ्र समृद्ध हों और आधुनिक ज्ञान के संचार का प्रभावी माध्यम बन सकें।

3. जबकि एकता की भावना के संवर्धन तथा देश के विभिन्न भागों की जनता के बीच संचार की सुविधा के लिए यह आवश्यक है कि भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों के परामर्श से तैयार किए गए त्रि-भाषा सूत्र को सभी राज्यों में पूर्णतः प्रभावी रूप से कार्यान्वित किया जाए -

   यह सभा संकल्प करती है कि हिन्दी-भाषी क्षेत्रों में हिन्दी तथा अंग्रेज़ी के अतिरिक्त एक आधुनिक भारतीय भाषा, दक्षिण भारत की भाषाओं में से किसी एक को प्राथमिकता देते हुए, तथा अहिन्दी-भाषी क्षेत्रों में प्रादेशिक भाषाओं एवं अंग्रेज़ी के साथ-साथ हिन्दी के अध्ययन के लिए उस सूत्र के अनुसार प्रबंध किया जाए।

4. और जबकि यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि संघ की लोक सेवाओं के विषय में देश के विभिन्न भागों के लोगों के न्यायोचित दावों और हितों का पूर्ण संरक्षण किया जाए-

यह सभा संकल्प करती है कि-

उन विशेष सेवाओं अथवा पदों को छोड़कर, जिनके लिए ऐसे किसी सेवा अथवा पद के कर्तव्यों के संतोषजनक निष्पादन हेतु केवल अंग्रेज़ी अथवा केवल हिन्दी अथवा दोनों (जैसी भी स्थिति हो) का उच्च स्तर का ज्ञान आवश्यक समझा जाए, संघ की सेवाओं अथवा पदों पर भर्ती के लिए उम्मीदवारों के चयन के समय हिन्दी अथवा अंग्रेज़ी में से किसी एक का ज्ञान अनिवार्य होगा; और परीक्षाओं की भावी योजना, प्रक्रिया-संबंधी पहलुओं तथा समय-निर्धारण के विषय में संघ लोक सेवा आयोग के विचार जानने के पश्चात अखिल भारतीय एवं उच्चतर केंद्रीय सेवाओं संबंधी परीक्षाओं के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित सभी भाषाओं तथा अंग्रेज़ी को वैकल्पिक माध्यम के रूप में रखने की अनुमति दी जाएगी।"

व्याख्याता- अब देखते हैं तकनीकी शब्द और हिन्दी में उनके अर्थ।

सतर्कता शब्दावली		
क्र.	**अंग्रेजी शब्द (व्याख्याता द्वारा पूछे गए)**	**हिंदी पर्याय (विद्यार्थियों ने उत्तर दिए)**
1	Accused	अभियुक्त
2	Affidavit	शपथपत्र/हलफनामा
3	Bad performance	कुनिष्पादन
4	Defence	प्रतिवाद
5	Liquidation	परिसमापन
6	Narcotics	स्वापक पदार्थ
7	Obligatory	बाध्यकर
8	Order for revocation of suspension	निलंबन प्रतिसंहरण आदेश
9	Pledge of secrecy	गोप्यता प्रण/गोपनीय प्रण
10	Safe custody	निरापद अभिरक्षा

सिगनल एवं दूरसंचार शब्दवाली		
क्र.	**अंग्रेजी शब्द (व्याख्याता द्वारा पूछे गए)**	**हिंदी पर्याय (विद्यार्थियों ने उत्तर दिए)**
1	Adjusting screw	समायोजक पेंच
2	Amplifier	प्रवर्धक
3	Bi-polar	द्वि-ध्रुवी
4	Distinctive aspect	विशिष्ट स्थिति
5	Flap gate	पल्लादार फाटके
6	Generator	जनित्र
7	Insulation	विसंवाहन/विद्युत रोधन
8	Layout	विन्यास
9	Range	प्रक्षेत्र
10	Vacuum	निर्वात

व्याख्याता - क्या आप इन शब्दों से परिचित हो गए हैं और अपने दैनंदिन कार्यों में इनका उपयोग कर सकेंगे?

विद्यार्थी - जी महोदय।

विद्यार्थी - धन्यवाद महोदय। इसी प्रकार हम कुछ अंग्रेज़ी-हिन्दी वाक्यांश सीखना चाहते हैं।

व्याख्याता - तो चलिए, आपको परिचित करवा देते हैं।

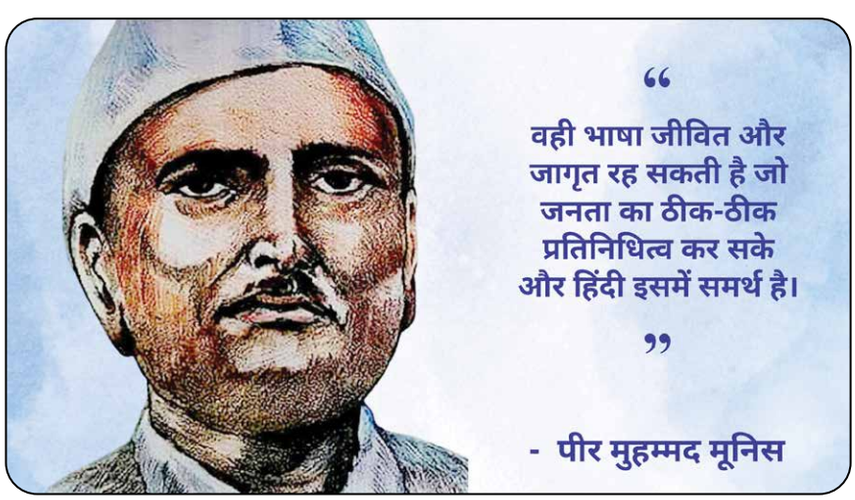

टिप्पणियों के अंग्रेजी-हिन्दी पर्याय

क्र.	अंग्रेजी (विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए)	हिन्दी (व्याख्याता ने उत्तर दिए)
1	A committee may be formed for disciplinary action	अनुशासनिक कार्रवाई करने के लिए समिति का गठन किया जाए।
2	Adjust the amount of advance	अग्रिम राशि का समायोजन करें।
3	All the apprehension may be redressed	सभी भ्रांतियों का निवारण किया जाए।
4	Approved as per remarks in margin	होशिये की टिप्पणी के अनुसार अनुमोदित।
5	Discrepancy may be reconciled	विसंगति का समाधान किया जाए।
6	Draft as amended is put up	यथा संशोधित मसौदा प्रस्तुत है।
7	Entertainment expenses may reimbursed	आतिथ्य व्यय की प्रतिपूर्ति की जाए।
8	Explanation from the defaulter may be obtained	चूककर्ता से जवाब मांगा जाए।
9	Liquidate there present loan	वर्तमान ऋण का परिसमापन करें।
10	Matter is under consideration	विषय/मामला विचाराधीन है।
11	Please expedite compliance	शीघ्र अनुपालन करें।
12	Potential areas may be explored	संभाव्य क्षेत्रों का अन्वेषण किया जाए।
13	Required to be confirm	पुष्टिकरण अपेक्षित है।
14	Shall not be questioned on any ground	किसी भी आधार पर आपत्ति नहीं की जाएगी।
15	The proposal is quite in order	यह प्रस्ताव नियमनुकूल है।

सत्यमेव जयते

केंद्र सरकार के कार्यालय अपने कार्यालय में हिंदी में कार्य का माहौल तैयार करने के लिए हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रहे हैं। इन पत्रिकाओं में कार्यालय की सामान्य गतिविधियों तथा उस कार्यालय के कामकाज से संबंधित मौलिक आलेख प्रकाशित किए जाएं। साथ ही राजभाषा नीति के प्रमुख प्रावधानों का भी उल्लेख अवश्य हो । केंद्र सरकार के कार्यालयों से अपेक्षा की जाती है कि वे इन पत्रिकाओं के ई- वर्जन तैयार करें और इन्हें राजभाषा विभाग द्वारा उपलब्ध कराए गए प्लेटफॉर्म " ई-पत्रिका पुस्तकालय" पर अपलोड करें ताकि गृह-पत्रिकाएं पाठकों को सहज तरीके से प्राप्त हो सकें।

सरकार की राजभाषा नीति के प्रति अधिकारियों/कर्मचारियों की सुग्राही बनाने की दृष्टि से यह आवश्यक है कि सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में हुई प्रगति की समीक्षा को मात्र राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों तक ही सीमित न रखा जाए। इस संबंध में मॉनीटरिंग को और अधिक प्रभावी और कारगर बनाने के लिए यह जरूरी है कि मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों के प्रशासनिक प्रधानों द्वारा ली जाने वाली प्रत्येक बैठक में इस पर नियमित रूप से विस्तृत चर्चा की जाए और इसे कार्यसूची की एक स्थायी मद के रूप में शामिल किया जाए।

राजभाषा नियम, 1976

भाषा क्षेत्र	राज्य / संघ राज्य
'क'	बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य हैं
'ख'	गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमन और दीव तथा दादर और नगर हवेली संघ राज्य
'ग'	उपरोक्त निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य

‘साझे लमहों की महक’: काव्य-संग्रह प्रकृति और मानवीय प्रश्नों का काव्यात्मक संगम

- सदानंद चितले
सहायक उप-महाप्रबंधक (राजभाषा)
कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड

श्री आलोक कुमार - भारतीय पुलिस सेवा में अनुशासन और दक्षता का निर्वहन करते हुए भी एक संवेदनशील कवि हैं। ‘साझे लमहों की महक’ काव्य-संग्रह कवि की सर्जनात्मक यात्रा का दस्तावेज़ है, जिसमें अनुभव की आंच, संवेदना की नमी और स्पष्ट विचारों की अभिव्यक्ति है।

श्री आलोक कुमार की कविताएं किसी तात्कालिक भावोच्छवास की उपज नहीं हैं, बल्कि वे भीतर गहरे उतरे अनुभवों, लम्बे आत्मसंवाद और प्रकृति से एकात्म चित्तवृत्ति का परिणाम हैं। इस संग्रह में कविता जीवन को देखने का एक दृष्टिकोण बनकर सामने आती है - जहां प्रेम, प्रकृति, समय, मौन, स्मृति और अस्तित्व आपस में घुल-मिलकर एक बहुआयामी काव्य-लोक रचते हैं।

इस संग्रह की सबसे उल्लेखनीय विशेषता है कि कवि किसी एक बिन्दु से कविता शुरू करता है, पर वह बिन्दु शीघ्र ही एक दृश्य में बदल जाता है और फिर दृश्य धीरे-धीरे समय, स्मृति और चेतना के अनेक आयामों से जुड़कर व्यापक अर्थ-संसार निर्मित करता है।

प्रकृति इस संग्रह की आत्मा है। पर यह प्रकृति-वर्णन सतही या सजावटी नहीं है। देवदार, चांद, नदी, झील, पीर पंजाल, गौरैया - ये सभी कविताओं में केवल बिम्ब नहीं, बल्कि संवेदना के वाहक हैं। ‘गुलमर्ग की एक सुबह’, ‘डल और चांद’, ‘झेलम का प्रेमगीत’, ‘नीम के मोहल्ले में अमलतास’ और ‘पाटलिपुत्र की गंगा से’ जैसी कविताएं प्रकृति को एक जीवित, संवेदनशील सत्ता के रूप में प्रस्तुत करती हैं। कवि प्रकृति से संवाद करता है, उसे सुनता है और उसके मौन को शब्द देता है। विशेष रूप से ‘पूछती है गौरैया’ कविता समकालीन पर्यावरणीय संकट को अत्यंत करुण और मार्मिक ढंग से सामने लाती है, जहां एक छोटी-सी चिड़िया के प्रश्न पूरे सभ्यतागत विकास पर प्रश्नचिह्न लगा देते हैं।

क्या कभी फिर
मिलूंगी तुमसे
खेत-खलिहानों में
गाऊंगी फिर से
घर की मुंडेरों पर
नहाऊंगी फिर से

इस संग्रह में प्रेम एक केंद्रीय भाव है, पर यह प्रेम देह की सीमाओं से आगे जाकर अस्तित्वगत विस्तार पाता है। ‘वक़्त की शाख पर उगे लम्हे’ खण्ड की कविताएं प्रेम को व्यष्टि से समष्टि और समष्टि से सृष्टि की ओर ले जाती हैं। ‘स्वाहा’,‘चांद एक आईना’, ‘अजनबी’ और ‘पगडण्डी’ जैसी कविताएं प्रेम को आत्म-विलय, तादात्म्य और चेतना के विस्तार के रूप में देखती हैं।

कवि वास्तविकता भी जानता है कि ‘नदी और समय’ एक समान हैं, जो किसी के लिए रुकते नहीं हैं-

मान लेते हैं
एक झूठे दम्भ में
कि समय हमारा है
पर ना नदी किसी की है
ना समय किसी का है
दोनों बस बहते रहते हैं
एक साक्षी भाव से।

मौन और शब्द का द्वंद्व इस संग्रह की दार्शनिक रीढ़ है। ‘मौन बनाम शब्द’ कविता विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जहां कवि शब्दों की सीमाओं और मौन की व्यापकता पर गहन विमर्श करता है। शब्दों से उपजी सभ्यता, सत्ता, संगठन और हिंसा की आलोचना करते हुए कवि मौन को अर्थों का चरम बिंदु मानता है। यह दृष्टि कविता को सौन्दर्यात्मकता के साथ विचारोत्तेजक बनाती है।

कवि कठिन शब्दावली के मोह में नहीं पड़ते। उनकी भाषा सहज है पर उपमान और बिम्ब स्वाभाविक रूप से आते हैं, कृत्रिम नहीं लगते। कहीं-कहीं उर्दू शब्दों की सधी हुई उपस्थिति कविता को अतिरिक्त लय और गहराई देती है।

संग्रह की कविताएँ केवल सौन्दर्य-बोध तक सीमित नहीं हैं, उनमें समकालीन यथार्थ की टीस भी है। ‘पंचायतें इन्सानों की’ और ‘पूछती है गौरैया’ जैसी कविताएं विकास, पर्यावरण और मानवीय स्वार्थ की आलोचना करती हैं। कवि प्रश्न उठाता है, उत्तर पाठक की संवेदना पर छोड़ देता है।

समग्र रूप से यह काव्य-संग्रह एक संवेदनशील, विचारशील और परिपक्व कवि की सशक्त उपस्थिति दर्ज कराता है। यह संग्रह पाठक से धैर्य और संवेदना की अपेक्षा करता है और बदले में उसे एक ऐसा अनुभव देता है जो पढ़ने के बाद

भी भीतर गूंजता रहता है। आलोक कुमार की कविताएँ हमें रुककर देखने, सुनने और महसूस करने का आग्रह करती हैं - चाहे वह प्रकृति का सौन्दर्य हो, प्रेम की सूक्ष्मता हो या मौन की गहराई। यह संग्रह उनकी आगामी काव्य-यात्रा के प्रति आश्वस्त करता है और समकालीन हिन्दी कविता में एक महत्वपूर्ण और विश्वसनीय स्वर के आगमन की सूचना भी देता है।

कवि की लेखनी इसी तरह अनुभव, संवेदना और विचार की गहराइयों को छूती रहे, भावी रचनाएं भी पाठकों के मन में उसी तरह ठहरें, प्रश्न जगाएं और आलोकित करें। कवि की सर्जनात्मक यात्रा निरंतर, समृद्ध और अर्थपूर्ण होती जाए, कवि के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

संवाद

सन्तोष कुमार झा
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

समझते नहीं हो
मेरे मन की बात,
या फिर
बने रहते हो नासमझ,
जान कर सारी बात,
सारे हालात।

क्या होता नहीं सबसे सरल?
कह देना दिल की बात,
और सुन लेना
किसी के जज़्बात।

क्यों होता है कहना
कठिन
अपने मन के उद्गार?
क्यों बना रखा है
जटिल
संवाद का संसार?

क्यों नहीं खोल देते
अपने हृदय के द्वार?
जब मात्र मनुष्य को ही
मिला है
संवाद का उपहार।

क्यों करता रहता है मनुष्य
स्वांग स्वयं से जीवन भर ?
और अभाव में संवाद के
खोता रहता है
सुख के स्वर्णिम अवसर।

मिल सकते थे दो प्रेमी दिल
हो सकते थे कई मसले हल
रुक सकते थे कितने युद्ध
होते न खड़े अपनों के विरुद्ध।
होता कितना सुखमय संसार,
यदि खुले रखते संवाद के द्वार।

कोंकण रेलवे में आर.एम.वी. के साथ अनुरक्षण गैंग का कार्य

- स्वप्निल झगडे
जूनियर इंजीनियर, बेलापुर

कोंकण रेलवे, भारत के पश्चिमी तट पर स्थित एक प्रमुख रेलवे मार्ग है, जो अपनी सुंदरता और चुनौतीपूर्ण ट्रैक संरचना के लिए प्रसिद्ध है। यह मार्ग अरब सागर के किनारे से होकर गुजरता है, और यहां के ट्रैक और रेलवे इंफ्रास्ट्रक्चर को नियमित रख-रखाव की आवश्यकता होती है ताकि यह सुरक्षित और प्रभावी रूप से कार्य करता रहे। रेल मेंटेनेंस व्हीकल (RMV) के साथ मोबाइल मेंटेनेंस गैंग (MMG) का कार्य इस महत्वपूर्ण कार्य को अंजाम देना है। इस गैंग के द्वारा नियमित निरीक्षण, मरम्मत और रखरखाव किया जाता है ताकि कोकण रेलवे पर ट्रेन संचालन में कोई रुकावट न आए और सभी सुरक्षा मानकों का पालन किया जा सके। इस तरह के प्रयासों से न केवल रेलवे की कार्यक्षमता बनी रहती है, बल्कि यात्रियों की सुरक्षा और सुविधा भी सुनिश्चित होती है।

1. चालित अनुरक्षण गैंग (Mobile Maintenance Gang - MMG) क्या है ?

भारतीय रेल रेलपथ नियमावली (IRPWM),के तहत 3 स्तरीय प्रणाली को मशीनीकृत ट्रैक रखरखाव के लिए नामित अनुभागों पर अपनाया जाता है । इसमें ट्रैक रखरखाव के निम्नलिखित 3 स्तर शामिल है -

- ऑन-ट्रैक मशीन यूनिट (ओएमयू) (On-track Machines Unit)
- चालित अनुरक्षण गैंग (एमएमजी) (Mobile Maintenance Gang)
- सेक्शनल गैंग (Sectional Gangs)

भारतीय रेल रेलपथ नियमावली (IRPWM), की धारा 604 के तहत प्रत्येक SSE/P.Way (सिनियर सेक्शन इंजीनियर/रेलपथ) के अंतर्गत एक चालित अनुरक्षण गैंग (एमएमजी) (Mobile Maintenance Gang) होना चाहिए, जिसका क्षेत्राधिकार लगभग 70-80 किमी. सेक्शन होता है। इसका नेतृत्व एक अनुभागीय जेई/एसएसई पी.वे/(एमएमजी) को करना है तथा गतिशीलता के लिए यह रेल मेंटेनेंस व्हीकल (RMV) पर आधारित होना चाहिए । इस आधार पैर कोंकण रेलवे में आर.एम्.वी. के साथ चालित अनुरक्षण गैंग (MMG) का कार्य चलता है , चालित अनुरक्षण गैंग (MMG) एक टीम होती है जिसमे रेल मेंटेनेंस व्हीकल (RMV) के साथ काम करने के लिए प्रशिक्षित और सक्षम मल्टी क्राफ्ट्स मैन (MCM), मल्टी-स्किल्ड मैन (MSM), ट्रैक मेंटेनर और काम के अनुसार अन्य आवश्यक गैंग उपलब्ध रहती हैं। जो चलते-चलते रेलवे ट्रैक, और

अनुरक्षण गैंग : आर.एम.वी. के साथ

अन्य रेल संरचनाओं की निगरानी और मरम्मत करती है। ये गैंग विशेष रूप से उन जगहों पर काम करते हैं, जहां मरम्मत या देख-रेख की आवश्यकता होती है और वे अपने कार्य को ट्रेन के ऑपरेशन के दौरान भी कर सकते हैं। चालित अनुरक्षण गैंग (MMG) को विशेष रूप से ट्रैक, सिग्नल और अन्य महत्वपूर्ण संरचनाओं के लिए काम करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। ये गैंग कोकण रेलवे पर समय-समय पर अपने कार्यों को करते हुए सुनिश्चित करते हैं कि ट्रेनें सुचारु रूप से चल सकें और कोई दुर्घटना न हो।

2. रेल मेंटेनेंस व्हीकल (RMV):

रेल मेंटेनेंस व्हीकल (RMV) एक विशेष प्रकार का वाहन होता है, जो रेलवे ट्रैक और अन्य रेलवे संरचनाओं की मरम्मत और रख-रखाव के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह वाहन रेलवे के ऑपरेशन को सुरक्षित और निर्बाध बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रेल मेंटेनेंस व्हीकल (RMV) में कई तरह के उपकरण और मशीनें होती हैं, जैसे के वेल्डिंग मशीन, ट्रैक जोड़ने वाले उपकरण, IRPWM द्वारा निर्धारित मानकों के आधार पर सभी आवश्यक उपकरण और सहायक उपकरण जो चलते-चलते मरम्मत कार्य करने में मदद करती रेल मेंटेनेंस व्हीकल (RMV) का मुख्य लाभ यह है कि यह रेलवे ट्रैक पर चलते हुए विभिन्न आपातकालीन और नियमित निरीक्षण तथा मरम्मत कार्य करता है, जिससे ट्रेनों का संचालन बिना किसी रुकावट के जारी रहता

है। यह विशेष रूप से आपातकालीन परिस्थितियों में काम आता है जैसे ट्रैक में दरारें, भूस्खलन (land sliding), बोल्डर गिरने (boulder fall) और सुरंगों में किसी भी प्रकार की समस्या का तुरंत समाधान करता है। इसके अलावा, RMV बारिश के मौसम में तत्काल निरीक्षण, ट्रैक की नियमित निगरानी, और सुरंगों तथा अन्य संरचनाओं का निरीक्षण करता है। यह अधिकारियों द्वारा निरीक्षण कार्यों के लिए भी उपयोगी होता है, जिससे पूरे खंड और ट्रैक की स्थिति की समय पर समीक्षा की जा सकती है। इसके द्वारा नियमित ट्रैक रख-रखाव और मरम्मत कार्य भी किए जाते हैं, जिससे रेल नेटवर्क की सुरक्षा और सुचारू संचालन सुनिश्चित होता है। इस प्रकार, RMV रेलवे संचालन के लिए एक अत्यधिक प्रभावी और आवश्यक उपकरण है। इस प्रकार रेल मेंटेनेंस व्हीकल (RMV) का उपयोग रेल नेटवर्क की कार्यकुशलता को बढ़ाता है, समय की बचत करता है और यात्रियों की यात्रा को सुरक्षित और निर्बाध बनाए रखता है।

रेल मेंटेनेंस व्हीकल (RMV)

कोंकण रेलवे पर आर.एम.वी (रेल मेंटेनेंस व्हीकल) की संरचना:

3. कोंकण रेलवे पर आर.एम.वी (रेल मेंटेनेंस व्हीकल) उपलब्धता :

सिनियर सेक्शन इंजीनियर/रेलपथ (SSE/P.Way) के तहत प्रत्येक खंड में एक रेल मेंटेनेंस व्हीकल (RMV) उपलब्ध होती है, जो कि एक चालित अनुरक्षण गैंग (Mobile Maintenance Gang) के साथ कार्य करती है। यह प्रणाली ट्रैक निरीक्षण, मरम्मत और अन्य संरचनात्मक कार्यों को जल्दी और प्रभावी तरीके से निष्पादित करने के लिए डिज़ाइन की गई है। रेल मेंटेनेंस व्हीकल (RMV) को भारतीय रेल रेलपथ नियमावली (IRPWM) के अनुसार काम करने के लिए मान्यता प्राप्त है, जिससे यह सुनिश्चित किया जाता है कि सभी आवश्यक उपकरण और सामग्री हमेशा उपलब्ध रहें। कोंकण रेलवे नेटवर्क पर कुल 9 रेल मेंटेनेंस व्हीकल (RMV) तैनात हैं। ये रेल मेंटेनेंस व्हीकल (RMV) पूरे मार्ग पर ट्रैक और अन्य संरचनाओं का निरीक्षण और मरम्मत कार्य करती हैं। प्रत्येक रेल मेंटेनेंस व्हीकल (RMV) को एक सेक्शनल गैंग (जो विभिन्न रेलवे खंडों का देखभाल करती है) के तहत कार्य सौंपा जाता है, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी स्थानों पर त्वरित मरम्मत कार्य और निरंतर निगरानी की जा सके।

कोंकण रेलवे में निम्नलिखित स्टेशनों में आरएमवी (रेल मेंटेनेंस व्हीकल) उपलब्ध हैं-

वीर	**चिपलून**	**रत्नागिरी**
राजापूर	**कुडाल**	**वेरना**
कारवार	**भटखल**	**उडुपी**

4. कुशल और प्रशिक्षित रेलकर्मी:

प्रत्येक RMV (रेल मेंटेनेंस व्हीकल) में अनुभवी और योग्य रेलकर्मी तैनात होते हैं, जिनके पास ट्रैक निरीक्षण, मरम्मत और रख-रखाव के लिए विशेष प्रशिक्षण होता है। ये कर्मचारी ट्रैक में जोड़ बनाए रखने, मरम्मत, और सुरक्षा जांच से संबंधित कार्यों में निपुण होते हैं। इन्हें विभिन्न तकनीकी कार्यों जैसे कि ट्रैक निरीक्षण, वेल्डिंग, ट्रैक जोड़ने के उपकरणों के संचालन, तथा अन्य आवश्यक उपकरणों का उपयोग करने के लिए विशेष प्रशिक्षण प्राप्त होता है। इस प्रकार, ये कर्मचारी उच्च मानकों के अनुरूप रेलवे के ट्रैक की स्थिति और सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। TPP (Thermit Portion Plant) / Lucknow और TWC (Thermit Welding Center) / Vijayawada में कोंकण रेलवे के विभागीय कर्मचारी जैसे पर्यवेक्षक (JE /SSE, MSM/MCM) को SKV वेल्डिंग प्रशिक्षण के लिए रेलवे मानकों के अनुसार प्रशिक्षण दिया जाता है।

5. **चालित अनुरक्षण गैंग (Mobile Maintenance Gang) और आर.एम.वी (RMV) के पर्यवेक्षक:**

   हर एक आर.एम.वी (रेल मेंटेनेंस व्हीकल) पर एक जूनियर इंजीनियर (एमएमजी) की नियुक्ति की जाती है, जो आर.एम.वी के सभी कार्यों का संचालन और पर्यवेक्षण करता है। वह यह सुनिश्चित करता है कि सभी कार्य सही ढंग से, निर्धारित समय में और सुरक्षा मानकों के अनुसार किए जाएं। पर्यवेक्षक का कार्य केवल कार्यों की निगरानी तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह यह भी सुनिश्चित करता है कि सभी प्रक्रियाएँ भारतीय रेल रेलपथ नियमावली (IRPWM) के दिशानिर्देशों के अनुसार पूरी की जाएं। इसमें ट्रैक की मरम्मत, रखरखाव और अन्य तकनीकी कार्यों के लिए निर्धारित मानकों का पालन करना आवश्यक होता है। इस प्रकार, पर्यवेक्षक रेलवे के ट्रैक रखरखाव के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

6. **उपकरण और अन्य सहायक उपकरण:**

   चालित अनुरक्षण गैंग (Mobile Maintenance Gang) और आर.एम.वी (RMV) को भारतीय रेल रेलपथ नियमावली (IRPWM) द्वारा निर्धारित मानकों के आधार पर सभी आवश्यक उपकरणों और सहायक उपकरणों से सुसज्जित किया जाता है। इन उपकरणों का उपयोग कार्य निर्देशों और अधिकारियों के विभिन्न आदेशों तथा संचालन निर्देशों के अनुसार किया जाता है, ताकि सभी कार्य सुरक्षा मानकों के तहत और प्रभावी रूप से संपन्न किए जा सकें। उपकरणों के सही उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए उचित प्रशिक्षण और निरंतर निरीक्षण किया जाता है, ताकि भविष्य में किसी भी तकनीकी समस्या से बचा जा सके।

7. **आपातकालीन स्थितियों के लिए तैयारी :**

   RMV (रेल मेंटेनेंस व्हीकल) को आपातकालीन परिस्थितियों में त्वरित और आवश्यक सहायता देने के लिए हमेशा तैयार रखा जाता है। सभी आवश्यक उपकरण, संसाधन और समर्थन तत्काल उपलब्ध कराए जाते हैं। पी-वे पर्यवेक्षकों और कर्मचारियों को नियमित रूप से आपातकालीन प्रबंधन और त्वरित उपलब्धता के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, ताकि वे किसी भी आपात स्थिति में शीघ्र और प्रभावी रूप से कार्यवाही कर सकें। आपातकालीन योजनाओं का नियमित रूप से परीक्षण किया जाता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि किसी भी संकट की स्थिति में त्वरित, प्रभावी और सुरक्षित तरीके से कार्यवाही की जा सके I

कोंकण रेलवे पर आर.एम.वी (रेल अनुरक्षण वैन) द्वारा की जाने वाली गतिविधियाँ:

1. **कार्यस्थल पर वेल्डिंग के साथ रेल/वेल्ड टूट-फूट की मरम्मत :** ट्रैक पर किसी भी वेल्ड फ्रैक्चर या रेल में दरार होने पर इन-सीटू AT वेल्डिंग तकनीक का उपयोग करके उन्हें ठीक किया जाता है। इस प्रक्रिया में रेल की मरम्मत स्थल पर ही की जाती है, ताकि ट्रैक का संचालन बिना किसी रुकावट के जारी रहे।

2. **SEJs (स्विच एक्सपेंशन जॉइंट्स) की देखभाल:** SEJs की नियमित देखभाल और मरम्मत की जाती है। ये जॉइंट्स रेल के विस्तार और संकुचन के कारण होने वाली समस्याओं को नियंत्रित करते हैं। सही स्थिति में रखे जाने पर, वे ट्रैक के तनाव को संभालने में मदद करते हैं।

3. **स्विचेज़, क्रॉसिंग्स, ग्लीव्ड जोइंट्स, SEJs इत्यादि का बिखरे हुए स्थानों पर प्रतिस्थापन:** जब स्विचेज़, क्रॉसिंग्स, ग्लीव्ड जोइंट्स या SEJs बिखर जाते हैं या खराब हो जाते हैं, तो उन्हें बिखरे हुए स्थानों पर प्रतिस्थापित किया जाता है। यह कार्य आम तौर पर RMV द्वारा मौके पर ही किया जाता है।

4. **रेल काटना/ड्रिलिंग करना और चेम्फरिंग करना:** रेल काटना और ड्रिलिंग कार्यों में वेल्डिंग, ट्रैक जोड़ने और ट्रैक के अंतिम आकार में सुधार किया जाता है। इसके अलावा, चेम्फरिंग प्रक्रिया के द्वारा रेल के किनारों को सही आकार दिया जाता है। यह सभी कार्य ट्रैक की मजबूती और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए किए जाते हैं। रेल काटने और ड्रिलिंग का उद्देश्य ट्रैक को सुरक्षित और सटीक रूप से जोड़ना होता है, ताकि ट्रेन संचालन में कोई समस्या न हो। यह कार्य चालित अनुरक्षण गैंग (MMG)द्वारा किया जाता है, जो सुनिश्चित करते हैं कि ट्रैक सही स्थिति में रहे और ट्रेन का संचालन बिना किसी रुकावट के हो सके।

5. **रेलों एवं स्लीपरों के मौजूदा नवीकरण:** ट्रैक के विशेष स्थानों पर रेल और स्लीपर का नवीनीकरण किया जाता है। इसे स्पॉट नवीनीकरण कहा जाता है, जिसमें सिर्फ उन हिस्सों को बदला जाता है जहां समस्या आई हो, न कि पूरे ट्रैक को। यह प्रक्रिया समय और लागत दोनों की बचत करती है।

6. **ऑफ-ट्रैक टेम्पर्स या अन्य अनुमोदित उपकरणों से कुछ स्लीपर की टेम्पिंग (सही स्थिति में लाना):** जब

ट्रैक पर कुछ स्लीपर अपनी सही स्थिति से हिल जाते हैं या ढीले हो जाते हैं, तो ऑफ-ट्रैक टेम्पर्स या अन्य उपकरणों का उपयोग करके इन्हें सही स्थिति में लाया जाता है। हाइड्रोलिक टेम्पिंग मशीन जैसे उपकरणों का उपयोग स्लीपरों को दबाव डालकर उनके सही स्थान पर पुनः स्थापित करने के लिए किया जाता है। इसके बाद ट्रैक का निरीक्षण किया जाता है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि ट्रैक सुरक्षित और स्थिर है। यह प्रक्रिया ट्रेन संचालन को सुरक्षित और बिना रुकावट के बनाए रखने में मदद करती है।

7. **देख-रेख करने के लिए अपेक्षित सामग्री को उतारना और चढ़ाना:** स्पॉट अटेंशन कार्य में गैंग का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह गैंग वेल्डिंग सामग्री, टेम्पिंग उपकरण, रेल जोड़ने के उपकरण आदि को लोड और अनलोड करती है, जो ट्रैक मरम्मत कार्य के लिए आवश्यक होते हैं। गैंग सदस्य ट्रैक पर समय पर मरम्मत कार्य करते हैं, जैसे पटरियों को जोड़ना, उन्हें सही स्थिति में रखना, और संरचनात्मक समस्याओं को सुधारना। उनके द्वारा की गई त्वरित और प्रभावी कार्रवाई से रेलवे नेटवर्क की कार्यक्षमता बनी रहती है और ट्रेनों का संचालन बिना रुकावट के चलता है।

8. **(रेल मेंटेनेंस व्हीकल) (RMV) का संचालन:** रेल मेंटेनेंस व्हीकल (RMV) का संचालन हमारे प्रशिक्षित और सक्षम स्टाफ द्वारा किया जाता है। ये कर्मचारी ट्रैक निरीक्षण और मरम्मत के लिए पूरी तरह से प्रशिक्षित होते हैं। उनका कार्य सुनिश्चित करता है कि रेलवे नेटवर्क सुचारू और सुरक्षित रहे। RMV के संचालन से किसी भी समस्या का जल्दी समाधान किया जाता है, जिससे ट्रेन संचालन में कोई रुकावट नहीं आती।

9. **आपातकालीन स्थितियों में कार्य:** चालित अनुरक्षण गैंग (Mobile Maintenance Gang) RMV के साथ आपातकालीन स्थितियों और नियमित ट्रैक रख-रखाव के लिए महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। RMV का उपयोग ट्रैक की निगरानी और मरम्मत के लिए किया जाता है, जो ट्रैक की स्थिति का निरीक्षण करता है और किसी भी तकनीकी समस्या का त्वरित समाधान करता है। वहीं, चालित अनुरक्षण गैंग ट्रैक पर मरम्मत कार्यों को करता है, जैसे पटरियों की मरम्मत, पेड़ गिरने, बोल्डर गिरना, लैंड स्लाइडिंग जैसे कार्य।गैंग आपातकालीन परिस्थितियों में शीघ्र कार्रवाई करते हैं और ट्रैक की स्थिति को सुरक्षित बनाए रखते हैं, जिससे ट्रेन संचालन बिना किसी रुकावट के सुचारू रूप से चलता रहे। इनके द्वारा की गई त्वरित और प्रभावी कार्रवाई से यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित होती है और रेलवे नेटवर्क की कार्यक्षमता बनी रहती हैI

10. **सौंपा गया अन्य कार्य:** इसके अलावा, अन्य सौंपे गए कार्य को भी समय पर पूरे किए जाते हैं। इसमें छोटे सुधार, मरम्मत कार्य या विशेष परिस्थितियों में की जाने वाली कार्यवाहियाँ शामिल हो सकती हैं। अधिकारी और इंजीनियर इन-चार्ज के दिशा-निर्देशों के अनुसार, स्टाफ़ को कार्य सौंपे जाते हैं और उन्हें सही तरीके से निष्पादित करने में सहायता प्रदान की जाती है। अधिकारी और इंजीनियर इन-चार्ज का मार्गदर्शन और समर्थन सुनिश्चित करता है कि सभी कार्य समय पर और सही तरीके से पूरे हों।

क्रॉसिंग्स, ग्लूड जोइंट्स का स्थानों पर प्रतिस्थापन

SEJs (स्विच एक्सपेंशन जॉइंट्स) की देखभाल

कोंकण रेलवे पर RMV (रेल मेंटेनेंस व्हीकल) और चालित अनुरक्षण गैंग (MMG) का सहयोग रेल नेटवर्क की सुरक्षा,

कार्यकुशलता और निरंतरता सुनिश्चित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन दोनों प्रणालियों का संयोजन रेलवे ट्रैक और अवसंरचनाओं की त्वरित निगरानी, मरम्मत और रखरखाव में सहायक है। आर.एम.वी द्वारा किए जाने वाले कार्य, जैसे ट्रैक की निरीक्षण, वेल्डिंग, स्विच और क्रॉसिंग की मरम्मत, और आपातकालीन स्थितियों में त्वरित प्रतिक्रिया, रेल संचालन को बिना किसी रुकावट के बनाए रखते हैं।

चालित अनुरक्षण गैंग (MMG) के पास प्रशिक्षित और अनुभवी कर्मचारी होते हैं, जो ट्रैक की गुणवत्ता और सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए सभी आवश्यक उपकरणों का उपयोग करते हैं। भारतीय रेल के निर्धारित मानकों के अनुसार, ये

गैंग न केवल नियमित मरम्मत कार्य करते हैं, बल्कि आपातकालीन परिस्थितियों में भी त्वरित और प्रभावी कार्यवाही करते हैं।इस प्रकार, MMG और RMV की संयुक्त भूमिका कोंकण रेलवे की दक्षता, सुरक्षा और समय पर मरम्मत सुनिश्चित करने में अहम है। इनकी सक्रियता और प्रभावशीलता के कारण ही कोंकण रेलवे की ट्रेनों का संचालन सुचारु और सुरक्षित रहता है, जिससे यात्रियों और माल परिवहन के लिए एक भरोसेमंद परिवहन व्यवस्था कायम रहती है।

सिल्क्यारा टनल रेस्क्यू ऑपरेशन: एक अद्वितीय आपदा प्रबंधन उदाहरण

- बी. एस. नाडगे
उप मुख्य अभियंता
विशेष कार्य एवं भू-प्रौद्योगिकी, मडगांव

प्रस्तावना:

12 नवंबर 2023 को उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में निर्माणाधीन सिल्क्यारा-बर्कोट सुरंग का एक हिस्सा ध्वस्त हो गया। इसके चलते 41 निर्माण श्रमिक लगभग 260 मीटर अंदर फंस गए। यह स्थिति भारत के सामने एक अत्यंत जटिल तकनीकी और मानवीय आपदा बनकर उभरी। इस संकट ने देश को न केवल एकजुट किया बल्कि भारत के आपदा प्रबंधन ढांचे की क्षमता का भी परीक्षण किया।

तकनीकी चुनौतियाँ:

1. **भौगर्भिक परिस्थितियाँ (Geological Constraints):**
   - सुरंग क्षेत्र शैलखंड, बजरी और ढीली मिट्टी से युक्त था।
   - लगातार भूस्खलन और मलबा गिरने का खतरा बना हुआ था।
2. **सीमित पहुँच और ऑक्सीजन आपूर्ति:**
   - सुरंग के एकमात्र प्रवेश मार्ग पर मलबा जमा हो गया था।
   - अंदर ऑक्सीजन की आपूर्ति बनाए रखना चुनौतीपूर्ण था।

तकनीकी समाधान और अपनाई गई विधियाँ:

1. **ऑगर बोरिंग और पाइप जैकिंग तकनीक (Auger Boring & Pipe Jacking):**
   - ऑगर बोरिंग मशीन द्वारा क्षैतिज ड्रिलिंग कर 900 मिमी व्यास की स्टील पाइप सुरंग के भीतर डाली गई।
   - पाइप के माध्यम से ऑक्सीजन, भोजन, दवाइयाँ और कैमरा भेजा गया।
2. **रैट बोरिंग (Rat Boring) – निर्णायक कदम:**
   - जब मशीनें मलबे में फंस गईं, तब झारखंड से रैट माइनिंग विशेषज्ञों को बुलाया गया।
   - उन्होंने मैनुअल तरीके से अंतिम 10-12 मीटर खुदाई की।
   - अत्यधिक संकरे स्थान में कार्य कर इन विशेषज्ञों ने पाइपलाइन को पूरा किया, जिससे बचावकर्मी मजदूरों तक पहुँच सके।
3. **एंडोस्कोपिक कैमरे और संचार तंत्र:**
   - फाइबर ऑप्टिक कैमरे और दो-तरफा संचार प्रणाली से मजदूरों की स्थिति की निगरानी की गई।
4. **बहु-एजेंसी सहयोग (Multi-Agency Coordination):**
   - NDRF, SDRF, BRO, कोल इंडिया, NHIDCL, सेना, रेलवे और राज्य प्रशासन ने मिलकर कार्य किया।

प्रमुख विशेषज्ञों की भूमिका:

1. **प्रो. अर्नोल्ड डिक्स (Prof. Arnold Dix):**
   - अंतरराष्ट्रीय टनलिंग एसोसिएशन (ITA) के अध्यक्ष।
   - उन्होंने तकनीकी रणनीतियों, सुरंग मार्गों की सुरक्षा और ड्रिलिंग एंगल की समीक्षा की।
   - भारतीय एजेंसियों के साथ समन्वय कर योजना तैयार की।
2. **ए. एस. राठौर (भारतीय टनल विशेषज्ञ):**
   - सुरंग की संरचना व भौगर्भिक व्यवहार को समझते हुए स्थानीय स्तर पर मार्गदर्शन प्रदान किया।

प्रबंधन और राहत उपाय:

1. **त्वरित निर्णय:**
   - वैकल्पिक योजनाएँ (Plan B, C) पूर्व निर्धारित की गईं।
2. **मानसिक स्वास्थ्य:**
   - फंसे मजदूरों से लगातार संवाद, प्रेरणादायक संदेश और ध्यान की सलाह दी गई।

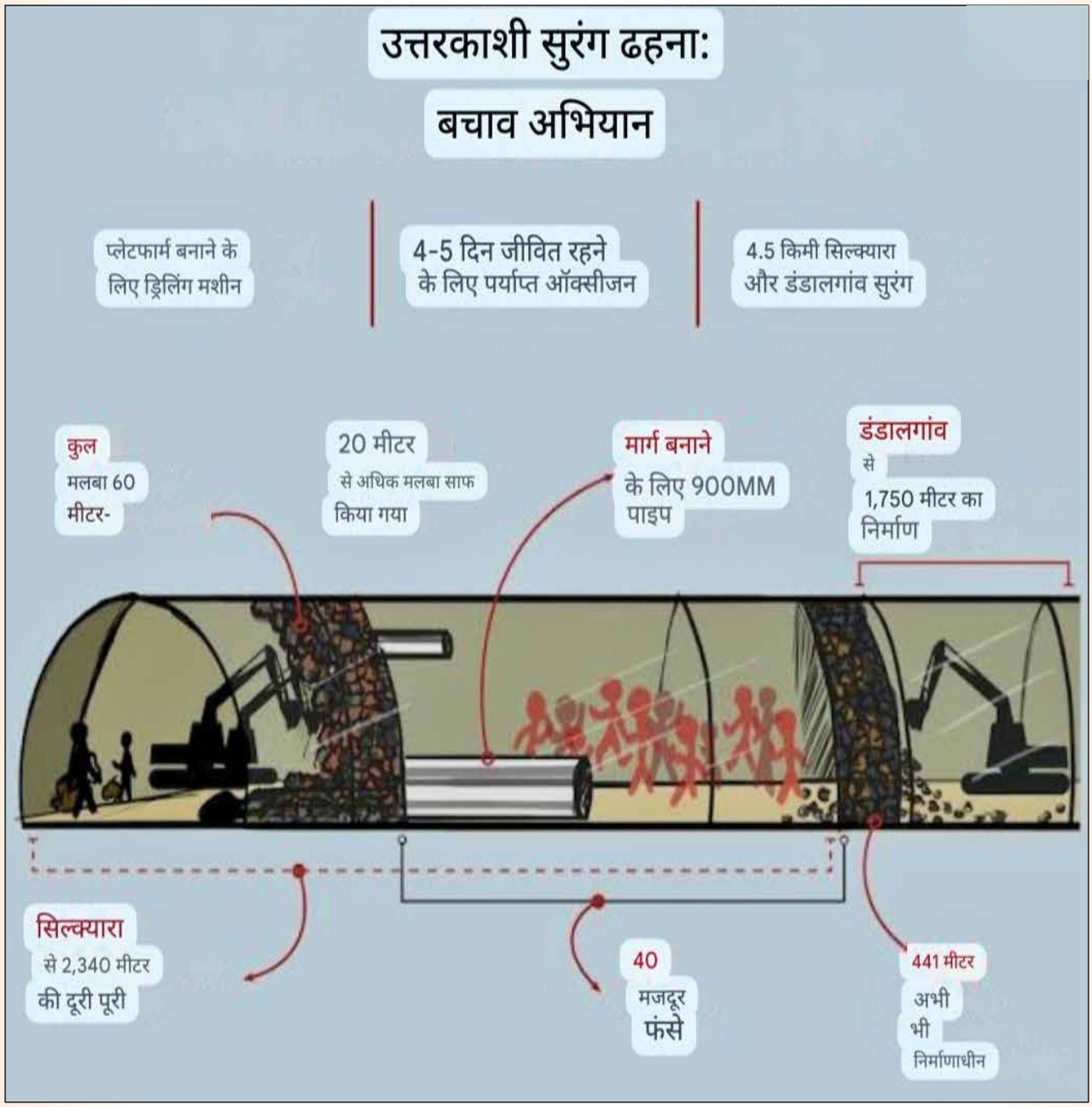

3. जीवन रक्षक सामग्री:

- पाइपलाइन के जरिए खाना, गर्म कपड़े, दवाइयाँ और ऑक्सीजन भेजी गई।

4. निरंतर निगरानी:

- 24x7 नियंत्रण कक्ष से तकनीकी व प्रशासनिक निगरानी की गई।

भारत के लिए सीख (Lessons for India):

- टनलिंग सुरक्षा मानकों को और सख्त करना।
- रेस्क्यू टूल्स और तकनीक का स्वदेशी विकास (Make in India)।
- रैट बोरिंग जैसे पारंपरिक कौशल को संस्थागत पहचान देना।
- बहु-एजेंसी आपदा प्रतिक्रिया प्रोटोकॉल को मजबूत करना।
- टनल परियोजनाओं में आपात निकास और वेंटिलेशन प्रणाली अनिवार्य करना।

निष्कर्ष:

सिल्क्यारा टनल रेस्क्यू ऑपरेशन भारतीय आपदा प्रबंधन के इतिहास में तकनीकी दक्षता, मानवीय साहस और अंतरराष्ट्रीय सहयोग का एक बेहतरीन उदाहरण बन गया है। इसने यह सिद्ध कर दिया कि उचित रणनीति, तकनीक और समर्पण से किसी भी आपदा पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

6G नेटवर्क: डिजिटल दुनिया का नया आयाम

- विजय मेस्त्री
वरिष्ठ से.इं., सिगनल विभाग

6G तकनीक हमारे डिजिटल भविष्य की अगली बड़ी छलांग मानी जा रही है, जो सिर्फ तेज़ इंटरनेट नहीं बल्कि एक पूरी तरह स्मार्ट और आपस में जुड़ी दुनिया का वादा करती है। जहां 5G ने हाई-स्पीड कनेक्टिविटी और IoT को बढ़ावा दिया, वहीं 6G माइक्रोसेकंड स्तर की बेहद कम विलंबता और टेराबाइट प्रति सेकंड तक की संभावित गति के साथ संचार को लगभग तुरंत महसूस होने जैसा बना देगी। इसमें आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस नेटवर्क के भीतर ही समाहित होगा, जिससे सिस्टम स्वयं सीखने, समस्याएं पहचानने और उन्हें ठीक करने में सक्षम होंगे। आने वाले समय में मशीन-से-मशीन संचार, इमर्सिव XR अनुभव, डिजिटल ट्विन और 3D होलोग्राम जैसी तकनीकें सामान्य हो सकती हैं और विशेषज्ञों के अनुसार 2030 तक 6G हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी, उद्योग और समाज में बड़े बदलाव की शुरुआत कर सकती है।

6G सेवाएं

5G सेवाएं, यानी उन्नत मोबाइल ब्रॉडबैंड (Enhanced Mobile Broadband – eMBB), अति-विश्वसनीय और कम विलंबता संचार (Ultra-Reliable and Low-Latency Communications – URLLC) तथा बड़े पैमाने पर मशीन-प्रकार संचार (Massive Machine-Type Communications – mMTC), 6G की ओर बढ़ते हुए और बेहतर होती जाएंगी।

नई 6G सेवाएं संचार के साथ-साथ सेंसिंग, इमेजिंग, डिस्प्लेइंग और AI जैसी तकनीकों में प्रगति के कारण उभरेंगी। इन नई सेवाओं को हाइपर-कनेक्टिविटी के माध्यम से प्रस्तुत किया जाएगा, जिसमें मनुष्य और सभी वस्तुएं शामिल होंगी और बेहतरीन मल्टीमीडिया अनुभव प्रदान किया जाएगा।

6G सेवाएं वास्तव में इमर्सिव विस्तारित वास्तविकता (XR), उच्च-निष्ठा मोबाइल होलोग्राम और डिजिटल प्रतिकृति जैसी होंगी।

अत्यंत प्रभावशाली एक्स.आर. (Truly Immersive XR)

XR एक नया शब्द है, जो VR, AR और मिश्रित वास्तविकता (MR) को जोड़ता है। इसने मनोरंजन, चिकित्सा, विज्ञान, शिक्षा और विनिर्माण उद्योगों सहित विभिन्न क्षेत्रों में नए क्षितिज खोले हैं। XR की संभावना और वास्तविकता के बीच सबसे बड़ी बाधा हार्डवेयर है।

एक और चुनौती पर्याप्त वायरलेस क्षमता है। वर्तमान AR तकनीक को 8K डिस्प्ले (एक मिलियन पॉइंट के साथ) का समर्थन करने के लिए 55.3 मेगाबिट प्रति सेकंड (Mbps) की आवश्यकता होती है। हालांकि, वास्तव में इमर्सिव AR के लिए घनत्व में काफी सुधार आवश्यक है, जिसके लिए 0.44 गीगाबिट प्रति सेकंड (Gbps) थ्रूपुट (16 मिलियन पॉइंट के साथ) चाहिए। इसके अलावा XR मीडिया स्ट्रीमिंग में 16K UHD गुणवत्ता वाले वीडियो के समान मांग हो सकती है। उदाहरण के लिए, 16K VR के लिए 0.9 Gbps थ्रूपुट (1/400 के संपीड़न अनुपात के साथ) की आवश्यकता होती है। वर्तमान 5G डेटा दर निर्बाध स्ट्रीमिंग के लिए पर्याप्त नहीं है।

उच्च-विश्वसनीयता मोबाइल होलोग्राम (High-Fidelity Mobile Hologram)

मोबाइल डिवाइस 3D होलोग्राम डिस्प्ले के लिए मीडिया रेंडर करने में सक्षम होंगे। होलोग्राम एक अगली पीढ़ी की मीडिया तकनीक है, जो होलोग्राफिक डिस्प्ले के माध्यम से हाव-भाव और चेहरे के भाव प्रस्तुत कर सकती है। सामग्री वास्तविक-समय कैप्चर, ट्रांसमिशन और 3D रेंडरिंग तकनीकों के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। वास्तविक-समय सेवाओं के एक भाग के रूप में होलोग्राम प्रदर्शन के लिए अत्यंत उच्च डेटा दर संचरण की आवश्यकता होगी, जो वर्तमान 5G प्रणाली की तुलना में सैकड़ों गुना अधिक है।

5G की अधिकतम डेटा दर 20 Gbps है। यह वास्तविक-समय में होलोग्राम मीडिया के लिए आवश्यक इतनी बड़ी मात्रा का समर्थन नहीं कर सकता। 6G युग में इसे साकार करने के लिए होलोग्राम डेटा के कुशल संपीड़न, निष्कर्षण और रेंडरिंग हेतु AI का उपयोग किया जा सकता है।

डिजिटल प्रतिकृति (Digital Replica)

किसी भौतिक इकाई की डिजिटल प्रतिकृति को डिजिटल ट्विन कहा जाता है। 6G वातावरण में डिजिटल ट्विन के माध्यम से उपयोगकर्ता बिना किसी अस्थायी या स्थानिक बाधाओं के आभासी दुनिया में वास्तविकता का पता लगाने और निगरानी करने में सक्षम होंगे। उपयोगकर्ता डिजिटल ट्विन द्वारा प्रस्तुत प्रतिनिधित्व के माध्यम से दूर से परिवर्तनों का निरीक्षण करने या समस्याओं का पता लगाने में सक्षम होंगी।

AI की मदद से डिजिटल प्रतिकृति द्वारा वास्तविक दुनिया का प्रबंधन, समस्या का पता लगाना और उसका निवारण बिना किसी इंसानी मौजूदगी या विस्तृत निगरानी के भी कुशलतापूर्वक किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, मोबाइल डिवाइस पर 3D होलोग्राम डिस्प्ले के लिए 19.1 गीगापिक्सल डेटा हेतु 1 टेराबिट प्रति सेकंड (Tbps) की आवश्यकता होती है।

क्रमशः

इंटरनेट के दुष्परिणाम और साइबर सुरक्षा

- संतोष पाटोळे
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
रत्नागिरी

इंटरनेट के दुष्परिणाम: इंटरनेट पर साझा की गई हर जानकारी हमारे बारे में एक डिजिटल निशान छोड़ जाती है, जिसे "डिजिटल फूटप्रिंट" कहा जाता है। यह फूटप्रिंट जितना बड़ा होता जाता है, उतनी ही हमारी निजी सुरक्षा घटती जाती है। हम जब किसी पोस्ट में अपनी जन्मतिथि, स्थान, या स्कूल का नाम बताते हैं, तो हम अनजाने में अपनी पहचान और जीवनशैली की झलक दुनिया के सामने रख देते हैं। यह जानकारी साइबर अपराधियों के लिए किसी खज़ाने से कम नहीं होती, वे इन्हीं सूचनाओं का इस्तेमाल करके पहचान की चोरी (Identity Theft), धोखाधड़ी, या ऑनलाइन ब्लैकमेल जैसे अपराध करते हैं।

कई लोग यह मानते हैं कि उनकी जानकारी केवल "दोस्तों" तक सीमित रहती है, पर सच यह है कि एक बार कुछ इंटरनेट पर डाल दिया गया, तो वह हमेशा के लिए सार्वजनिक हो जाता है। कोई स्क्रीनशॉट, कोई सर्वर या डेटा बैकअप उसे कहीं न कहीं सहेज लेता है। इसीलिए विशेषज्ञ कहते हैं कि इंटरनेट "भूलता नहीं"। अत्यधिक जानकारी साझा करने का सबसे बड़ा नुकसान है, गोपनीयता की हानि। कभी-कभी हम अपनी यात्रा की जानकारी, परिवार के सदस्यों के नाम या घर की तस्वीरें साझा कर देते हैं। ऐसा करते समय हमें यह नहीं पता होता कि इन जानकारियों का दुरुपयोग कोई व्यक्ति या संगठन कैसे कर सकता है। कोई अपराधी यह जान सकता है कि आप कब घर पर नहीं हैं, कोई आपकी तस्वीरों का गलत इस्तेमाल कर सकता है, या कोई आपके बच्चों के बारे में जानकारी जुटा सकता है।

अत्यधिक साझा की गई जानकारी का एक और पहलू है डेटा का व्यावसायिक उपयोग। आज अधिकांश वेबसाइटें और ऐप हमारी गतिविधियों पर नज़र रखती हैं। हम जो सर्च करते हैं, जो पसंद करते हैं, जिन चीज़ों पर क्लिक करते हैं, ये सब मिलकर एक डेटा प्रोफ़ाइल बनाते हैं। इस प्रोफ़ाइल का उपयोग कंपनियां हमें लक्षित विज्ञापन दिखाने या हमारी पसंद को प्रभावित करने के लिए करती हैं। इस तरह हमारी व्यक्तिगत जानकारी धीरे-धीरे एक "डिजिटल उत्पाद" बन जाती है, जिसका मालिकाना हक़ हमारे पास नहीं रहता। इंटरनेट पर अधिक जानकारी साझा करना केवल निजी जीवन की ही नहीं, बल्कि पेशेवर जीवन को भी प्रभावित कर सकता है। आज अधिकांश कंपनियां किसी उम्मीदवार को नौकरी देने से पहले उसके सोशल मीडिया अकाउंट्स की जांच करती हैं। यदि किसी व्यक्ति की कोई पुरानी अनुचित पोस्ट, विवादास्पद टिप्पणी या तस्वीर सामने आ जाए, तो उसका करियर प्रभावित हो सकता है। कई उदाहरण ऐसे हैं जहां वर्षों पुराने ट्वीट या पोस्ट के कारण लोगों को अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा है। इसके अलावा, सोशल मीडिया पर लगातार पोस्ट करने की प्रवृत्ति से मानसिक स्वास्थ्य पर भी असर पड़ता है। लोग अपनी ज़िंदगी की दूसरों से तुलना करने लगते हैं। उन्हें यह लगता है कि दूसरों की ज़िंदगी अधिक सुखी या सफल है। धीरे-धीरे व्यक्ति अपने वास्तविक जीवन से असंतुष्ट होने लगता है और लाइक्स व कमेंट्स से मिलने वाली अस्थायी खुशी पर निर्भर हो जाती है। यह स्थिति आत्म-सम्मान और मानसिक संतुलन के लिए हानिकारक है।

सबसे खतरनाक बात यह है कि लोग यह मान लेते हैं कि उनकी जानकारी सुरक्षित है, क्योंकि उन्होंने प्राइवेसी सेटिंग्स लगा रखी हैं। लेकिन वास्तविकता यह है कि किसी भी प्लेटफ़ॉर्म की सुरक्षा पूर्ण नहीं होती। अकाउंट हैक हो सकता है, डेटा लीक हो सकता है या प्लेटफ़ॉर्म की नीतियां बदल सकती हैं। ऐसे में आपकी निजी जानकारी किसी भी समय सार्वजनिक हो सकती है। इसलिए ज़रूरी है कि हम इंटरनेट पर साझा करने से पहले सोचें। क्या यह जानकारी सच में ज़रूरी है? क्या यह किसी अजनबी को दिखाना सुरक्षित है? क्या यह भविष्य में आपकी प्रतिष्ठा या सुरक्षा प्रभावित कर सकती है? यदि इन प्रश्नों में से किसी का उत्तर "हां" है, तो ही यह जानकारी साझा की जाए। इंटरनेट एक शक्तिशाली साधन है, यह ज्ञान, संवाद और अभिव्यक्ति का माध्यम है, लेकिन इसका विवेकपूर्ण उपयोग ही हमें सुरक्षित रख सकता है। सावधानी, संयम और

समझदारी से ही डिजिटल दुनिया में सम्मान और सुरक्षा दोनों संभव हैं।

साइबर सुरक्षा: पहले के समय में साइबर अपराध अपेक्षाकृत सरल हुआ करते थे, जैसे ई-मेल हैकिंग या वायरस के माध्यम से नुकसान पहुंचाना। परंतु अब यह एक संगठित उद्योग का रूप ले चुका है। रैनसमवेयर हमलों में अपराधी सिस्टम को लॉक कर देते हैं और डेटा खोलने के बदले फिरौती मांगते हैं। डेटा ब्रीच के ज़रिए कंपनियों से ग्राहक की जानकारी, पासवर्ड और बैंकिंग डेटा चोरी किया जाता है। सोशल इंजीनियरिंग, यानी लोगों को मनोवैज्ञानिक रूप से छलकर जानकारी निकलवाने की तकनीक, अब सबसे सामान्य हमला बन चुकी है। आज साइबर अपराधी केवल कंप्यूटर सिस्टम नहीं, बल्कि मानव व्यवहार को निशाना बनाते हैं।

साल 2025 में साइबर खतरे पहले से कहीं अधिक परिष्कृत हो चुके हैं। अपराधी अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) की मदद से ऐसे ई-मेल और संदेश तैयार करते हैं जो बिल्कुल वास्तविक लगते हैं। डीपफेक तकनीक के ज़रिए किसी व्यक्ति की आवाज़ या चेहरा कॉपी करके झूठे वीडियो बनाए जाते हैं। इससे फेक न्यूज़, धोखाधड़ी और राजनीतिक भ्रम जैसी घटनाओं में तेज़ी आई हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता इस समय साइबर सुरक्षा की सबसे बड़ी ढाल और सबसे बड़ा खतरा दोनों बन चुकी है। रक्षक पक्ष AI का उपयोग करके खतरे की पहचान और प्रतिक्रिया को तेज़ बना रहे हैं, जबकि हमलावर भी इसी तकनीक से अपने हमलों को और सटीक बना रहे हैं।

आज साइबर सुरक्षा केवल संगठन के अंदरूनी नेटवर्क तक सीमित नहीं है। हर कंपनी किसी न किसी थर्ड पार्टी सॉफ़्टवेयर, क्लाउड सेवा या सप्लाई चेन पार्टनर पर निर्भर है। हमलावर अक्सर मुख्य संगठन पर नहीं, बल्कि उसके सप्लाई चेन पार्टनर पर हमला करते हैं। भारत में भी DRDO और IIT जैसे संस्थान इस क्षेत्र में सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं, ताकि भविष्य में डेटा सुरक्षा को नए सिरे से मजबूत किया जा सके। भविष्य में साइबर सुरक्षा केवल "सुरक्षा" तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि "लचीलापन" यानि रिसिलिएंस की दिशा में विकसित होगी। अब यह मान लिया गया है कि हर हमले को रोका नहीं जा सकता, लेकिन उसके प्रभाव को कम किया जा सकता है। इसके लिए सरकारों, निजी कंपनियों और नागरिकों के बीच सहयोग आवश्यक है। साइबर सुरक्षा अब केवल आईटी विभाग की जिम्मेदारी नहीं रही; यह राष्ट्रीय सुरक्षा, नीति और शासन का केंद्र बन चुकी है।

साइबर सुरक्षा कोई एक बार का उपाय नहीं, बल्कि एक निरंतर प्रक्रिया है। जो देश और संगठन इस सच्चाई को समझकर सजग, लचीले और तैयार रहेंगे, वही भविष्य की डिजिटल अर्थव्यवस्था में नेतृत्व करेंगे। साइबर सुरक्षा केवल फायरवॉल और एंटीवायरस की कहानी नहीं है; यह मानव बुद्धि, तकनीकी नवाचार और सामूहिक जिम्मेदारी की गाथा है।

AI के युग में मानव की भूमिका

- सानिका वाघे
राजभाषा विभाग

प्रस्तावना

वर्तमान समय को यदि तकनीकी युग कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। विज्ञान और तकनीक की निरंतर प्रगति ने मानव जीवन को जिस प्रकार प्रभावित किया है, वह अभूतपूर्व है। इसी प्रगति का एक अत्यंत महत्वपूर्ण परिणाम है - कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जिसे हम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस या AI के नाम से जानते हैं। AI वह तकनीक है जिसके माध्यम से मशीनों को इस प्रकार विकसित किया जाता है कि वे मानव की तरह सोचने, समझने, विश्लेषण करने और निर्णय लेने की क्षमता प्राप्त कर सकें। यह केवल एक तकनीकी साधन नहीं, बल्कि आधुनिक सभ्यता के विकास का एक नया अध्याय है। आज AI का उपयोग चिकित्सा, शिक्षा, उद्योग, प्रशासन, बैंकिंग, संचार, रक्षा और मनोरंजन जैसे लगभग हर क्षेत्र में हो रहा है। यह तकनीक डेटा के विश्लेषण, जटिल समस्याओं के समाधान और त्वरित निर्णय प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

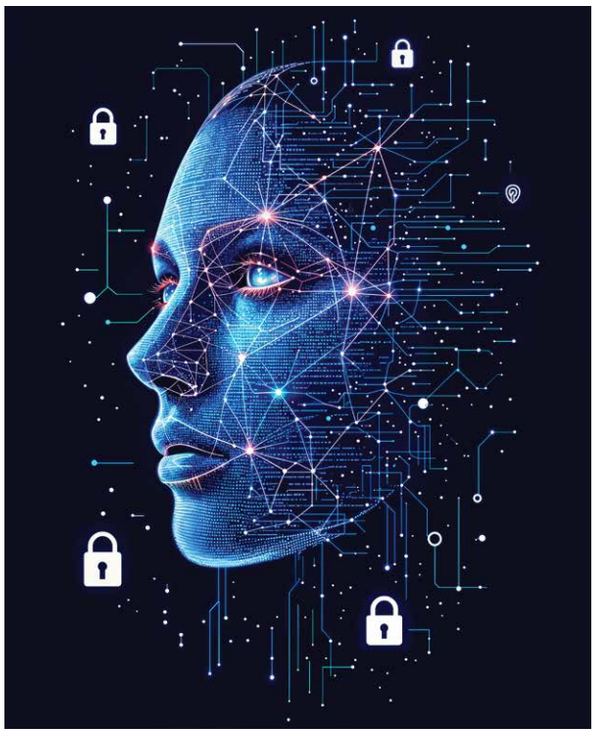

राजभाषा के क्षेत्र में एआई (AI) की भूमिका

भारत जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में AI ने भाषाई विकास को भी नई दिशा दी है। विशेष रूप से राजभाषा हिंदी के संदर्भ में इसका योगदान उल्लेखनीय है। डिजिटल युग में हिंदी को सशक्त बनाने के लिए अनुवाद सॉफ्टवेयर, वॉइस रिकग्निशन प्रणाली, भाषण से पाठ और पाठ से भाषण जैसी सुविधाएँ विकसित की गई हैं। सरकारी कार्यालयों में हिंदी में कार्य करने को सरल और प्रभावी बनाने में AI आधारित उपकरण सहायक सिद्ध हो रहे हैं। इससे प्रशासनिक कार्यों की गति बढ़ी है और आम जनता के लिए संवाद अधिक सुलभ हुआ है। AI ने हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं को वैश्विक मंच पर पहचान दिलाने में भी योगदान दिया है। आज डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी सामग्री की उपलब्धता और उसकी गुणवत्ता में निरंतर वृद्धि हो रही है, जो AI की सहायता से संभव हुई है।

एआई (AI) के कारण रोजगार छिनने की आशंका

हालांकि AI के तीव्र विकास ने समाज में एक नई चिंता को जन्म दिया है। अनेक लोग यह सोचने लगे हैं कि मशीनें उनके रोजगार के अवसरों को समाप्त कर देंगी। उद्योगों में स्वचालन, बैंकों में डिजिटल लेन-देन, और कार्यालयों में कंप्यूटर आधारित प्रणालियों के बढ़ते उपयोग ने यह आशंका पैदा की है कि भविष्य में मानव श्रम की आवश्यकता कम हो जाएगी। यह भय स्वाभाविक है, क्योंकि जब कोई नई तकनीक आती है तो वह पुराने तरीकों को बदल देती है। किंतु यह समझना आवश्यक है कि AI पूर्णतः स्वतंत्र नहीं है। वह केवल वही कार्य कर सकता है, जिसके लिए उसे प्रशिक्षित किया गया हो। उसकी कार्यप्रणाली आंकड़ों और प्रोग्रामिंग पर आधारित होती है। उसमें स्वयं की चेतना, भावनाएँ या नैतिक निर्णय लेने की क्षमता नहीं होती। इसलिए यह कहना उचित नहीं कि AI मानव का स्थान ले सकता है।

एआई (AI) मानव का कार्य नहीं छीन सकता

मानव की सबसे बड़ी शक्ति उसकी संवेदनशीलता, रचनात्मकता और विवेकशीलता है। एक मशीन डेटा का विश्लेषण कर सकती है, परंतु वह मानवीय भावनाओं को उसी गहराई से अनुभव नहीं कर सकती। एक शिक्षक केवल पाठ्य सामग्री नहीं पढ़ाता, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का निर्माण करता है। एक चिकित्सक केवल दवा नहीं देता, बल्कि रोगी को मानसिक संबल भी प्रदान करता है। एक लेखक अपने अनुभवों और भावनाओं को शब्दों में ढालता है, जो पाठकों के हृदय को स्पर्श करते हैं। ये सभी गुण केवल मानव में ही पाए जाते हैं। AI इन क्षेत्रों में सहायक हो सकता है, परंतु वह मानव की भूमिका का पूर्ण विकल्प नहीं बन सकता।

तकनीक से मानव जीवन में आई सरलताएं

तकनीकी प्रगति के कारण मानव जीवन में अनेक सुविधाएं आई हैं। आज ऑनलाइन बैंकिंग, डिजिटल भुगतान, स्मार्टफोन, टेलीमेडिसिन और ई-गवर्नेंस जैसी सेवाएं हमारे दैनिक जीवन को सरल बना रही हैं। समय और श्रम की बचत के साथ-साथ कार्यों की पारदर्शिता और दक्षता भी बढ़ी है। कृषि क्षेत्र में आधुनिक तकनीकों के उपयोग से उत्पादन में वृद्धि हुई है। चिकित्सा क्षेत्र में AI आधारित उपकरणों से रोगों की शीघ्र पहचान संभव हुई है। संचार के साधनों ने विश्व को एक छोटे से गांव में परिवर्तित कर दिया है। इन सभी परिवर्तनों ने मानव जीवन को अधिक व्यवस्थित और गतिशील बनाया है।

शिक्षा में एआई (AI) का महत्व

शिक्षा के क्षेत्र में AI का महत्व विशेष रूप से उल्लेखनीय है। आज विद्यार्थी अपनी सुविधा और रुचि के अनुसार अध्ययन कर सकते हैं। ऑनलाइन पाठ्यक्रम, वर्चुअल कक्षाएं और डिजिटल पुस्तकालयों ने शिक्षा को अधिक सुलभ बना दिया है। AI आधारित प्रणाली विद्यार्थियों की कमजोरियों को पहचानकर उन्हें उपयुक्त मार्गदर्शन प्रदान करती है। इससे शिक्षा अधिक व्यक्तिगत और प्रभावी बनी है। दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले छात्रों को भी अब गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिल रहा है। शिक्षा में तकनीक का यह समावेश ज्ञान के लोकतंत्रीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

पत्रकारिता, साहित्य, कला और समाज कार्य में मानव की भूमिका

पत्रकारिता, साहित्य, कला और समाज कार्य जैसे क्षेत्रों में भी AI का प्रवेश हुआ है, किंतु यहां मानव की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण बनी हुई है। पत्रकारिता केवल समाचारों का संकलन नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वाह है। साहित्य और कला मानवीय अनुभवों और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति हैं। समाज कार्य में सहानुभूति, सेवा भावना और नैतिक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। AI डेटा का विश्लेषण कर सकता है या प्रारंभिक मसौदा तैयार कर सकता है, किंतु किसी सामाजिक समस्या की गहराई को समझने और उसके समाधान के लिए मानवीय दृष्टिकोण आवश्यक है। इन क्षेत्रों में मानव की सृजनात्मकता और नैतिकता का कोई विकल्प नहीं है।

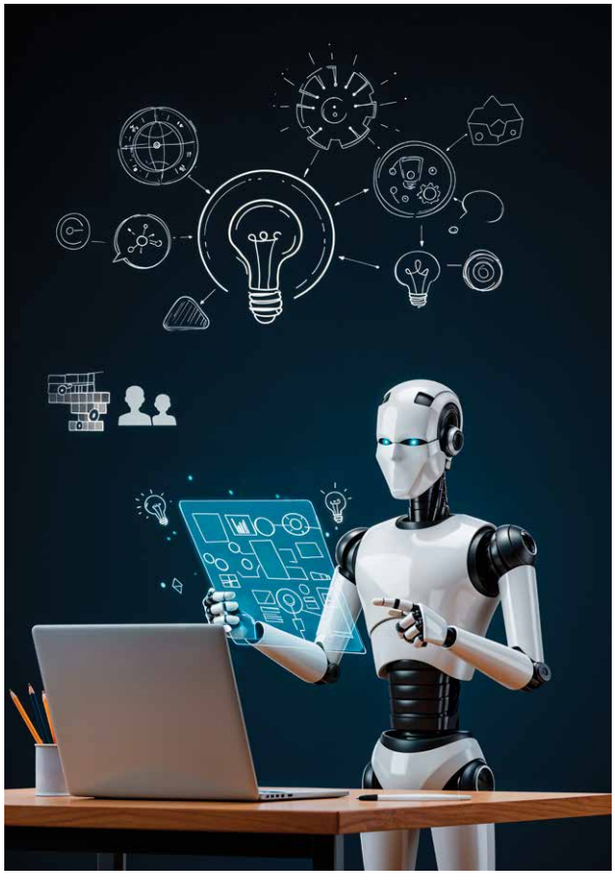

एआई मानव का विकल्प नहीं सहायक है

AI को प्रतिस्पर्धी के रूप में देखने के बजाय सहयोगी के रूप में स्वीकार करना अधिक उचित है। जब मानव और तकनीक मिलकर कार्य करते हैं, तब परिणाम अधिक सटीक और प्रभावी होते हैं। AI जटिल गणनाओं और आंकड़ों के विश्लेषण में सहायता करता है, जिससे मानव को रचनात्मक और रणनीतिक कार्यों के लिए अधिक समय मिल पाता है। इस प्रकार यह मानव की क्षमता को सीमित नहीं, बल्कि विस्तारित करता है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम इसे सकारात्मक दृष्टिकोण से अपनाएं और अपने कौशल को समयानुकूल विकसित करें।

डरने के बजाय समन्वय स्थापित करें

इतिहास गवाह है कि हर नई तकनीक के आगमन पर प्रारंभिक भय और विरोध उत्पन्न हुआ, किंतु समय के साथ वही तकनीक विकास का आधार बनी। औद्योगिक क्रांति के समय भी यही स्थिति थी, परंतु अंततः उसने मानव जीवन को नई दिशा दी। उसी प्रकार AI भी यदि सही मार्गदर्शन और नैतिक नियंत्रण के साथ उपयोग किया जाए, तो यह समाज के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होगा। इसके लिए आवश्यक है कि सरकारें, शैक्षणिक संस्थान और समाज मिलकर जागरूकता और प्रशिक्षण कार्यक्रमों को बढ़ावा दें।

निष्कर्ष

अंततः यह कहा जा सकता है कि AI के युग में मानव की भूमिका कम नहीं हुई है, बल्कि और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। AI मानव की बुद्धि और परिश्रम का ही परिणाम है। यह तकनीक मानव के सहयोग के बिना अस्तित्व में नहीं रह सकती। यदि हम विवेक, नैतिकता और संवेदनशीलता के साथ इसका उपयोग करें, तो यह मानवता के कल्याण का सशक्त माध्यम बन सकती है। इसलिए भय के स्थान पर समझ, विरोध के स्थान पर समन्वय और संदेह के स्थान पर विश्वास को अपनाना आवश्यक है। यही AI के युग में मानव की वास्तविक और सार्थक भूमिका है।

महिला नेतृत्व आधारित विकास: भारत की उन्नति का नया दौर

- प्रिया निकेत पोकले
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
राजभाषा विभाग

प्रस्तावना : एक वैचारिक पुनर्जागरण

हम बचपन से सुनते आ रहे हैं - "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:" यानी जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता बसते हैं। आज हम उस पुराने दौर से बाहर निकल रहे हैं जहां महिलाओं के 'विकास' की बातें होती थीं। अब हम एक नए युग में हैं - 'महिला नेतृत्व आधारित विकास'। यह बदलाव कागजों पर लिखे किसी नियम जैसा नहीं है, बल्कि यह एक एहसास है कि अब भारत की बेटियां पीछे चलकर रास्ता नहीं मांगेंगी, बल्कि सबसे आगे चलकर रास्ता दिखाएंगी। 'विकसित भारत 2047' का सपना तब तक अधूरा है, जब तक हमारे घर की आधी आबादी उस सपने की सारथी न बने।

सिर्फ 'मदद' नहीं, अब 'कमान' चाहिए

जरा सोचिए, बरसों तक विकास का मतलब क्या था? यही न कि महिलाओं को कुछ सुविधाएं दे दी जाएं, उन्हें कुछ योजनाओं का 'लाभार्थी' बना दिया जाए। लेकिन 'महिला नेतृत्व आधारित विकास' ने इस सोच को पूरी तरह बदल दिया है। अब महिलाएं कह रही हैं - "हमें आपकी दया या सिर्फ मदद नहीं चाहिए, हमें निर्णय लेने का हक चाहिए।" अब वे दर्शक नहीं, बल्कि कहानी की मुख्य रचयिता हैं। जब एक महिला के हाथ में कमान होती है, तो वह सिर्फ दिमाग से नहीं, दिल से भी फैसले लेती है। उसकी ममता और उसका प्रबंधन, घर से लेकर संसद तक, हर व्यवस्था को इंसानियत से भर देता है।

1. वैचारिक प्रतिमान विस्थापन: 'कल्याण' से 'कर्तृत्व' तक

दशकों तक भारत में 'महिला विकास' का अर्थ था - उन्हें पोषण देना, शिक्षा देना और सुरक्षित रखना। लेकिन वर्तमान भारत का दर्शन 'कर्तृत्व' पर आधारित है। अब दृष्टिकोण यह है कि यदि महिला शिक्षित और सुरक्षित है, तो वह समाज को क्या दे सकती है? यह 'चैरिटी मॉडल' से 'लीडरशिप मॉडल' की ओर एक बड़ा बदलाव है।

2. नए भारत के अद्वितीय उदाहरण

इस बदलाव को समझने के लिए हमें उन क्षेत्रों को देखना होगा जहां महिलाओं ने अपनी विशिष्ट कार्यशैली से परिणामों को बदला है:

- **ब्लू-कॉलर क्रांति:** तमिलनाडु और कर्नाटक के इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग हब (जैसे एप्पल के आईफोन प्लांट) में 70% से अधिक कार्यबल महिलाएं हैं। उनकी सटीकता और अनुशासन ने भारत को वैश्विक विनिर्माण मानचित्र पर खड़ा कर दिया है।
- **नमो ड्रोन दीदी:** पारंपरिक रूप से खेती करना पुरुषों का क्षेत्र माना जाता था। लेकिन आज हज़ारों ग्रामीण महिलाएं ड्रोन पायलट बनकर कीटनाशकों का छिड़काव कर रही हैं। यह तकनीक और परंपरा का वह मिलन है जिसका नेतृत्व महिलाएं कर रही हैं।
- **सहकारी नेतृत्व:** 'अमूल' और 'लिज्जत पापड़' के सफल मॉडल के बाद अब भारत में हज़ारों ऐसे 'महिला किसान उत्पादक संगठन' बन रहे हैं जो सीधे वैश्विक बाज़ारों से जुड़ रहे हैं।

3. STEM और स्पेस-टेक: रूढ़ियों का अंत

भारत ने दुनिया को चौंका दिया जब 'मिशन शक्ति' और 'चंद्रयान-3' की सफलता के पीछे खड़ी महिला वैज्ञानिकों की साड़ियों और बिंदी वाली तस्वीरों ने इंटरनेट पर धूम मचाई। यह इस बात का प्रतीक था कि भारतीय महिला अपनी सांस्कृतिक पहचान को छोड़े बिना आधुनिकतम तकनीक (Quantum Computing, AI, Space-tech) का नेतृत्व कर सकती है। भारत में STEM क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती संख्या (43%) यह सुनिश्चित करती है कि आने वाला 'डेटा युग' समावेशी होगा।

4. विधायी शक्ति: नीति-निर्माण में हिस्सेदारी

'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' केवल संसद में सीटों का

आरक्षण नहीं है, बल्कि यह देश के 'कानून की भाषा' को बदलने की पहल है। जब अधिक महिलाएं विधायी प्रक्रियाओं में होंगी, तो स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक सुरक्षा जैसे विषयों पर बजट का आबंटन अधिक संतुलित और मानवीय होगा। यह 'सहानुभूति आधारित शासन' की शुरुआत है।

5. आर्थिक प्रभाव: गुणात्मक सुधार

इकोनॉमिक सर्वे के अनुसार, जब महिलाएं श्रम शक्ति में शामिल होती हैं, तो निवेश का पैटर्न बदल जाता है। महिलाएं अपनी आय का 90% हिस्सा परिवार की शिक्षा और स्वास्थ्य पर निवेश करती हैं। अतः महिला नेतृत्व का सीधा अर्थ है - एक स्वस्थ और अधिक शिक्षित भावी पीढ़ी।

6. चुनौतियां: अभी सफर बाकी है

इस अद्वितीय प्रगति के बीच कुछ बाधाएं अब भी खड़ी हैं:

- **अनपेड वर्क:** घरेलू कार्यों का बोझ आज भी महिलाओं के करियर की राह में सबसे बड़ी बाधा है।
- **डिजिटल डिवाइड:** ग्रामीण क्षेत्रों में स्मार्टफोन और इंटरनेट तक महिलाओं की पहुंच को और सुलभ बनाना होगा।
- **परोक्ष नेतृत्व:** पंचायतों में 'सरपंच-पति' जैसी प्रथाओं को पूरी तरह समाप्त कर वास्तविक नेतृत्व को बढ़ावा देना होगा।

7. सरकार का साथ: एक नई उम्मीद

सरकार की नीतियां अब महिलाओं के जीवन के हर पड़ाव को सशक्त कर रही हैं:

- **अपना घर, अपना नाम:** प्रधानमंत्री आवास योजना ने लाखों महिलाओं को उनके सपनों का घर दिया है। घर की चाबी हाथ में आते ही उनका आत्मविश्वास आसमान छूने लगता है।
- **सपनों को पंख (मुद्रा योजना):** जब बैंक बिना गारंटी के लोन देता है, तो वह एक महिला के हुनर पर भरोसा जता रहा होता है।
- **ड्रोन वाली दीदी:** कल तक जो खेत में मजदूरी करती थी, आज वो 'नमो ड्रोन दीदी' बनकर हाथ में रिमोट थामे, तकनीक के साथ खेती कर रही है। यह बदलाव है।

निष्कर्ष: एक आह्वान

'महिला नेतृत्व आधारित विकास' केवल भाषणों का हिस्सा नहीं होना चाहिए, इसे हमारी रगों में दौड़ना चाहिए। प्रधानमंत्री मोदी जी का 2047 का सपना तभी सच होगा जब हम अपनी माताओं, बहनों और बेटियों को 'पीछे' या 'साथ' नहीं, बल्कि 'आगे' खड़ा करेंगे। स्वामी विवेकानंद ने सही कहा था कि एक पंख से पक्षी नहीं उड़ सकता। भारत को अगर विश्वगुरु बनना है, तो उसे अपनी नारी शक्ति की उंगली थामकर चलना होगा।

आइए, हम सब मिलकर एक ऐसा समाज बनाएं जहां एक बेटी को यह न सोचना पड़े कि वह क्या कर सकती है, बल्कि उसे यह विश्वास हो कि वह जो चाहे वो बन सकती है। भारत की स्वतंत्रता के 100वें वर्ष (2047) में जब हम पीछे मुड़कर देखेंगे, तो सबसे बड़ा बदलाव सड़कों या इमारतों में नहीं, बल्कि भारतीय महिलाओं के आत्मविश्वास में दिखेगा। महिला नेतृत्व आधारित विकास केवल महिलाओं के लिए अच्छा नहीं है, बल्कि यह 'इकोनॉमिक्स' और 'एथिक्स' दोनों के लिए अनिवार्य है। यदि भारत को 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनना है, तो उसे अपनी नारी शक्ति के पंखों को पूरी तरह खोलना होगा। अब भारत 'बेटियों को बचाने' से आगे बढ़कर 'बेटियों द्वारा राष्ट्र को बचाने' के दौर में है।

"हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।"

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

'बीता कल'

- सतीश धुरी
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

मैं आज जिस कुर्सी पर बैठा हूं, वह सिर्फ़ लकड़ी और लोहे का ढांचा नहीं है; वह मेरे जीवन के अनुभवों का भार उठाए हुए है। ऊपर टंगा पंखा केवल घूम नहीं रहा, बल्कि उस जीवन चक्र की याद दिला रहा है जिसे मैं जी चुका हूं। आज का मैं जब बीते हुए कल में झांकता हूं, तो ऐसा लगता है मानो मेरे इर्द-गिर्द की हर वस्तु मुझे मेरे अतीत का आभास करा रही हो। 'बीता कल' शब्द छोटा है, पर अपने भीतर अनगिनत भावनाओं का अथाह भार समेटे हुए है।

बचपन की यादें आज भी उतनी ही ताज़ा हैं, मानो सब कुछ कल ही घटित हुआ हो। मेरा बचपन एक छोटे से घर में बीता, जहां धूप सीधे आंगन को चूमती थी। मां सुबह जल्दी उठकर चूल्हा जलाती थीं, और उससे उठता धुआं उनकी आंखों को लाल कर देता था। वही धुआं हमारे लिए अलार्म का काम करता था। पिताजी की दिनचर्या तो और भी अनुशासित थी। वे भोर होते ही उठ जाते और काम में लग जाते। न जाने कितने छोटे बड़े काम निपटा लेते थे। जब तक हम बच्चे नींद से जागते, उनका अधिकांश काम पूरा हो चुका होता।

मैंने कई बार उत्सुकतावश पूछा भी "आप इतनी सुबह क्यों उठ जाते हैं?" वे हर बार मुस्कुरा कर बात टाल देते। समय बीता। जब स्वयं पारिवारिक ज़िम्मेदारियों के बीच अभिमन्यु की तरह घिरा, तब जाकर उनके उस अनुशासन का रहस्य समझ आया। आज वे इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए हमारे बीच नहीं हैं, पर समय ने मुझे उनका उत्तर दे दिया है।

मुझे आज भी याद है, तब हमारी सबसे बड़ी चिंता यही होती थी कि आज खेलने के लिए कौन सा खेल चुना जाए। कबड्डी, क्रिकेट या लंगड़ी, इसी पर लंबी बहस चलती। दौड़ लगाते समय जूते फट जाते तो भी कोई अफ़सोस नहीं होता, न ही नए दिलाने की ज़िद। मां उन्हें सिल देतीं और मैं फिर जीवन की दौड़ में शामिल हो जाता। तब कहां समझ था कि वही निश्चिंतता और बेफिक्री जीवन की सबसे कीमती पूंजी होती है। हम तो बस यही सोचते थे कि कब दाढ़ी मूंछ आ जाए और लोग हमें बड़ा मानने लगें।

एक दिन स्कूल में मास्टर जी ने पूछा, "बड़े होकर क्या बनोगे?" उस प्रश्न का उत्तर मेरे पास नहीं था। झूठ बोलने के लिए भी कोई विकल्प नहीं था। पहली बार मैंने सोचा, "मैं क्या बनना चाहता हूं?" उसी क्षण मेरे भीतर एक नया प्रश्न जन्मा, "मैं कौन हूं?" शायद उसी दिन एक बीज बोया गया, जो आगे चलकर मेरे जीवन का वृक्ष बनने वाला था।

किशोरावस्था जीवन का सबसे उथल-पुथल भरा दौर रही। मन सपनों से भरा था, पर रास्ता धूंधला था। एक ओर मैं था, जो वर्तमान में जीना चाहता था; दूसरी ओर माता-पिता थे, जिनकी आँखों में मेरे सुरक्षित भविष्य के सपने थे।

इसी दौर में मैंने पहली बार असफलता का स्वाद चखा। एक परीक्षा में मेरे अंक कम आए। वे अंक केवल काग़ज़ पर लिखे नंबर नहीं थे; वे मेरे आत्मविश्वास पर लगी चोट थे। पहली बार मुझे दूसरों की सफलता से जलन हुई और स्वयं पर चिढ़ भी। घर लौटा तो मन में तय कर लिया था कि किसी को कुछ नहीं बताऊंगा। लगा, शायद किसी को ध्यान भी न हो कि आज परिणाम आया है।

लेकिन रात के भोजन के समय पिताजी की आवाज़ आई "कितने अंक आए हैं?" मैं सिर झुकाए बैठा था। उत्तर देने ही वाला था कि उन्होंने कहा "तुम्हारे शिक्षक मिले थे, उन्होंने बताया कि अंक कम आए हैं।" अब छिपाने को कुछ नहीं बचा था। मैं कुछ कहता, उससे पहले उन्होंने शांत स्वर में कहा "हार से डर मत, उससे सीख।"

वह वाक्य मेरे जीवन का मोड़ बन गया। ऐसा लगा जैसे किसी ने पंख दे दिए हों और सामने खुला आकाश हो। उस रात देर तक नींद नहीं आई। उनके शब्द कानों में गूंजते रहे। पहली बार समझ आया कि असफलता अंत नहीं, एक नई शुरुआत का संकेत है।

अगली सुबह का सूरज अलग लगा। जैसे वह मुझसे संवाद कर रहा हो। समय कभी रुकता नहीं, यह बात धीरे-धीरे समझ आने लगी। मैंने गिरना भी सीखा और उठना भी। आज जब पीछे मुड़कर देखता हूं, तो समझ में आता है कि बचपन की निश्चिंतता, किशोरावस्था की उलझनें और युवावस्था का संघर्ष, सब मिलकर ही आज का "मैं" बना हूं।

आज इस कुर्सी पर बैठकर ऊपर घूमते पंखे को देखता हूं, तो लगता है समय भी उसी तरह घूमता रहता है। फर्क सिर्फ़ इतना है कि पंखा वहीं रहता है, पर हम हर चक्कर के साथ बदल जाते हैं। 'बीता कल' सचमुच छोटा शब्द है, पर वही हमारे आज की नींव है।

अब पिताजी नहीं हैं। मां की आंखों में उम्र की थकान साफ़ झलकती है। झुर्रियों से भरा उनका चेहरा देख मन बेचैन हो उठता है। बचपन में गिरते थे तो जिन हाथों ने सहारा देकर उठाया था, आज वही हाथ कांपते दिखाई देते हैं। यह दृश्य भीतर तक हिला देता है।

आज जब अपने बेटे को भविष्य के प्रति सचेत करता हूं, तो उसकी बेफिक्री में अपना अतीत दिखाई देता है। तब सोचता हूं क्या मेरे पिताजी भी मेरे लिए यही महसूस करते होंगे? क्या वे भी मेरी लापरवाही देखकर ऐसे ही चिंतित होते होंगे? कितने प्रश्न अब भी शेष हैं, जिनके उत्तर शायद समय ही देगा।

जीवन अब स्पष्ट दिखाता है कि यह सीधी रेखा नहीं, बल्कि एक वृत्त है, जहां हर अंत एक नई शुरुआत को जन्म देता है। अब हार से भय नहीं लगता, क्योंकि उससे सीखना आ गया है। सबसे बड़ी चुनौती

अब यही है कि इस सीख को अगली पीढ़ी तक पहुंचा सकूं। वे इसे कितना स्वीकार करेंगे, यह समय बताएगा।

“अरे, घर नहीं जाना क्या? छह बज गए!” ऑफ़िस के साथी की आवाज़ ने विचारों की श्रृंखला तोड़ दी। “हां, बस निकल ही रहा हूं।” मैंने लैपटॉप बंद किया, कुर्सी को पीछे सरकाया और उठ खड़ा हुआ। जाते-जाते एक बार उस कुर्सी को देखा। मन ही मन सोचा कि मुझे यहाँ तक पहुंचाने के असली हकदार पिताजी हैं। वही इस पूरी यात्रा के पथ-प्रदर्शक रहे।

झलकियां

दिनांक 23.01.2026 को कोंकण रेलवे पर सभी विभागों द्वारा हिंदी में किए जा रहे कार्यों की प्रदर्शनी लगाई गई। इसका उद्घाटन अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय के कर-कमलों से किया गया।

दिनांक 23.01.2026 को सरकारी कार्यालयों द्वारा कोंकण रेलवे में हाथ से बनाए विभिन्न वस्तुओं की प्रदर्शनी लगाई गई।

क्षेत्रीय भाषा: लोकजीवन की आत्मा

भारतीय साहित्य में मलयालम के प्रख्यात कवि जी. शंकर कुरुप्प (1901-1978) का विशिष्ट स्थान है। स्वतन्त्र तथा परतन्त्र भारत में अन्होंने अपनी लेखनी चलाई। प्राचीन और अर्वाचीन, परम्परा और आधुनिकता, कल्पना और यर्थाथ आदि का समन्वय हम उनकी रचनाओं में देख सकते हैं।

जी. शंकर कुरुप्प

अपने मामा गोविन्द कुरुप्प से संस्कृत में शिक्षा प्राप्त करने के बाद पेरुम्बावूर और मूवाटुपुषा के स्कूलों से उन्होंने औपचारिक शिक्षा प्राप्त की। फिर तिरुवल्लामला हाई स्कूल और महाराजा'ज कॉलेज में अध्यापन कार्य किया।

केरल साहित्य परिषद के अध्यक्ष, आकाशवाणी के सलाहकार, राज्य सभा के सदस्य आदि रूपों में भी आपने सेवा की। जी. की कविताएं भारतीय व विदेशी भाषाओं में अनूदित हुई हैं। रूस-यात्रा कुरुप्प के काव्य-जीवन में एक मोड थी। 'साहित्य कौतुकम्', 'जीवन संगीतम्', ओटक्कुषल'व्, 'सूर्यकांति'व्, 'विश्वदर्शनम्' अदि उनकी विख्यात काव्य कृतियां हैं।

भारतीय संस्कृति व दर्शन को उन्होंने अपनाया। उनका विश्व के प्रति विशेष दृष्टिकोण भी रहा। प्रकृति प्रेम से शुरू करके वे मानव प्रेम की ओर उन्मुख हुए।

तुलानत्मक मूल्यांकन के द्वारा भारतीय साहित्य की सर्वश्रेष्ठ रचना को ढूंड निकालने का श्रम भारतीय ज्ञानपीठ ने किया तो सर्वप्रथम (1965) जी. अनुवाद का प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ ने किया है।

साहित्य : हृदय-संवाद है

साक्षात्कार = आर. एस. वर्मा

प्रश्न : किन-किन परिस्थितियों ने आपके मन में कविता के प्रति उत्साह जगाया? परिवेश और परम्परा का संबंध काव्याभिरुचि से कैसे जुड जाता है? अपने अनुभव से स्पष्ट करें।

उत्तर : मेरी कोई साहित्यिक परम्परा नहीं है। परिस्थिति ही कवि को जन्म देती है। जहां तक मेरी बात है, परिस्थिति ने ही मेरे मन में साहित्याभिरुचि जगाई थी। फिर परम्परा की बात। अगर इसी जन्म में ही कविता पढने और समझने की बात है तो उसको भी मान लेता हूं। संस्कृत-काव्य, मणिप्रवाल ग्रन्थ और मलयालम काव्य का अध्ययन मैंने किया था। इससे बढकर परम्परा की कोई बात नहीं है। छठे क्लास में पढते समय मैंने श्लोक लिखना शुरु किया था। प्रथम कविता के बारे में सोचते समय 'पालाषी मथनम्' (क्षीरसागर का मंथन) शीर्षक कविता की याद आ रही है। वठ्ठोली कोच्च कृष्णन नायर से कविता में पत्र-व्यवहार करता था। उन दिनों कविता पर बल देने वाली पाठ्य-पुस्तकें थीं। कविता के अध्ययन से एक बोध मिला था। यों कविता से सम्पर्क जुटा था। काव्य-सृजन के लिए ये सारे तत्त्व सहायक बन गए।

अकेले चलने में बचपन के ही मुझे रुचि थी। प्रकृति शुरू से ही मेरी सहेली रही है। चित्र बनाने वाली एक लडकी के रूप में प्रकृति मेरे सामने प्रत्यक्ष हो गई। 'निरंध्र नील जलध पलकप्पुरत्न' यों शुरू होने वाली कविता का जन्म इसी परिवेश में हुआ था। यही मरी पहली कविता है। महाकवि वल्लतोल ने यह कविता पढ़कर मुझे बधाई दी। यों काव्य-सृजन में उत्साह मिला।

प्रश्न : बचपन में प्रभावित करने वाजी कृतियों और व्यक्तियों का उल्लेख करें?

उत्तर : छात्रावस्था में 'चंपुरामायणम्' और 'नैषधम्' ने मुझे आकृष्ट किया था। 'नैष्धम्' के शब्द विधान ने मुझे बहुत प्रभावित किया। 'साहित्यकौतुकम्' के पहले भाग की कुछ पी. कुन्निरामन नायर जैसे अध्यापकों का प्रभाव मेरे चरित्र निर्माण पर पडा है।

प्रश्न : प्रथम बार लिखी कविता, प्रथम बार छपी कविता, प्रथम बार मिली बधाई, प्रथम बार प्राप्त पारिश्रमिक-इनके बारे में क्या सोचते हैं?

उत्तर : प्रकृति मेरे लिए प्रेरणा देती रही। यों प्रकृति से प्राप्त प्रेरणा के बल पर 'मषविल्ल' (इन्द्रधनुष), 'भाषा पोषिणी' पत्रिका में 1917 में प्रकाशित हुई। उससे यश मिला। बल्लतोल की बधाई ने मेरे मन में उत्साह जगाया। उन दिनों मैं तरुविल्लामला में रहता था। उधर की शान्त प्रकृति, एकान्तवास और सहज स्वप्नोन्मुखता से प्रेरणा पाकर मैंने कविताएं

लिखीं। 'साहित्यकौतुकम' के पहले और दुसरे भागों में एसी कविताएं संग्रहीत हैं। वे सब मेरी प्रारम्भकालीन कविताएं हैं। 'ओट्टप्पालम' कमलालय बुक डिपो ने 'साहित्यकौतुकम' का पहला भाग प्रकाशित किया था। उसके पारिश्रमिक के रूप में पांच रुपए मिले। यही प्रथम पारिश्रमिक है। उन दिनों कुछ कविताएं 'लाकमान्य', 'अरुणोदयम्', 'सम्भावना' जैसी पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई थीं। 1922 में 'वीरवाल' (वीर तलवार) शीर्षक कविता 'कवनोदयम' पत्रिका में प्रकाशित हुई थी।

प्रश्न : कविता का जन्म कैसे होता है? मानस से कागज तक आने की प्रकिया कैसी है?

उत्तर : सारी कविताओं का उद्भव समान ढंग से नहीं होगा। हरेक की स्थिति भिन्न होगी। कई दिनों से होकर भाव, मन में रूप लेता है। कभी एक खास प्रसंग में मिलनेवाला प्रतीक कविता के प्रवाह के लिए कारण बनेगा। प्रतीक चाबी के समान है। अन्दर के आशय को या पहले ही बटोर लिए भाव को वह खोल देता है। चाबी मिलते ही कमरे में प्रवेश करना सुविधाजनक होता है। भाव-संसार प्रतीकों के सहारे अनावृत होता है, फिर तेजी से कविता लिखने में तकलीफ नहीं होगी। 'नीले' (कल) शीर्षक कविता मैंने यों लिखी थी। इस कविता में नक्षत्र एक प्रतीक है। इसके बारे में आपत्ति उठाई गई कि उस प्रतीक में देशद्रोह की प्रवृति विद्यमान है। 'विश्व दर्शनम्' शीर्षक कविता की बात कहूं। 'भवन्स जर्नल' में मैंने एक लेख पढा था। 'एक्सपैनशन ऑफ यूनिवर्स' उसका शीर्षक था। वह लेख पढकर मुझे कविता लिखने की प्रेरणा मिली। उसने एक नई अनुभूति जगाई। तीक्ष्ण अनुभूतियां मेरे मन का शिकार करती रहीं। मुझे लगा कि मुझे अधिकाधिक बातें मालूम होती रहती हैं। इस भाव का गुलाम होकर दो-तीन दिनों में मैंने वह कविता लिखि। 'अन्वेषणम्' शीर्षक कविता एरणकुलम में आयोजित साहित्य परिषद् सम्मेलन (1931) में पढ़ने के लिए लिखी थी। विवाह के दो या तीन हफ्ते पहले उस कविता का जन्म हुआ था। लौकिक प्रेम को उदात्त बनाने वाला एक आध्यात्मिक प्रकाश उसमें है। प्रेम के उन्माद में पैर न टिककर, उसके प्रवेश बिन्दु पर परेशान करने वाली उन्मत्त स्मृति और दुस्सह विरह दुख से उस कविता की रचना हुई थी। प्रकृति में छिपी बातों को प्रकाश में लाने लायक प्रतीक अधिक आह्लादपूर्ण होंगे। 'सूर्यकान्ति' (फूल विशेष) में सोने वाली अनुरागी कन्या को उसका प्रतीक जगाता है।

प्रश्न : कविता पूरी हो जाती है तो आपका अनुभव कैसा होगा?

उत्तर : कविता समाप्त होते समय परिपूर्ण सन्तोष मिल जाएगा। फिर मेरा रवैया एक पाठक का-सा होगा। कवि में आलोचक और आलोचक में कवि विद्यमान हैं। अच्छी आलोचना आगामी कविता के लिए प्रेरणाप्रद होगी।

प्रश्न : समाज के प्रति साहित्यकार की जिम्मेदारी पर आप क्या सोचते हैं?

उत्तर : पेड़ और पत्ते का सम्बन्ध है न? समाज और व्यक्ति का संबंध भी उसी प्रकार है। समाज के प्रति व्यक्ति निषेधात्मक न रहे। 'नारायणीयम्' काव्य में एक श्लोक है। आवरण जल, मध्य में भगवान शयन करता है। उनकी नाभि से एक कमल खिल उठा। यह कमल सारे चराचरों का बीज है। पंखुड़ियां खुलीं। यों कान्ति बिखेरनेवाले फूल में ब्रह्मा पैदा हो गया। विशाल सागर की लहरों के बीच हिलते फूल पर बैठे-बैठे ब्रह्मा ने कमल के उद्भव-स्थान के बारे में नहीं समझा था। उनके मन में यह दर्प भी पैदा हो गया कि वह सर्व स्वतन्त्र हैं। दीर्घकाल की तपस्या के बाद ही ब्रह्मा को रहस्य का पता चला था। काल की नली पर टिके पद्म पर आसीन होकर सृजन करने वाला साहित्यकार सामाजिक सरोकार का निषेध करे तो वह कुछ भी अर्थ नहीं रखेगा। हम समाज का मात्र एक हिस्सा हैं। अगर व्यक्ति बाह्य संसार को भूलकर अपने अन्तर्जगत में डूबे और बाहर न आए तथा उसे जगाने के लिए एक प्रेरक शक्ति न रहे तो सब कुछ बिगड़ जाएगा।

प्रश्न : कुछ साहित्यकार कहते हैं कि हम बिल्कुल स्वतन्त्र हैं और पाठकों से हमारा कोई सरोकार नहीं है। इस बात पर आपकी क्या राय है?

उत्तर : भाषा एक आम सम्पत्ति है। वह एक माध्यम है। भाषारूपी आम सम्पत्ति को साहित्यकार अपने भाव तथा भावना से नया जीवन प्रदान करता है। साहित्यकार आम माध्यम को अपने अनुभव से विशिष्ट बनाता है। यदि उस भाषा में साहित्यकार के तत्त्व का संचार या अनुप्रवेश होता है। साहित्य हृदय-सम्बद्ध है न? कवि और सदस्य की साझेदारी के बिना वह कैसे पूर्ण होगा? श्रोता के हृदय में स्थापित करना अनिवार्य है। सृष्टि और आस्वादन पूरक बातें हैं। उसको एक ही रूप में मान लेना मुश्किल है। सिर्फ लिखना काफी नहीं है। साहित्य में सत्य अनुभवों की साझेदारी भी आवश्यक है। भाषा उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए है। क्या वाल्मीकि रामायण की रचना से सन्तुष्ट हो गए थे? उन्होंने लव तथा कुश को रामायण सिखाई और जनवृत्त में जाकर गाने की प्रेरणा देकर उन्हें भेजा भी था। हां, साझेदारी, श्रोता के साथ हृदयैक्य हर साहित्यकार इन बातों की कामना करता है।

प्रश्न : स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद साहित्यकारों को सम्मानित करने तथा प्रोत्साहन आदि देने के लिए कई पुरस्कार योजनाएं बनाई गई हैं। इतना सब होते हुए भी आज उत्कृष्ट कृतियां पाठकों को नहीं मिलती हैं। इस पर आपकी प्रतिक्रिया क्या है?

उत्तर : पुरस्कार आदि समाज की मान्यता के रूप में साहित्यकार के मन में सन्तोष पैदा कर सकता है। उससे एक दूसरी कृति की रचना के लिए प्रेरणा मिल सकती है।

साभार - डॉ. आरसु, हिंदी विभाग
कालीकट विश्व विद्यालय

वैश्विक संदर्भ में वैश्विक उष्णता का प्रभाव: चुनौतियां और समाधान

- वी. प्रकाश
वैयक्तीक सचिव, कारवार

वैश्विक उष्णता, जिसे जलवायु परिवर्तन के रूप में भी जाना जाता है, एक ऐसी सार्वभौमिक चुनौती है जो किसी एक देश की सीमाओं तक सीमित नहीं है। यह पूरे ग्रह को प्रभावित कर रही है और इसके प्रभाव इतनी तेज़ी से बढ़ रहे हैं कि दुनिया के हर कोने में इसका असर देखा जा रहा है। वैश्विक संदर्भ में, यह समस्या न केवल पर्यावरणीय संतुलन को बिगाड़ रही है, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिरता के लिए भी खतरा पैदा कर रही है।

वैश्विक उष्णता के प्रमुख वैश्विक प्रभाव

वैश्विक उष्णता के व्यापक प्रभाव पूरे विश्व में महसूस किए जा रहे हैं:

1. **बढ़ता वैश्विक तापमान:** पृथ्वी का औसत तापमान लगातार बढ़ रहा है, जिससे दुनिया भर में हीटवेव (लू) की घटनाओं में वृद्धि हो रही है। आर्कटिक और अंटार्कटिक ध्रुवों पर बर्फ पिघल रही है, जिससे समुद्र के स्तर में वृद्धि हो रही है। यह आर्कटिक में पर्माफ्रॉस्ट (स्थायी रूप से जमी हुई जमीन) को भी पिघला रहा है, जिससे मीथेन जैसी शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैसें निकल रही हैं, जो समस्या को और बढ़ा रही हैं।

2. **अत्यधिक मौसमी घटनाएं:** दुनिया भर में तूफान, चक्रवात, बाढ़ और सूखे जैसी अत्यधिक मौसमी घटनाओं की आवृत्ति और तीव्रता बढ़ रही है। उदाहरण के लिए, कैलिफोर्निया में लगातार सूखे, यूरोप में भयंकर बाढ़ और एशिया में विनाशकारी मानसून सभी जलवायु परिवर्तन से जुड़े हैं।

3. **समुद्र स्तर में वृद्धि और तटीय क्षेत्रों पर प्रभाव:** ग्लेशियरों और बर्फ की चादरों के पिघलने से समुद्र का स्तर तेजी से बढ़ रहा है। इससे दुनिया भर के तटीय शहर और निचले द्वीप राष्ट्र गंभीर खतरे में हैं। बांग्लादेश, नीदरलैंड और मालदीव जैसे देश विशेष रूप से जोखिम में हैं, जहां खारे पानी का प्रवेश कृषि भूमि को अनुपजाऊ बना रहा है और लाखों लोगों को विस्थापित कर रहा है।

4. **महासागरों का अम्लीकरण:** वायुमंडल में अतिरिक्त कार्बन डाइऑक्साइड महासागरों द्वारा अवशोषित हो रही है, जिससे उनका अम्लीकरण हो रहा है। यह समुद्री जीवन, विशेष रूप से कोरल रीफ और शेलफिश के लिए खतरा पैदा कर रहा है, जो वैश्विक समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र के लिए महत्वपूर्ण हैं।

5. **खाद्य सुरक्षा पर खतरा:** बदलते वर्षा पैटर्न, सूखे और बाढ़ के कारण दुनिया के कई हिस्सों में कृषि उत्पादन प्रभावित हो रहा है। इससे खाद्य असुरक्षा बढ़ रही है, खासकर विकासशील देशों में जहाँ आबादी का एक बड़ा हिस्सा कृषि पर निर्भर है। अफ्रीका के साहेल क्षेत्र और मध्य अमेरिका जैसे क्षेत्र सूखे के कारण सबसे अधिक प्रभावित हैं।

6. **जैव विविधता का नुकसान:** बदलती जलवायु के कारण कई पौधों और जानवरों की प्रजातियां अपने प्राकृतिक आवास खो रही हैं। इससे जैव विविधता का व्यापक नुकसान हो रहा है, और कई प्रजातियाँ विलुप्त होने के कगार पर हैं। ध्रुवीय भालू, प्रवाल और कई वर्षावन प्रजातियाँ विशेष रूप से खतरे में हैं।

7. **मानव विस्थापन और संघर्ष:** जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के कारण लोग अपने घरों से विस्थापित हो रहे हैं। जलवायु शरणार्थियों की संख्या बढ़ रही है, जिससे संसाधनों पर दबाव बढ़ रहा है और कुछ क्षेत्रों में संघर्ष की स्थिति पैदा हो सकती है।

चुनौतियां

वैश्विक उष्णता से निपटने में दुनिया के सामने कई बड़ी चुनौतियां हैं:

1. **जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता:** वैश्विक अर्थव्यवस्था अभी भी बड़े पैमाने पर कोयला, तेल और गैस जैसे जीवाश्म ईंधन पर निर्भर है, जो ग्रीनहाउस गैसों का सबसे बड़ा स्रोत हैं। इस निर्भरता को कम करना एक बड़ी चुनौती है।

2. **विकासशील देशों की ज़रूरतें:** विकासशील देशों को आर्थिक विकास के लिए ऊर्जा की आवश्यकता है, और उन्हें अक्सर कम लागत वाले, कार्बन-गहन विकल्पों पर निर्भर रहना पड़ता है। उन्हें पर्याप्त वित्तीय और

तकनीकी सहायता प्रदान करना महत्वपूर्ण है ताकि वे स्वच्छ ऊर्जा की ओर बढ़ सकें।

3. **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की कमी:** जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक समस्या है, लेकिन अक्सर विभिन्न देशों के बीच पर्याप्त राजनीतिक इच्छाशक्ति और सहयोग की कमी देखी जाती है, जिससे प्रभावी वैश्विक समाधानों को लागू करना मुश्किल हो जाता है।

4. **वित्तीय और तकनीकी बाधाएं:** नवीकरणीय ऊर्जा, जलवायु-लचीले बुनियादी ढांचे और अनुकूलन रणनीतियों के लिए बड़े पैमाने पर वित्तीय निवेश और उन्नत प्रौद्योगिकियों की आवश्यकता होती है, खासकर विकासशील देशों के लिए।

5. **जलवायु न्याय:** जलवायु परिवर्तन का सबसे बड़ा प्रभाव उन देशों और समुदायों पर पड़ रहा है जिन्होंने ऐतिहासिक रूप से सबसे कम ग्रीनहाउस गैसें उत्सर्जित की हैं। जलवायु न्याय सुनिश्चित करना, जहां सबसे अधिक जिम्मेदार देश सबसे अधिक प्रभावित देशों की मदद करें, एक नैतिक और व्यावहारिक चुनौती है।

समाधान

वैश्विक उष्णता के प्रभावों को कम करने और एक स्थायी भविष्य बनाने के लिए एक व्यापक वैश्विक दृष्टिकोण की आवश्यकता है:

- **नवीकरणीय ऊर्जा में संक्रमण:** कोयला, तेल और गैस से सौर, पवन, भूतापीय और जलविद्युत जैसी नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की ओर एक त्वरित और बड़े पैमाने पर वैश्विक संक्रमण आवश्यक है। इसमें नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकी में निवेश और स्वच्छ ऊर्जा बुनियादी ढांचे का विस्तार शामिल है।

- **ऊर्जा दक्षता और संरक्षण:** उद्योगों, भवनों और परिवहन प्रणालियों में ऊर्जा दक्षता में सुधार और ऊर्जा की अनावश्यक खपत को कम करना महत्वपूर्ण है।

- **वनारोपण और पारिस्थितिकी तंत्र बहाली:** वनारोपण और वनीकरण कार्यक्रमों को बढ़ावा देना और आर्द्रभूमि और मैंग्रोव जैसे महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्रों को बहाल करना कार्बन डाइऑक्साइड को वायुमंडल से हटाने में मदद करता है।

- **कार्बन मूल्य निर्धारण और उत्सर्जन व्यापार:** कार्बन मूल्य निर्धारण (जैसे कार्बन टैक्स) और उत्सर्जन व्यापार प्रणालियों को लागू करना उद्योगों को अपने उत्सर्जन को कम करने के लिए प्रोत्साहन प्रदान कर सकता है।

- **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और वित्तपोषण:** विकसित देशों को विकासशील देशों को जलवायु वित्तपोषण और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के माध्यम से उनके अनुकूलन और शमन प्रयासों में सहायता करनी चाहिए। पेरिस समझौता जैसे अंतर्राष्ट्रीय समझौते इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।

- **जलवायु-लचीले बुनियादी ढांचे का निर्माण:** समुद्र के बढ़ते स्तर, चरम मौसम की घटनाओं और अन्य जलवायु प्रभावों का सामना करने के लिए लचीले बुनियादी ढांचे (जैसे बाढ़ सुरक्षा और बेहतर जल प्रबंधन प्रणालियां) का निर्माण करना।

- **कृषि और खाद्य प्रणालियों में बदलाव:** टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना, खाद्य अपशिष्ट को कम करना और पौधों पर आधारित आहार को अपनाना ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम कर सकता है।

- **अनुसंधान और नवाचार:** जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए नई प्रौद्योगिकियों और समाधानों को विकसित करने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान और नवाचार में निवेश करना।

- **जन जागरूकता और शिक्षा:** वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन के बारे में जन जागरूकता और शिक्षा बढ़ाना व्यक्तियों, समुदायों और सरकारों को कार्रवाई करने के लिए प्रेरित कर सकता है।

निष्कर्ष

वैश्विक उष्णता एक जटिल और बहुआयामी समस्या है जिसके लिए एक समन्वित वैश्विक प्रतिक्रिया की आवश्यकता है। यह केवल पर्यावरणीय मुद्दा नहीं है, बल्कि मानव अस्तित्व, न्याय और भविष्य की पीढ़ियों की भलाई से जुड़ा एक मुद्दा है। अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, तकनीकी नवाचार और हर व्यक्ति की सक्रिय भागीदारी से ही हम इस चुनौती का सफलतापूर्वक सामना कर सकते हैं और एक अधिक टिकाऊ और लचीला ग्रह बना सकते हैं।

वैश्विक उष्णता केवल पर्यावरण का नहीं, मानव सभ्यता के अस्तित्व का संकट बन चुकी है। यह समय है कि राष्ट्र, संस्थाएं और नागरिक अपने-अपने स्तर पर गंभीर प्रयास करें। यदि अभी भी हमने अपने व्यवहार और नीतियों में बदलाव नहीं लाया, तो भविष्य की पीढ़ियों को एक विनाशकारी पृथ्वी सौंपनी पड़ेगी। समाधान हमारे पास हैं, आवश्यकता है सामूहिक संकल्प, सतत प्रयास और विश्व-जन की भागीदारी की।

कोंकण रेलवे पर पर्यटन

- राजेश जोशी
क्षेत्रीय विद्युत इंजीनियर

"मैं अकेला ही चला था जानिब-ए-मंज़िल,
मगर लोग साथ आते गए और कारवां बनता गया।"

ये पंक्तियां किसी शायर ने सच ही कही हैं। क्योंकि कोंकण के खूबसूरत समुद्र तट तक पहुंचना हमेशा खुशी और उत्साह का अवसर होता है।

पर्यटन उन लोगों के लिए निश्चित रूप से रोमांचक है जो यात्रा करना और नई जगहों की खोज करना पसंद करते हैं। पर्यटन हमें जीवन के अर्थ को समझने में मदद करता है। हम नए लोगों, नई संस्कृति और विभिन्न जीवन शैली को जानते हैं। इससे हमें जीवन को देखने का नया नजरिया मिलता है।

कोंकण क्षेत्र प्राकृतिक संसाधनों एवं प्राकृतिक सुंदर स्थानों से परिपूर्ण है। आइए जानें कि पूर्ण जीवन से समृद्ध कोंकण के खूबसूरत समुद्र तटों तक कैसे पहुंचा जाए।

कोंकण रेलवे

कोंकण रेलवे भारत के पश्चिमी तट पर स्थित एक महत्वपूर्ण रेलवे मार्ग है, जो महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक और केरल राज्यों से होकर गुजरता है। इस रेलवे मार्ग पर स्थित कारवार और रत्नागिरी दो महत्वपूर्ण स्टेशन हैं, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता, ऐतिहासिक महत्व और सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध हैं।

कोंकण रेलवे ने पर्यटकों के लिए कई नई ट्रेनों की पेशकश की है, जो उन्हें आराम से यात्रा करने का आनंद देती हैं। 12051-जनशताब्दी एक्सप्रेस, 22229-वंदे भारत एक्सप्रेस, 22119-तेजस एक्सप्रेस, 12431-राजधानी एक्सप्रेस जैसी ट्रेनों की कोचों पर सेवा की बेहतर गुणवत्ता के लिए पर्यटकों द्वारा पसंद किया जाता है।

उन्नत एलएचबी कोच यात्रियों को बेहतर आरामदायक यात्रा प्रदान करेंगे। एलएचबी कोच की यह सुविधा बेहतर सवारी अनुभव और कम शोर के साथ सुरक्षा बढ़ाएगी। अब सभी ट्रेनों को एलएचबी कोच से अपग्रेड किया गया है। कुछ ट्रेनों में एलएचबी कोच के साथ-साथ विस्टाडोम कोच भी जोड़े गए हैं। विस्टाडोम सेवा में 360 डिग्री देखने की प्रणाली के साथ बड़े आकार की खिड़कियों और पारदर्शी छत है। यह सुनिश्चित करेगा कि पर्यटक मडगांव की यात्रा के दौरान प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लें।

कोंकण रेलवे ने मडगांव, चिपलून, रत्नागिरी, वैभववाड़ी, थिविम और उडूपि स्टेशनों पर एग्जीक्यूटीव लाउंज विकसित किए हैं। विशेष इंटीरियर डिज़ाइन से लेकर यात्रियों को आराम प्रदान करने तक, कोंकण रेलवे अपने यात्रियों को वास्तव में अद्वितीय, शीर्ष-स्तरीय प्रीमियम अनुभव प्रदान करके अपने स्तर को ऊपर उठाना जारी रखता है। लाउंज यात्रियों को अपनी ट्रेन की प्रतीक्षा के दौरान समय बिताने के लिए आवश्यक सभी चीजें प्रदान करता है।

रत्नागिरी

रत्नागिरी एक शहर है, जो महाराष्ट्र राज्य में स्थित है। यह शहर अपनी प्राकृतिक सुंदरता, ऐतिहासिक महत्व और सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है। रत्नागिरी में पर्यटकों के लिए कई आकर्षक स्थल हैं।

रत्नागिरी किला:

यह एक ऐतिहासिक किला है, जो 17वीं शताब्दी में बनाया गया था। रत्नागिरी किला, जिसे रत्नदुर्ग किला या भगवती किला भी कहा जाता है, महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में रत्नागिरी से 2 किमी दूर स्थित है। यह किला रत्नागिरी जिले का एक महत्वपूर्ण किला है। किले के अंदर भगवती मंदिर होने के कारण यह किला पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केंद्र है। किले के एक तरफ लाइटहाउस बना हुआ है। किले के अंदर भगवती मंदिर, एक तालाब और एक कुआं है। किले के नीचे एक गुफा है। सभी गढ़ों में सबसे मजबूत रेडे बुरुज है।

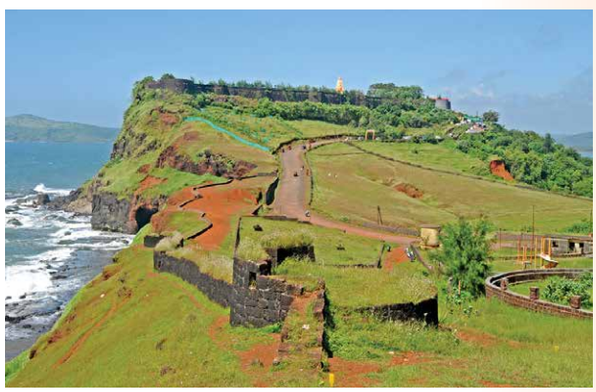

1670 में मराठा राजा ने बीजापुर के आदिल शाह के हाथों से किला जीत लिया था। 1750-1755 में मराठा एडमिरल कान्होजी आंग्रे ने रत्नागिरी किले का पुनरुद्धार कराया। भगवती मंदिर का 1950 में जीर्णोद्धार किया गया था।

गणपतिपुले बीच:

ताड़ के पेड़ों और मैंग्रोव से घिरा हुआ गणपतिपुले बीच मंदिर के आसपास घूमने के लिए सबसे बेहतरीन जगहों में से एक है। यह बीच शांत वातावरण के लिए काफी प्रसिद्ध है।

जयगढ़ किला:

गणपतिपुले मंदिर से कुछ ही दूरी पर मौजूद जयगढ़ किला एक ऐतिहासिक किला है। इसका निर्माण 16वीं शताब्दी में हुआ था। फोर्ट से समुद्र की हसीन लहरों को निहार सकते हैं।

वेलनेश्वर:

गणपतिपुले मंदिर से करीब 35 किमी दूर वेलनेश्वर एक छोटा, लेकिन बेहद खूबसूरत गांव है। यह गांव पवित्र और प्राचीन शिव मंदिर के साथ-साथ खूबसूरत समुद्री तट के लिए भी जाना जाता है।

थिबा महल:

ब्रिटिश सरकार ने ब्रह्मदेश (अब म्यांमार) के पूर्व राजा थब्बा मिन को नजरबंद रखने के लिए इस महल का निर्माण 1910 में किया। 1916 तक इस महल में म्यांमार के राजा और रानी रहते थे। अब इस महल में एक संग्रहालय है। महल में राजा थिबा द्वारा इस्तेमाल की गई कुछ चीज़ें आज भी संरक्षित हैं।

यह महल ढलानदार छतों वाली तीन मंजिला संरचना है। सुंदर नक्काशी वाली अर्धवृत्ताकार लकड़ी की खिड़कियां इसका मुख्य आकर्षण हैं। पहली मंजिल पर संगमरमर के फर्श वाला एक नृत्य कक्ष है। महल के पीछे एक बुद्ध की मूर्ति स्थापित है, जिसे राजा थिबा भारत लाए थे।

इस बिंदु से सोमेश्वर क्रीक, भट्टे ब्रिज और अरब सागर का मनमोहक दृश्य देखा जा सकता है। यह जगह खूबसूरत सूर्यास्त के लिए भी मशहूर है।

तटीय स्थल

रत्नागिरी और उसके आसपास का क्षेत्र प्राकृतिक सुंदरता और ऐतिहासिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। तटीय स्थलों में मालवण का मालवण बीच, तारकरली बीच, वेलनेश्वर बीच, पावस बीच, कोलंबे बीच, निवती बीच, भाट्ये बीच और आचरा बीच विशेष रूप से लोकप्रिय हैं।

जलप्रपात

रानपाट जलप्रपात लगभग 100 फीट ऊंचा है और चारों ओर हरी-भरी वनस्पति से घिरा हुआ है, जो पिकनिक और प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेने के लिए एक आदर्श स्थान है। यहां पहुंचने के लिए रत्नागिरी शहर से बस सेवा उपलब्ध है, साथ ही टैक्सी या निजी वाहन से भी आसानी से पहुंचा जा सकता है। निकटतम रेलवे स्टेशन रत्नागिरी रेलवे स्टेशन है, जो लगभग 25 किलोमीटर दूर स्थित है। यहां घूमने का सर्वोत्तम समय जुलाई से सितंबर तक माना जाता है।

ऐतिहासिक स्थल

ऐतिहासिक स्थलों में रत्नागिरी किला, जयगढ़ किला, पूर्णगड किला, राजापुर किला और संगमेश्वर प्रमुख हैं। धार्मिक स्थलों में गणपतिपुले मंदिर, परशुराम मंदिर, स्वारी मंदिर, श्री देवी का मंदिर और श्री राम मंदिर श्रद्धालुओं के लिए आस्था के केंद्र हैं।

अन्य आकर्षण

अन्य आकर्षणों में रत्नागिरी म्यूजियम भी शामिल है। कोंकण रेलवे ने गणपति उत्सव, दिवाली, क्रिसमस और आंगणेवाड़ी यात्रा के अवसर पर विशेष ट्रेनों की शुरुआत की है

भराड़ी देवी मंदिर

भराड़ी देवी मंदिर मालवण से लगभग 12 किलोमीटर दूर आंगणेवाड़ी मसुरे गांव में स्थित है। यहां फरवरी या मार्च में वार्षिक मेला आयोजित किया जाता है, और यह मंदिर देवी की इच्छा-पूर्ति शक्ति के लिए प्रसिद्ध है।

क्रमश:

कहावतों में रोगों के नुस्खे

- अक्षय खलदकर
क्षेत्रीय सिगनल इंजीनियर

गांव के लोग स्वास्थ्य के संबंध में असावधान नहीं हैं। उन्होंने हजारों वर्षों के पुराने स्वास्थ्य-संबंधी अनुभवों को कहावतों की छोटी-छोटी डिबियों में भर रखा है जो गांव के हर छोटे-बड़े के गले में लटकती मिल जाएंगी। उनके अनुभव आज भी बड़े सच्चे और लाभदायक साबित हुए हैं।

ये कहावतें घर-घर के बीज मंत्र हैं। इनमें संपूर्ण भारत का सच्चा जीवन इस तरह पिरोया हुआ है, जैसे माला के सूत्र में मनके पिरोए जाते हैं। यदि हम स्वास्थ्य विज्ञान के समुद्र में झांकने की कोशिश करें तो हमें सचमुच ऐसे मोती मिल जाएंगे। जिनकी बराबरी पाश्चात्य चिकित्सा विज्ञान कभी नहीं कर सकता। परंतु दुर्भाग्य का विषय है कि हमने इनकी ओर से आंखें मूंद ली हैं। विदेशी गोलियों, कैपसूलों और इंजेक्शनों का प्रयोग करने के लिए दीवाने हैं। निःसंदेह यदि हम अपनी मिट्टी से जुड़े इन नुस्खों का प्रयोग करें तो स्वस्थ, नीरोग एवं दीर्घजीवी हो सकते हैं।

यदि गांव में बात-बात में हम किसी बूढ़े पुरुष या स्त्री के सामने अपने किसी रोग के विषय में कुछ कहें तो वे तुरंत कोई न कोई दवा अवश्य बता देंगे। उस पर वे उस दवा से ठीक होने की पूरी गारंटी भी देंगे। इसका मतलब यह है कि हमारे दादा-दादी अपने अनुभव एवं देसी नुस्खों का खजाना आने वाली तथा उपस्थित संतानों को सौंप जाते हैं ताकि उनका उपयोग करके अधिकाधिक लाभ उठाया जा सके। उस पर मुद्दे की बात यह कि ये नुस्खे घर के मसालदान या गांवों में उगने वाली जड़ी-बूटियों से पूरे हो जाते हैं। इनको प्राप्त तथा तैयार करने में आधुनिक औषधियों की तरह कपड़ा-उतार धन खर्च नहीं करना पड़ता।

आहार-विहार के सूत्र

सच तो यह है कि यदि हम इन भुलाए गए नुस्खों के अनुसार अपनी जीवन-शैली को चलाने का प्रयास करें तो बीमारी हमें देखकर दूर भाग जाएगी। सोचने की बात है कि हमारे पूर्वज इन नुस्खों का इस्तेमाल करके दीर्घजीवी होते थे। यहां हम कुछ विशेष कहावतों के माध्यम से नीरोग रहने के सूत्र आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं -

जैसा खावे अन्न,
वैसा उपजै मन।।

अर्थात - मनुष्य जैसा भोजन करता है, उसका मन भी वैसा ही बन जाता है। मोटा अन्न खाने वाले की बुद्धि मोटी और महीन अन्न लेने वाले की बुद्धि तीव्र होती है।

रहे नीरोगी जब कम खाय।
बिगैर काम जो गम खाय।।

वह व्यक्ति बीमार नहीं पड़ता जो कम खाता है। इसी प्रकार गम यानी धैर्य धारण करने वाले व्यक्ति के काम कम बिगड़ते हैं।

जादुई नुस्खे

समय की मांग है कि नीरोग रहने के लिए प्राचीन चिकित्सा ग्रंथों के विभिन्न पहलुओं को देखा-परखा जाए तथा उसके नियमों की पुष्टि की जाए। हम सबका कर्तव्य है कि हम पुराने नुस्खों तथा विज्ञान सम्मत सिद्धांतों को अपनाएं क्योंकि ये नुस्खे हमारी अपनी मिट्टी की सोंधी बास से जुड़े हुए हैं। ये सभी नुस्खे पर्यावरण और जीवन-शैली को जीवित रखने में पूर्ण योगदान देने वाले हैं। क्या इन जादुई नुस्खों को कोई आधुनिक वैज्ञानिक झूठा साबित कर सकता है? शायद नहीं।

मूंग की दाल, के खाय रोगी,
के खाय भोगी।।

अर्थात - मूंग की दाल या तो रोगी को दी जाती है या उस व्यक्ति को जिसका पेट हर समय खराब रहता है।

प्रातःकाल खटिया ते उठके,
पिये तुरंते पानी।
कबहूँ घर मां वैद न अहिहें,
बात घाघ के जानी।।

सुबह के समय खाट से उठकर तुरंत पानी पीने वाले व्यक्ति के घर वैद्य कभी नहीं आता यानी वह नीरोग रहता है।

कवार करेला, चैत्र गुड़,
सावन साग न खाय।
ऐसा बोले भड्डुरी,
मन भावे तह जाय।।

कवार के महीने में करेला, चैत्र में गुड़ तथा सावन के मास में साग नहीं खाना चाहिए। कवि भड्डुरी कहते हैं कि ऐसा व्यक्ति नीरोग रहता है, अतः कहीं भी आ-जा सकता है।

औंरा हर्र, पीपर चित।
सैंधा नमक मिलाओ मित।।
जूर जुड़ी और खांसी जाय।
नींद भरि सोवे बहुत मोटाय।।

अर्थात - भुनी हुई हरड़, पीपल तथा सैंधा नमक मिलाकर चूर्ण तैयार कर लें। इस चूर्ण के सेवन से जूड़ी-बुखार (मलेरिया) और खांसी नष्ट हो जाती है। तब मनुष्य आराम से गहरी नींद सोता है। इससे उसका शरीर मोटा हो जाता है।

बासी भात तिवासी माठ और ककड़ी के बतिया।
परे परे जुदावन आँखे मूँड़ लेइया की घटिया।।

बासी चावल और तीन दिन का रखा हुआ मठ नहीं खाना चाहिए क्योंकि ये दोनों विषैले हो जाते हैं। इस रूप में इनका सेवन करने से या तो मनुष्य बीमार पड़ जाता है या फिर कालरा होने से उसकी मृत्यु हो जाती है।

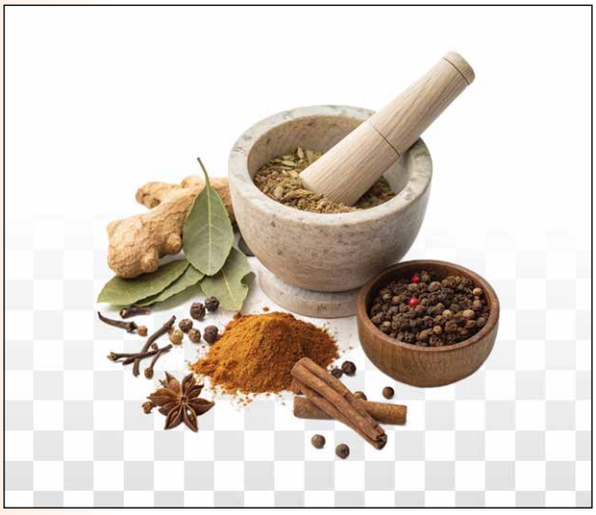

निषेधात्मक संकेत

इसी प्रकार निम्न कहावत में विश्राम करने तथा निषेध बातों का संकेत है -

अँतेर खांते डंडे करे।
ताल नहाय ओस मां परे।
सो भकुआ जा गिरि।
देव न मारे अपने मरे।।

अर्थात - जो व्यक्ति थक जाने के बाद उल्टी-सीधी दंड-बैठक लगाता है यानी कि व्यायाम करता है, इसके बाद स्नान करके रात को ओस में सो जाता है, वह अवश्य ही बीमार पड़ता है। उसे ईश्वर नहीं मारता, बल्कि उसकी अपने आप मृत्यु हो जाती है।

औषधियों की झलक

कहावतों में रोगों की औषधियां बनाने की भी झलक मिलती है। प्रस्तुत हैं औषधियों का ज्ञान कराने वाली कुछ कहावतें -

तेल अरंडी औ जवाखार।
त्रिकुटा, जीरा, चीता बार।
चूर्ण बने ले मठा खावे।
बालक कफोद तुरते जावे।।

अर्थात - अरंडी का तेल, जवाखार, त्रिकुटा, जीरा और चीता को पीसकर चूर्ण बना लें। यह चूर्ण मट्ठे के साथ सेवन करने से कफोदर रोग नष्ट हो जाता है।

बड़ी हरड़ को बकवल पीसें,
अदरक को स्वरस धानी।
कहैं घाघ सुनि घाघनी,
नाके बहे न पानी।।

बड़ी हरड़ का छिलका पीसकर अदरक के रस में मिला लें। फिर इसे शहद के साथ सेवन करने से जुकाम खत्म हो जाता है।

गिलोय, पीपरमूल और जंगी हरड़।
लौंग, नीम और सोंठ की जड़।
सुबह-शाम जो जल से खावे,
उतर ज्वरवा मन को भावे।।

अर्थात - गिलोय, पीपरमूल, जंगी (बड़ी) हरड़, लौंग, सोंठ तथा नीम का समभाग कूट-पीसकर चूर्ण बना लें। फिर इस चूर्ण को गुनगुने पानी से सुबह-शाम सेवन करें। इससे बुखार उतर जाता है और मन को शांति मिलती है।

भूखे बेर अघानो गंडों।
ता ऊपर मूली की डंडों।।

भूख लगी हो तो बेर खाओ। यदि पेट भरकर या अधिक भोजन कर लिया हो तो गन्ना चूसो। इसके बाद मूली खाओ। पेट की बीमारी नहीं होगी।

इस प्रकार घाघ, भड्डुरी, नोड आदि कवियों ने बहुत-सी कहावतें लिखी हैं जो आज भी गांवों में लोगों के कंठ में भरी रहती हैं। इनमें जीवन जीने की कला और नीरोग रहने के रहस्य छिपे हैं। आप भी इनका उपयोग कर लाभ उठाएं।

स्मृति पुष्प
श्रद्धांजलि

- तुकाराम कोलपे
कार्यालय सहायक, सिगनल

कोंकण रेल का निर्माण केवल कोंकण क्षेत्र के लोगों के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे भारत के लिए गर्व का विषय है। 20वीं सदी के अंतिम वर्षों में हमारे भारतीय इंजीनियरों ने इस परियोजना को साकार कर दुनिया को अपनी क्षमता का परिचय दिया। इस अद्भुत उपलब्धि ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सबको आश्चर्यचकित कर दिया। हालांकि, इस परियोजना की वास्तविक कठिनाइयों और चुनौतियों का अनुभव उन लोगों को सबसे अधिक है जो इसके निर्माण और संचालन से सीधे जुड़े रहे हैं।

इस महान कार्य में हमारे कई साथियों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया, जिन्हें हम कभी नहीं भूल सकते। कोंकण रेलवे के निर्माण में देश के लगभग सभी राज्यों से लोग आगे आए और अपने कर्तव्य का पालन करते हुए उन्होंने अपने जीवन की भी परवाह नहीं की। इन वीर शहीदों की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के उद्देश्य से कोंकण रेलवे ने 14 अक्टूबर, 1998 को रत्नागिरी में **'श्रमशक्ति'** नामक एक स्मारक का निर्माण किया। इसी अवसर पर उनके समर्पण और कर्तव्यनिष्ठा की गाथा लोगों तक पहुंचाने के लिए हमारे पूर्व प्रबंध निदेशक श्री बी. राजाराम जी ने **'स्मृतिपुष्प'** नामक पुस्तक प्रकाशित करने का निर्णय लिया। उनका उद्देश्य था कि इन अमर शहीदों की कहानी शब्दों के माध्यम से सदैव जीवित रहे। इस महत्वपूर्ण कार्य की जिम्मेदारी उन्होंने उस समय हमारे अधिकारी श्री सु.दि. तांबोळी जी को सौंपी। अपनी हिंदी भाषा की समझ और संवेदनशीलता के आधार पर उन्होंने इन भावुक घटनाओं को श्रद्धांजलि के रूप में एक माला में पिरोया।

अब इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए इस पुस्तक का दूसरा संस्करण भी श्री तांबोळी जी ने ही तैयार किया है। इसे तैयार करने में उन्होंने अत्यंत परिश्रम किया है। शहीदों से संबंधित जानकारी एकत्र करने के लिए उन्हें महाराष्ट्र, गोवा और कर्नाटक के कई स्थानों की यात्रा करनी पड़ी और अनेक लोगों से मुलाकात करनी पड़ी। इन तीन राज्यों के अतिरिक्त अन्य राज्यों के शहीदों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए उन्होंने वहां रहने वाले अपने मित्रों की सहायता से दूरभाष के माध्यम से भी जानकारी जुटाई।

इस संस्करण में निर्माण चरण के 102 तथा संचालन चरण के 8 शहीदों सहित कुल 110 शहीदों की जानकारी शामिल की गई है। इन वीरों के जीवन और उनके बलिदान से जुड़े तथ्य पाठकों में गहरी रुचि उत्पन्न करते हैं। इन घटनाओं का प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण इस पुस्तक की उपयोगिता को और अधिक बढ़ाता है। श्री तांबोळी जी का यह प्रयास वास्तव में प्रशंसनीय है। कोंकण रेलवे के प्रति उनकी गहरी निष्ठा और शहीदों के प्रति सम्मान की भावना इस पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

कोंकण रेलवे ने अपनी ओर से हर संभव प्रयास करते हुए इन दिवंगत कर्मचारियों के निकट संबंधियों को अनुकंपा के आधार पर रोजगार प्रदान करने का वचन निभाया है और कुछ मामलों में इस दिशा में प्रक्रिया अभी भी जारी है। भारतीय रेल के एक आदर्श संगठन के रूप में कार्य करने का हमारा संकल्प हमेशा रहा है, और भविष्य में भी हम इसी दिशा में निरंतर प्रयास करते रहेंगे।

स्मृति पुष्प - 1

नाम : स्व. कृष्ण रामचंद्र धनवटे

पदनाम : श्रमिक खलासी

आयु : 26 वर्ष

पता : मु-मासे गांव-करबुडे, जिला-रत्नागिरी (महाराष्ट्र राज्य)

दुर्घटना की तारीख : 29/01/1991

मृत्यु : 29/01/1991

नियोक्ता का नाम : मै. राइट्स इंडिया लि.

दुर्घटना का विवरण

चिपळूण–रत्नागिरी के बीच शास्त्री नदी के सर्वेक्षण का कार्य चल रहा था। यह कार्य कश्ती में सवार होकर किया जा रहा था। सर्वेक्षण के दौरान कृष्णा असावधानीवश मंझधार में गिर पड़े और डूब गए। तमाम कोशिशों के बावजूद भी उन्हें कोई बचा नहीं पाया और इस प्रकार डूबकर श्री धनवटे का दुखद निधन हो गया।

स्मृति पुष्प - 2

नाम : स्व. जे. के. किरन जी

पदनाम : प्रधान मानचित्रकार (मध्य रेल से कोंकण रेलवे पर प्रतिनियुक्त)

आयु : 46 वर्ष

पता : ग्रांट रोड, मुंबई : 400 007 (महाराष्ट्र राज्य)

दुर्घटना की तारीख : 05/04/1991

मृत्यु : 05/04/1991

नियोक्ता का नाम : कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड

दुर्घटना का विवरण

उडुपि कार्यक्षेत्र के मुख्य इंजीनियर के आदेशों के अनुसार किरनजी अपने कार्यकारी इंजीनियर के साथ संबंधित नक्शे लेकर एक कार्य-स्थल पर गए थे। वहाँ कार्य की प्रक्रिया के दौरान कई डम्परों का आवागमन चल रहा था। इसी दौरान एक डम्पर अचानक फिसलकर लुढ़क गया और किरन जी उसके नीचे कुचल गए। इस प्रकार घटना-स्थल पर ही किरन जी की जीवन-ज्योति बुझ गई।

कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड

सादर सेवा

हिंदी दिवस / विश्व हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

हिंदी हमारी पहचान हमारा गर्व।

❋ **संवैधानिक प्रावधान**

अनुच्छेद 343- संघ की राजभाषा-

- संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

❋ **राजभाषा अधिनियम,1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले कुल 14 दस्तावेजों को अनिवार्य रूप से हिंदी अंग्रेजी में जारी करना आवश्यक है।**

14 दस्तावेजों की सूची निम्नलिखित है:-

1)	सामान्य आदेश	General Orders
2)	सूचनाएं (आरक्षण चार्ट)	Notices (Reservation Charts)
3)	अधिसूचनाएं	Notifications
4)	प्रेस विज्ञप्तियां / प्रेस नोट	Press Communiques/Press Note
5)	संविदाएं	Contracts
6)	करार	Agreements
7)	लाइसेंस	Licences
8)	परमिट	Permits
9)	टेंडर फॉर्म और नोटिस	Notice and forms of tender
10)	संकल्प	Resolutions
11)	नियम	Rules

12) संसद के एक सदन में या दोनों सदनों में प्रस्तुत सरकारी कागज-पत्र (रिपोर्टों के अलावा) Official papers laid before a House or both the Houses of Parliament. (other than Reports)

13) संसद के एक सदन में या दोनों सदनों में प्रस्तुत प्रशासनिक और अन्य रिपोर्टें Administrative & other Reports laid before a House or both the Houses of Parliament.

14) प्रशासनिक या अन्य रिपोर्टें(संसद के एक सदन में या दोनों सदनों में प्रस्तुत की गई रिपोर्टों के अलावा) Administrative or other Reports(other than those laid before a House or both the Houses of Parliament).

इन कागजातों को द्विभाषी रुप में जारी करना हमारी संवैधानिक अनिवार्यता है।

❋ **राजभाषा नियम, 1976**

- **राजभाषा नियम,1976 के नियम 2 के अंतर्गत राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों का वर्गीकरण-**
- **'क्षेत्र क'**: बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड़, उत्तराखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत हैं।
- **'क्षेत्र ख'**: गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत हैं।
- **'क्षेत्र ग'** : क्षेत्र 'क' और 'ख' में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है।
- **नियम 5 - हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर-** नियम 3 और नियम 4 में किसी बात के होते हुए भी, हिन्दी में पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से हिन्दी में दिए जाएंगे ।

दिनांक 19.11.2025 को नवी मुंबई,नराकास की संपन्न 42वीं बैठक में कोंकण रेलवे को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु 'प्रथम स्थान की राजभाषा शील्ड' और कोंकण रेलवे की गृह पत्रिका 'कोंकण गरिमा' के लिए उत्कृष्ट राजभाषा गृह पत्रिका हेतु 'प्रथम स्थान की राजभाषा शील्ड' से सम्मानित किया गया।

दिनांक 20.01.2026 को अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश में आयोजित मध्य, पश्चिम एवं दक्षिणी क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान कोंकण रेलवे के मडगांव कार्यालय को द्वितीय श्रेणी के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार गृह राज्य मंत्री श्री बंडी संजय कुमार और श्री शंकर लालवानी, सांसद महोदय द्वारा प्रदान किया गया। उक्त पुरस्कार की शील्ड श्रीमती आशा शेट्टी, क्षेत्रीय रेल प्रबंधक महोदया और प्रमाणपत्र श्री प्रदीप बालिगा, क्षेत्रीय राजभाषा अधिकारी महोदय द्वारा ग्रहण किया गया।

दिनांक 20.01.2026 को अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश में आयोजित मध्य, पश्चिम एवं दक्षिणी क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में राजभाषा विभाग के सभा कर्मियों मे भाग लिया।

दिनांक 26.01.2026 को गणतंत्र दिवस के अवसर पर बच्चों ने हिंदी गानों पर प्रस्तुतीकरण दिया।

दिनांक 27.01.2026 को मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बेलापुर की बैठक में गृह पत्रिका कोंकण गरिमा के 26वें अंक का विमोचन किया गया।

दिनांक 27.01.2026 को मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बेलापुर की 112वीं तिमाही बैठक का आयोजन किया गया।

कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम)

Konkan Railway Corporation Limited

(A Government of India Undertaking)

सादर सेवा

राष्ट्र निर्माण की भविष्य-दृष्टि

कोंकण रेलवे जटिल परियोजनाओं को समय पर पूर्ण करने वाली भारत की अवसंरचनाओं के निर्माण और परामर्श क्षेत्र में विश्वसनीयता स्थापित करने वाली अग्रणी संस्था है।

महत्वपूर्ण परियोजनाएं प्राप्त
भारत की सबसे लंबी और चुनौतीपूर्ण सुरंगों से लेकर अत्याधुनिक रेल अवसंरचना तक।

- अनक्कमपोयिल–कल्लाडी–मेप्पाडी ट्विन-ट्यूब रोड टनल, केरल– रु. 2,134 करोड़
- विझिंजम अंतरराष्ट्रीय समुद्री बंदरगाह तक रेल संपर्क रु. 1,326 करोड़
- नई ब्रॉड-गेज रेल लाइन (मारीकुप्पम–कुप्पम) रु. 263 करोड़
- वंदे भारत अनुरक्षण डिपो (मुंबई एवं नागपुर) रु. 220+ करोड़
- खारीकट नहर का विकास – अहमदाबाद रु. 829 करोड़
- सिक्किम में रंगपो स्टेशन भवन का विकास रु. 192 करोड़

निर्माणाधीन मेगा परियोजनाएं

लंबी सुरंगों, पुलों और महत्वपूर्ण रेल लिंक से जुड़ी उच्च मूल्य ई.पी.सी एवं परामर्श परियोजनाएं। इन कार्यों को पूर्ण करने की समय सीमा 2029 है। ये परियोजनाएं कोंकण रेलवे की दुर्गम भौगोलिक क्षेत्रों और घने आबादी वाले शहरी इलाकों में कार्य-निष्पादन करने की विशेषज्ञता को मजबूती प्रदान करती हैं।

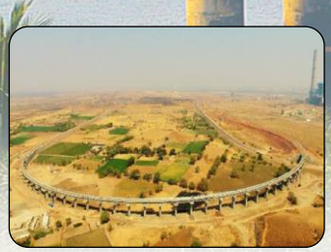

चुनौतीपूर्ण परियोजनाओं का विश्वसनीय निष्पादन (पूर्ण परियोजनाएं)

केआरसीएल ने अत्यंत चुनौतीपूर्ण भू-वैज्ञानिक परिस्थितियों में रेल लाइनों, पुलों, विद्युतीकरण, सिग्नलिंग और यार्ड विकास जैसी परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूर्ण किया है।

कोंकण रेलवे: अभियांत्रिकी उत्कृष्टता से राष्ट्रीय विकास।

कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड

बेलापुर भवन, प्लॉट क्र. 6, सेक्टर 11, सीबीडी बेलापुर, नवी मुंबई – 400614

https://konkanrailway.com सभी यात्री पूछताछ एवं सहायता के लिए **139** डायल करें.

हमें फॉलो करें: @Konkan Railway \ लाइक करें: @Konkan RailwayCorpnLtd @Konkan Railway

2025 अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष